Unit - I

→ Meaning and Scope of Business Ecomics.
→ Defination of Business Ecomomics.
→ Characteristics of Business Ecomomics.
→ Aspects or Importance of Application of Business Ecomomics in Business Management.

QLP - I Short Questions.

24/10/2024.

Unit - I

Chapter - 1

Topic: Meaning and Scope of Business Economics.

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का अर्थ एवं क्षेत्र →

अर्थशास्त्र एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है, जिसमें मनुष्य की उन्हीं क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, जो धन कमाने तथा धन व्यय करने से सम्बन्ध रखती है। इन क्रियाओं के सफल संचालन के लिए सैद्धान्तिक अर्थशास्त्र के कुछ नियम तथा उपनियम बनाये गये है। व्यावहारिक जीवन में इन नियमों का उपयोग करना व्यावसायिक अर्थशास्त्र का विषय नियम है।

Definition of Business Economics →

व्यावसायिक अर्थशास्त्र की परिभाषा →

जोल डीन के अनुसार, "व्यावसायिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य यह बताना है कि आर्थिक विश्लेषण का उपयोग व्यावसायिक नीतियों के निर्धारण में कैसे हो सकता है।

*→ मैकनेअर तथा मेरियम के अनुसार, "व्यावसायिक परिस्थितियों के विश्लेषण हेतु आर्थिक मॉडलों का उपयोग ही व्यावसायिक अर्थशास्त्र में निहित है।

मैकनेअर तथा मेरियम ने व्यावसायिक अर्थशास्त्र को एक ऐसा विषय बतलाया है, जिसमें विभिन्न व्यावसायिक परिस्थितियों के विश्लेषण हेतु आर्थिक मॉडलों का प्रयोग किया जाता है।

04/11/2024

Ques 1. व्यावसायिक अर्थशास्त्र की विशेषताएँ बताते हुए व्यावसायिक प्रबन्ध में व्यावसायिक अर्थशास्त्र के उपयोग के पहलू या महत्व को समझाइए।

Ans <u>व्यावसायिक अर्थशास्त्र</u> → व्यावसायिक अर्थशास्त्र एक नवीन विषय है, जिसमें आर्थिक विश्लेषण के सिद्धान्तों का प्रयोग व्यावसायिक निर्णयों एवं भावी नियोजन में किया जाता है। यह एक व्यावहारिक उपयोगिता का विषय है। इसे आदर्श प्रधान विज्ञान एवं कला की संज्ञा दी जाती है। व्यावसायिक अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं :

(i) व्यष्टि अर्थशास्त्रीय स्वभाव।
(ii) 'फर्म सिद्धान्त' अथवा 'फर्म का अर्थशास्त्र'।
(iii) समष्टि अर्थशास्त्र भी उपयोगी।
(iv) वर्णात्मक न होकर निर्धारणात्मक अर्थशास्त्र।
(v) निर्देशात्मक स्वभाव।
(vi) निर्णय विभिन्न प्रबन्धकीय स्तरों पर।
(vii) समन्वयात्मक प्रकृति।
(viii) विज्ञान तथा कला दोनों।
(ix) सैद्धान्तिक शिक्षण की अपेक्षा केस विधि अधिक उपयोगी।
(x) अधिक परिष्कृत विषय।

05/11/2024

⁎→ Aspects or Importance of Application of Business Economics in Business Management.

<u>व्यावसायिक प्रबन्ध में व्यावसायिक अर्थशास्त्र के उपयोग के पहलू या महत्व</u> → व्यावसायिक

प्रबन्ध में अर्थशास्त्र के उपयोग के प्रमुख पहलू अथवा महत्व निम्नलिखित हैं:

(i) संगठन में सहायक।
(ii) नियोजन में सहायक।
(iii) निर्णयन में सहायक।
(iv) समन्वय स्थापित करने में सहायक।
(v) व्यावसायिक नीतियों के निर्धारण में सहायक।
(vi) लागत नियन्त्रण में सहायक।
(vii) माँग पूर्वानुमान में सहायक।
(viii) अनिश्चितताओं को कम करने में सहायक।
(ix) भावी नियोजन में सहायक।
(x) बाह्य वातावरण को समझने में सहायक।

Explain of Characteristics of Business Economics

(i) <u>व्यष्टि अर्थशास्त्रीय स्वभाव</u> → व्यावसायिक अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टि अर्थशास्त्रीय होता है, क्योंकि इसमें अध्ययन की इकाई व्यष्टि अर्थशास्त्र (सूक्ष्म अर्थशास्त्र) की तरह से एक फर्म होती है। इसमें एक फर्म विशेष की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन नहीं किया जाता है। इसमें एक व्यक्ति की क्रियाओं का भी अध्ययन नहीं किया जाता है, केवल व्यावसायिक फर्म का अध्ययन किया जाता है।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र
(Scope of Business Economics)

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है क्योंकि इसमें वे सभी आर्थिक सिद्धान्त, अवधारणाएँ, मॉडल्स तथा विधियाँ सम्मिलित होती हैं जो व्यावसायिक फर्मों के प्रबन्धकों को निर्णयन तथा भावी नियोजन में सहायक होती हैं। कुछ अर्थशास्त्री ऑपरेशन्स रिसर्च (Operations Research) की विभिन्न विधियों को भी इसकी विषय-वस्तु में शामिल कर लेते हैं। सामान्यतया आर्थिक विश्लेषण के निम्न पहलू इसके कार्य-क्षेत्र में आते हैं :

(1) **माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान** (Demand Analysis and Forecasting) – एक व्यावसायिक फर्म उत्पादन के साधनों को ऐसी वस्तुओं में बदलने का कार्य करती है जिन्हें बाजार में मुद्रा के बदले बेचा जा सके। फर्म अनिश्चितता के वातावरण में भावी पूर्वानुमानों के आधार पर ही कार्य करती है। प्रबन्धकों के निर्णय माँग के सही अनुमानों पर निर्भर करते हैं। प्रबन्धकों के लिए फर्म की उत्पादन सारणियों का निर्धारण करने तथा उत्पादन के साधनों को उत्पादन कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व यह अत्यन्त आवश्यक है कि भावी विक्रय के सही पूर्वानुमान लगाये जाएँ। भावी विक्रय-पूर्वानुमान फर्म के प्रबन्धकों को फर्म की बाजार में स्थिति बनाये रखने, सुदृढ़ करने अथवा लाभ बढ़ाने में मार्गदर्शन करते हैं। माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान प्रबन्धकीय निर्णयन तथा भावी नियोजन में सहायक होते हैं। माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि फर्म की वस्तु विशेष की बाजार में वर्तमान में औसतन कितनी माँग है, यह माँग किन-किन तत्त्वों से प्रभावित होती है, बाजार में वस्तु के कौन-कौन से स्थानापन्न उपलब्ध हैं तथा वस्तु विशेष की भावी माँग कितनी होगी। फर्म के माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान सम्बन्धी निर्णय सही होने पर फर्म अधिक लाभ कमाती है तथा निर्णय गलत होने पर हानि उठाती है।

(2) **उत्पादन नियोजन एवं प्रबन्ध** (Production Planning and Management) – प्रत्येक फर्म किसी विशेष उत्पादन कार्य में लगी होती है, अतः उसे उत्पादन नियोजन एवं प्रबन्ध करना होता है। फर्म को अपने साधनों तथा उनसे उत्पादित की

जाने वाली वस्तुओं को ध्यान में रखकर लाभदायक निर्णय करने होते हैं। अपने कौनसे साधनों को कितनी मात्रा में कौनसी वस्तु के उत्पादन में लगायें जिससे फर्म न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सके। प्रबन्धकों को उत्पादन कार्य जो कि आदा-प्रदा के पारस्परिक भौतिक सम्बन्ध की व्याख्या करता है, का समुचित ज्ञान होना चाहिए। व्यावसायिक अर्थशास्त्र में उत्पादन कार्य (Production Function) का विस्तार से अध्ययन किया जाता है। अल्पकालीन उत्पादन कार्य में उत्पादन के नियमों एवं दीर्घकालीन उत्पादन कार्य में पैमाने के प्रतिफल का विवेचन किया जाता है।

(3) **लागत विश्लेषण** (Cost Analysis) – प्रबन्धकों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य फर्म के लाभ को अधिकतम करने के लिए लागतों की व्याख्या करना तथा नियन्त्रण करना होता है। लागतें अनेक प्रकार की होती हैं, जैसे—सीमान्त लागत, परिवर्तनशील लागत, स्थिर लागत आदि। इन विभिन्न लागतों को कम करके ही लाभ अधिक कमाया जा सकता है। लागत को उसी समय कम किया जा सकता है जब लागतों की प्रवृत्ति तथा उनको प्रभावित करने वाले तत्त्वों के सम्बन्ध में खोज एवं अनुसन्धान कार्य किया जाए। अनेक बार प्रबन्धकों को लागत को प्रभावित करने वाले समस्त तत्त्वों का ज्ञान नहीं होता है अथवा उन पर प्रबन्धकों का नियन्त्रण नहीं होता है; अतः उन्हें लागत सम्बन्धी अनिश्चितता के वातावरण में कार्य करना होता है। आर्थिक लागतों का विश्लेषण, लाभ-नियोजन तथा उचित मूल्य नीति निर्धारण में भी सहायक होता है। लागत विश्लेषण के अन्तर्गत लागत अवधारणायें तथा वर्गीकरण एवं लागत व उत्पादन सम्बन्ध सम्मिलित होते हैं।

(4) **मूल्य नीतियाँ एवं व्यवहार** (Pricing Policies and Practices) – मूल्य फर्म के लिए आगम होता है। अतः मूल्य का निर्धारण व्यावसायिक अर्थशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। फर्म की सफलता मूल्य निर्धारण सम्बन्धी निर्णयों पर निर्भर करती है। इसके अन्तर्गत बाजारों के विभिन्न प्रारूपों में मूल्य नीतियों तथा व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। मूल्य पूर्वानुमानों का अध्ययन भी इसी का एक भाग होता है। विभेदात्मक मूल्य निर्धारण तथा विभिन्न प्रकार की छूट योजनाएँ भी मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीति एवं व्यवहार के अन्तर्गत हो जाती हैं। फर्म की अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन मूल्य नीतियों का अध्ययन भी इसमें किया जाता है।

(5) **लाभ प्रबन्ध** (Profit Management) – व्यावसायिक फर्मों की स्थापना लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती है। दीर्घकाल में फर्म की सफलता का मापन लाभ के आधार पर ही होता है। लाभ आगम तथा लागतों पर निर्भर करता है। लागत तथा आगम अनेक कारकों से प्रभावित होते हैं जिनमें से कुछ कारक तो फर्म के लिए आन्तरिक होते हैं तथा कुछ बाह्य। यदि भविष्य के बारे में फर्म को इन कारकों का सही ज्ञान होता है तो लाभ का विश्लेषण बहुत सरल होता है। परन्तु फर्म अनिश्चितता के वातावरण में विभिन्न अनुमानों एवं आशाओं पर कार्य करती है इसलिए लाभ का नियोजन एवं प्रबन्ध व्यावसायिक अर्थशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण एवं जटिल कार्य है। इसके अन्तर्गत लाभ सम्बन्धी धारणाओं, लाभ नियोजन, लाभ नियोजन विधियों लाभ-मापन तथा लागत नियन्त्रण का अध्ययन किया जाता है।

(6) **पूँजी प्रबन्ध (Capital Management)** – व्यावसायिक फर्मों को समय-समय पर पूँजी का विनियोजन करना होता है। पूँजी विनियोजन सम्बन्धी निर्णयों में एक ओर भारी राशियों का प्रश्न होता है तथा दूसरी ओर इनमें एक बार विनियोजन कर देने के बाद निर्णयों को बदल परिवर्तित करना बहुत कठिन होता है। ये निर्णय सर्वोच्च स्तर पर ही किये जाते हैं। व्यावसायिक अर्थशास्त्र में पूँजी प्रबन्ध बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें पूँजी की लागत, पूँजी पर लाभ-देयता तथा विभिन्न परियोजनाओं में से उपयुक्त परियोजना या परियोजनाओं का चुनाव सम्मिलित होता है।

(7) **अनिश्चितता के अन्तर्गत निर्णय सिद्धान्त (Decision Theory Under Uncertainty)** – प्रबन्धकों को बहुत से निर्णय अनिश्चितता के वातावरण में लेने होते हैं। अनिश्चितताएँ अनेक प्रकार की होती हैं, जैसे—माँग की अनिश्चितता, लागत की अनिश्चितता, पूँजी की अनिश्चितता आदि। इन अनिश्चितताओं के कारण निर्णय प्रक्रिया अधिक कठिन हो गई है। अनिश्चितता की स्थिति में निर्णय लेने के लिए अनेक सांख्यिकीय एवं अर्थमितीय विधियों का विकास किया गया है। आर्थिक विश्लेषण के यन्त्रों को इस तरह से परिमार्जित किया जा रहा है कि जिससे अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए निर्णय प्रक्रिया को तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जा सके।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र

1. माँग विश्लेषण व पूर्वानुमान
2. उत्पादन नियोजन एवं प्रबन्ध
3. लागत विश्लेषण
4. मूल्य नीतियाँ एवं व्यवहार
5. लाभ प्रबन्ध
6. पूँजी प्रबन्ध
7. अनिश्चितता के अन्तर्गत निर्णय सिद्धान्त
8. विक्रय प्रोत्साहन एवं व्यूह रचना
9. अन्य।

(8) **विक्रय प्रोत्साहन एवं व्यूह-रचना (Sales Promotion and Strategy)** – एक व्यावसायिक प्रबन्ध को विक्रय-व्यूह-रचना के प्रति भी पर्याप्त ध्यान देना होता है। विक्रय लागतें विक्रय व्यूह-रचना पर निर्भर करती हैं। विक्रय व्यूह-रचना पर ही विक्रय की मात्रा निर्भर करती है। विक्रय प्रोत्साहन पर कितना व्यय किया जाए, विज्ञापन की मात्रा, आकार एवं प्रकार क्या हो, यह सब प्रबन्धक को देखना होता है। व्यावसायिक अर्थशास्त्र में विक्रय लागतों, विक्रय प्रोत्साहन योजनाओं एवं विक्रय व्यूह-रचना एवं व्यवस्था का अध्ययन करना होता है।

(9) **अन्य (Others)** – पूर्व में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि व्यावसायिक अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टिमूलक अधिक है परन्तु समष्टि अर्थशास्त्र भी पर्याप्त उपयोगी होता है अतः व्यावसायिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में निम्न को भी शामिल किया जाता है—

(i) **सरकार की आर्थिक नीतियाँ (Economic Policies of Government)**—सरकार की राजकोषीय, मौद्रिक, औद्योगिक, व्यापारिक तथा श्रम नीतियाँ फर्म के निर्णयों को प्रभावित करती हैं, अतः सरकार की प्रमुख आर्थिक नीतियाँ तथा उनके प्रभावों का फर्म के सन्दर्भ में अध्ययन व्यावसायिक अर्थशास्त्र की विषय वस्तु है।

(ii) **समष्टिगत आर्थिक घटक (Macro Economic Variables)**—एक फर्म के क्रिया-कलाप देश के सामान्य मूल्य स्तर, राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय उपभोग, विनियोग आदि से प्रभावित होते हैं। अतः इनका अध्ययन भी आवश्यक होता है।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं परम्परागत अर्थशास्त्र में भिन्नताएँ
(Difference between Business Economics and Traditional Economics)

व्यावसायिक अर्थशास्त्र के स्वभाव तथा इसकी विशेषताओं के अध्ययन के आधार पर इसकी अर्थशास्त्र से निम्न भिन्नताएँ स्पष्ट की जा सकती हैं :

(1) अर्थशास्त्र में आर्थिक सिद्धान्तों का विवेचन किया जाता है जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र में इन सिद्धान्तों का व्यावसायिक फर्म की समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोग किया जाता है।

(2) व्यावसायिक अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टि अथवा सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय है जबकि अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र दोनों ही प्रकार का होता है।

(3) व्यावसायिक अर्थशास्त्र में फर्म की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। यह व्यष्टि-मूलक अध्ययन है परन्तु इसका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष की समस्याओं से नहीं होता है जबकि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध व्यक्ति तथा फर्म दोनों से ही होता है।

(4) व्यावसायिक अर्थशास्त्र में लाभ सिद्धान्त का भी अध्ययन किया जाता है परन्तु वितरण के अन्य सिद्धान्तों की इसमें विशेष उपयोगिता नहीं होती है जबकि परम्परावादी अर्थशास्त्र में वितरण के सभी सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

(5) अर्थशास्त्र के सिद्धान्त तथा धारणाएँ व्यावहारिकता से दूर, मान्यता प्रधान तथा काल्पनिक होती हैं जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र की अवधारणाएँ व्यावहारिक तथा फर्म के लिए अत्यधिक उपयोगी होती हैं।

(6) व्यावसायिक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की ही एक विशिष्ट शाखा है; अतः अर्थशास्त्र अधिक व्यापक विषय है।

(7) अर्थशास्त्र अधिक पुराना विषय है; जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र केवल द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का विकसित विषय है।

(8) अर्थशास्त्र की एक वास्तविक विज्ञान के रूप में अधिक स्वीकृति है जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र की एक आदर्श विज्ञान के रूप में अधिक मान्यता है।

(9) अर्थशास्त्र वर्णनात्मक (Descriptive) विषय अधिक होता है, जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र निर्देशात्मक (Prescriptive) विषय अधिक होता है।

(10) अर्थशास्त्र के अन्तर्गत कार्यक्षमता का मापन अधिकतम सन्तुष्टि एवं मानव कल्याण के आधार पर की जाती है जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र में यह मापन फर्म की लागत न्यूनतम तथा लाभ अधिकतम के आधार पर की जाती है।

Unit – II

→ माँग की कीमत लोच → श्रेणियाँ, महत्व व कारण

→ उदासीनता – परिभाषा, विशेषताएँ, उपभोक्ता सन्तुलन

Unit – II

22/08/2024

Topic: माँग की कीमत लोच →

Ques 1. माँग की कीमत लोच की श्रेणीयाँ बताइये तथा माँग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व व कारण बताइये ?

Ans माँग की लोच → माँग की लोच किसी वस्तु की कीमत में हुए परिवर्तन से माँग में हुए परिवर्तन की माँग दूसरे शब्दो में किसी वस्तु की कीमत में हुए आनुपातिक परिवर्तन के कारण माँग मात्रा में हुए आनुपातिक परिवर्तन को ही माँग की लोच कहते है।

माँग की लोच का सूत्र → $\frac{\text{माँग मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$

माँग की लोच के प्रकार →

1. कीमत लोच
2. आय लोच
3. आड़ी या तिरछी लोच

(i) कीमत लोच → किसी वस्तु की कीमत में होने वाली परिवर्तन के कारण माँगी गई मात्रा में परिवर्तन को कीमत लोच कहते है।

कीमत लोच का सूत्र (EP) $= \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$

ΔQ = Change in Quantity

ΔP = Change in price

2. (ii) आय लोच → किसी व्यक्ति के आय में होने वाली आनुपातिक परिवर्तन से माँगी गई मात्रा में होने वाली आनुपातिक परिवर्तन को ही माँग की आय लोच कहा जाता है।

08/2024

माँग की आय लोच का सूत्र → $\dfrac{\text{माँग मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{आय की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}$

(iii) आड़ी या तिरछी लोच → एक वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन से दूसरी वस्तु की माँग में आनुपातिक परिवर्तन को ही आड़ी या तिरछी लोच कहते हैं।

आड़ी या तिरछी लोच का सूत्र → $\dfrac{x \text{ वस्तु की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{y \text{ वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$

माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ →

1. पूर्णतया लोचदार माँग
2. पूर्णतया बेलोचदार माँग
3. इकाई लोचदार माँग
4. इकाई से अधिक या अत्यधिक लोचदार माँग
5. इकाई से कम लोचदार माँग

(i) पूर्णतया लोचदार माँग → जब स्थिर कीमतों पर भी माँग मात्रा में परिवर्तन होता है, तो पूर्णतया लोचदार माँग कहलाती है। अर्थात कीमत में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न होने

पर भी माँग मात्रा में होने वाले परिवर्तन को ही पूर्णतया लोचदार माँग कहते है। अतः इसमें माँग वक्र OX-अक्ष के समानान्तर रहता है। गणितीय भाषा में इसे $EP = \infty$ के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

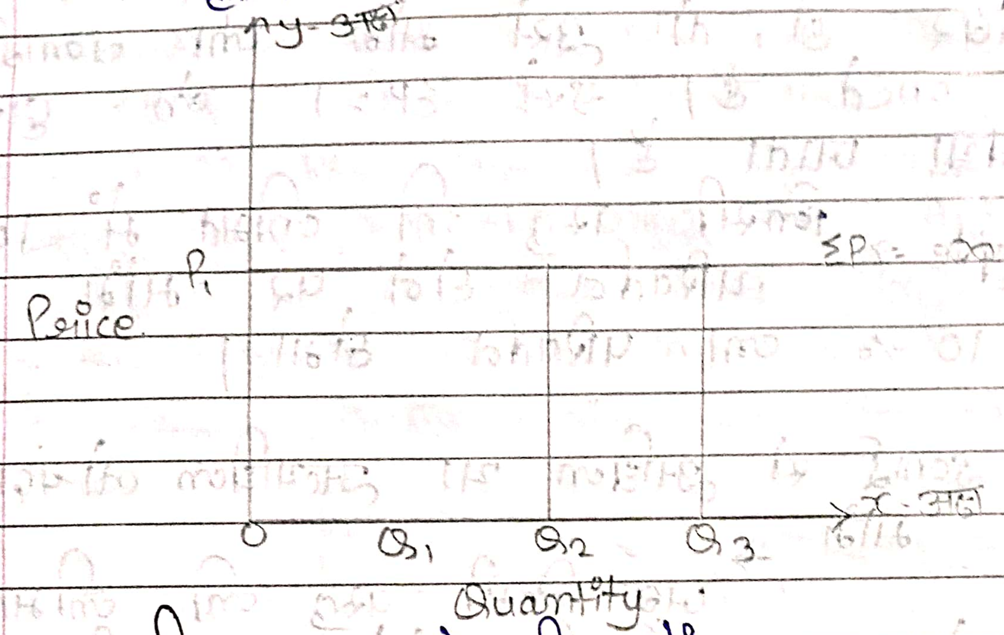

स्पष्टीकरण → रेखाचित्र में OX-अक्ष पर माँग मात्रा में तथा OY-अक्ष पर कीमत को दर्शाया गया है। जब कीमत OP होती है, तो माँग मात्रा में OQ हो जाती है। जब कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता और मात्रा OQ₁ हो जाती है, तो इससे स्पष्ट हो जाती है कि कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता है होने पर भी माँग में परिवर्तन होता है। अतः माँग की लोच पूर्णतया लोचदार होती है।

(ii) पूर्णतया बेलोचदार माँग → जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर माँग मात्रा में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है, तो उसे पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते है। ऐसी स्थिति में माँग वक्र होती है। OY-

रहता
अक्ष के समानान्तर होता है।

(iii) इकाई लोचदार माँग → जब कीमत में होने वाला परिवर्तन माँग मात्रा में होने वाली परिवर्तन के बराबर हो, तो उसे माँग की इकाई लोच कहते हैं। इसे Ep = 1 के द्वारा दर्शाया जाता है।

Example → किसी वस्तु की कीमत में 10 % परिवर्तन होने पर माँग मात्रा में 10 % का परिवर्तन होगा।

(iv) इकाई से अधिक या अत्यधिक लोचदार माँग → जब किसी वस्तु की कीमत में थोड़ा सा परिवर्तन होने पर भी उसकी माँग मात्रा में बहुत अधिक या अत्यधिक परिवर्तन होता है, तो वह अत्यधिक लोचदार माँग होगी या इकाई से अधिक लोचदार माँग कहलाती है। इसे गणितीय भाषा में Ep > 1 कहते हैं।

Example → जैसे किसी वस्तु की कीमत में 5 % की कमी होने पर उस वस्तु की माँग 20 % बढ़ जाती है।

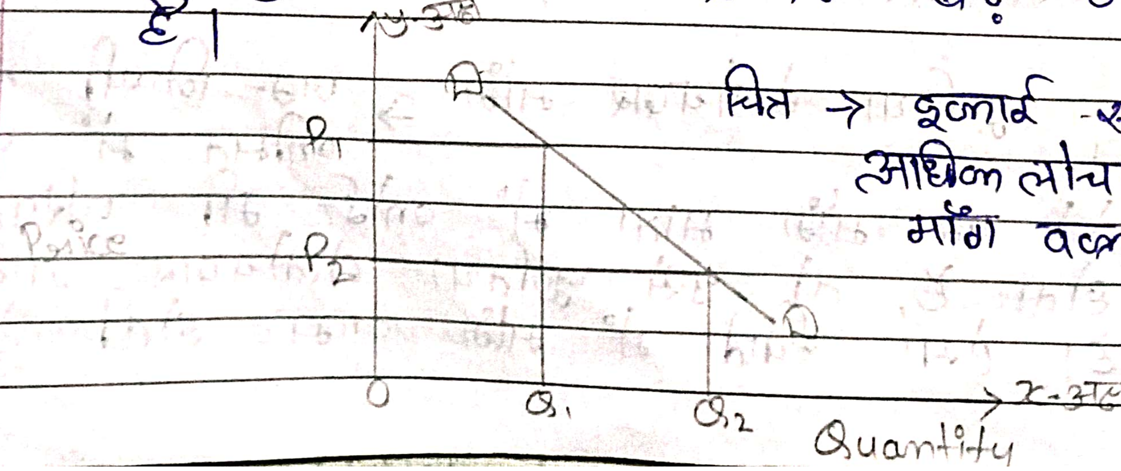

चित्र → इकाई से अधिक लोचदार माँग वक्र।

[v] इकाई से कम लोचदार माँग → जब किसी वस्तु की कीमत में बहुत अधिक परिवर्तन होने पर उसकी माँग मात्रा में कम परिवर्तन होता है। तो उसे इकाई से कम लोचदार माँग कहते हैं। इसे गणितीय भाषा में $E_P < 1$ से दर्शाया जाता है।

Example → किसी वस्तु की कीमत में 20% कमी होने पर माँग मात्रा में केवल 10% का परिवर्तन होता है।

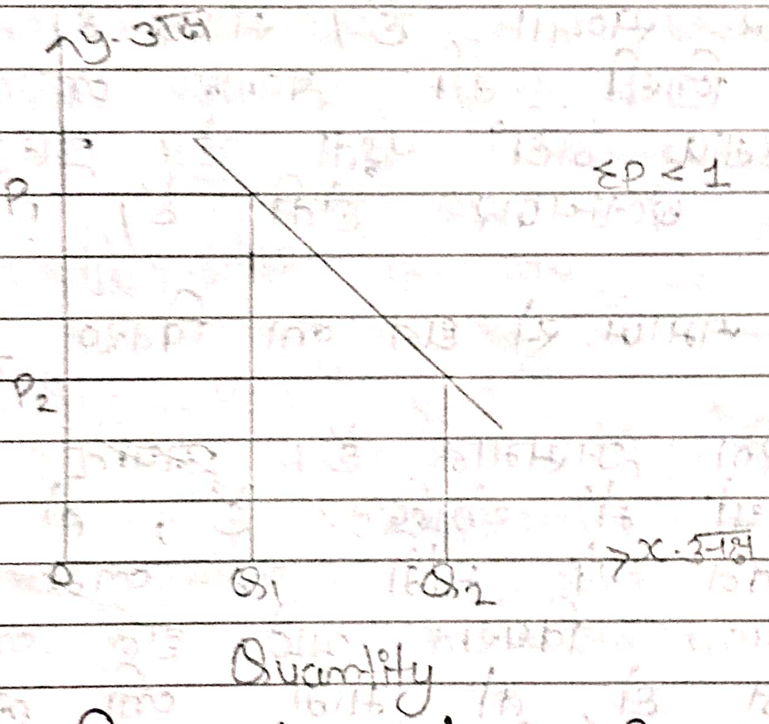

24/08/2024

माँग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले कारक →

[i] वस्तु की प्रकृति → किसी वस्तु की प्रकृति उसकी माँग की लोच को प्रभावित करती है। अनिवार्य वस्तु की माँग की लोच बेलोचदार तथा विलासिता की वस्तुओं की माँग की लोच अत्यधिक

लोचदार होती है।

(ii) उपभोक्ता की आय → वस्तुओं की माँग उपभोक्ता की आय पर निर्भर करती है। यदि धनी व्यक्ति है। तो माँग की लोच बेलोचदार तथा होती है। साथ ही मध्यम वर्ग के आय वाले व्यक्ति की लोच अत्यधिक लोचदार तथा निम्नवर्ग के लिए इकाई लोचदार माँग होगी क्योंकि गरीब व्यक्ति आवश्यक वस्तु का ही उपयोग कर सकता है। साथ ही धनी लोगों पर किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः माँग की लोच बेलोचदार होती है।

(iii) समाज से धन का वितरण → यदि समाज में धन का वितरण असमान है। अर्थात धन कुछ के हाथों में केन्द्रित है, तो कीमत परिवर्तन से माँग पर कम प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत यदि धन का वितरण समान हो, तो माँग की लोच अधिक होगी। यदि किसी वस्तु से संबंधित उपभोक्ता को उसकी आदत पड़ जाती है। तो उसकी माँग की लोच बेलोचदार होगी। वह वस्तु चाहे कितनी भी कीमत पर बेची जाए उपभोक्ता उस वस्तु को क्रय ही करता है।

[iv] उपभोक्ता की आदतें → यदि किसी वस्तु से सम्बन्धित उपभोक्ता को उसकी आदत पड़ जाती है, तो उसकी माँग की लोच बेलोचदार होती होगी। वह वस्तु चाहे कितनी भी कीमत पर बेची जाए, उपभोक्ता उस वस्तु को क्रय करता ही है।

[v] वस्तु पर किया गया कुल व्यय → माँग की लोच वस्तु पर किए जाने वाले व्यय से भी प्रभावित होती है। यदि किया जाने वाला व्यय बहुत कम या सूक्ष्म होता है, तो माँग की लोच बेलोचदार होती है। यदि व्यय का भार बड़ा होता है, तो माँग की लोच लोचदार होती है।

[vi] टिकाऊ वस्तुएँ → यदि वस्तु टिकाऊ प्रवृत्ति की है, तो माँग की लोच लोचदार होगी। तथा वस्तु शीघ्र नाशवान प्रवृत्ति की होती है, तो माँग की लोच बेलोचदार होगी।

इकाई लोचदार माँग वक्र →

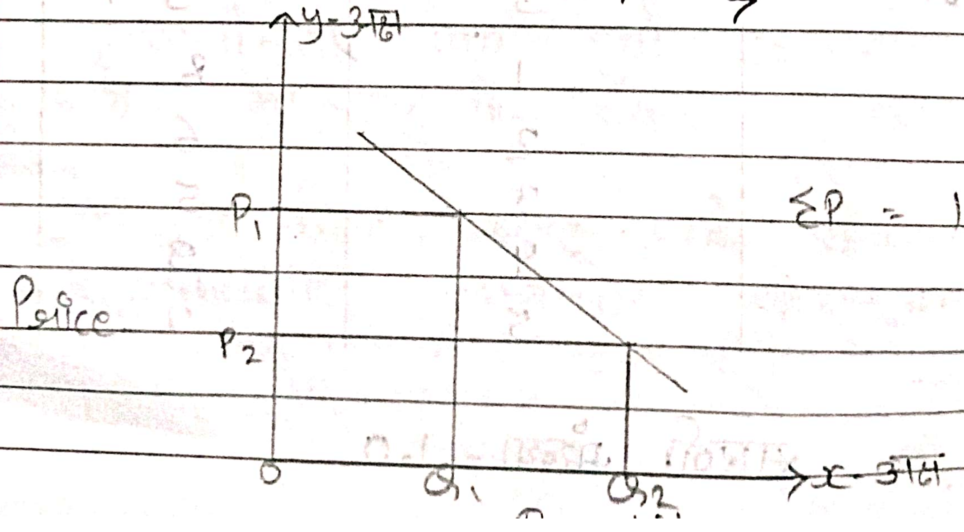

Topic: उदासीनता वक्र

Ques 2 उदासीनता वक्र की परिभाषा समझाते हुए इसकी विशेषताएँ बताइए तथा उपभोक्ता संतुलन को समझाइए ?

Ans उदासीनता वक्र / तटस्थता वक्र / अधिमान वक्र → उदासीनता वक्र वह वक्र है। जिस पर स्थित प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के ऐसे संयोग को प्रदर्शित करते हैं, जिस पर किसी उपभोक्ता को समान सु संतुष्टि मिलती है। एक उदासीनता वक्र पर स्थित सभी संयोगों से समान संतुष्टि मिलने के कारण उपभोक्ता उनके चुनाव में उदासीन रहता है।

अर्थात :- सभी संयोगों से समान संतुष्टि मिलने के कारण उपभोक्ता की उपयोगिता में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता। अतः वह उन सभी संयोगों को समान महत्व देता है।

संयोग	वस्तु - x	वस्तु - y
A	1	8
B	2	6
C	3	5
D	4	3
E	5	2

सारणी संख्या - 1.0

27/08/2024

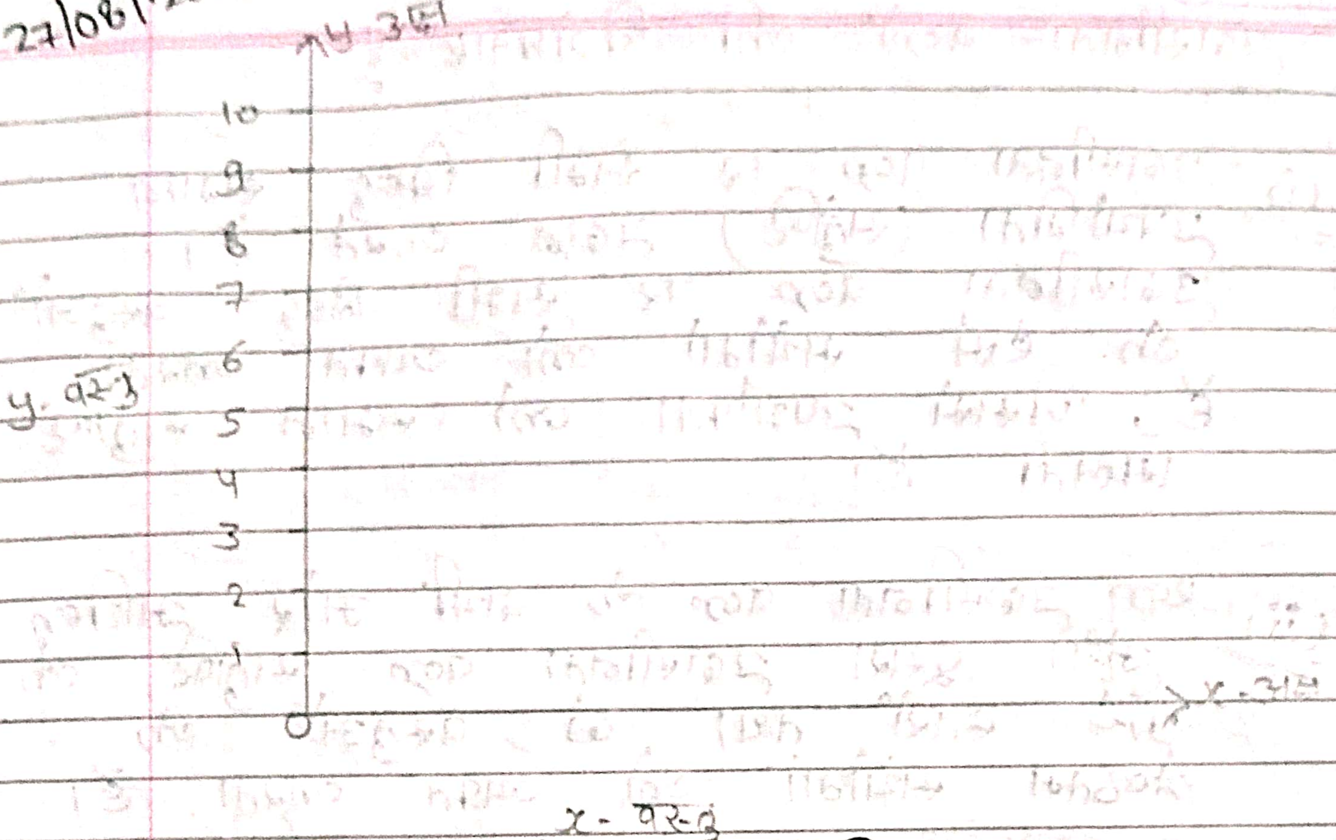

उदासीनता वक्र चित्र:

Explane → रेखाचित्र में OX-अक्ष पर वस्तु-X तथा OY-अक्ष पर वस्तु-Y की इकाईयाँ दी गई है, उदासीनता वक्र में A, B, C, D तथा E बिन्दुओं पर X तथा Y वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को दर्शाया गया है। जिससे उपभोक्ता को समान संतुष्टि मिलती है। इस रेखा के अन्य बिन्दु भी संतुष्टि के समान स्तर को व्यक्त करते है, इसलिए उदासीनता वक्र को समान उपयोगिता वक्र भी कहते है।

एक उदासीनता वक्रों को दर्शाने वाला चित्र उदासीनता मानचित्र कहलाता है।

उदासीनता वक्रों की विशेषताएँ :

(i) उदासीनता वक्र पर सभी बिन्दु समान उपयोगिता (संतुष्टि) प्रदान करते हैं। उदासीनता वक्र पर सभी बिन्दु वस्तुओं के ऐसे संयोगों को व्यक्त करता है, जिससे उपभोक्ता को समान संतुष्टि मिलती है।

(ii) एक उदासीनता वक्र के दायीं ओर अधिक ऊँचा दूसरा उदासीनता वक्र संतुष्टि के ऊँचे स्तरों तथा दो वस्तुओं के श्रेष्ठतम संयोगों को व्यक्त करता है।

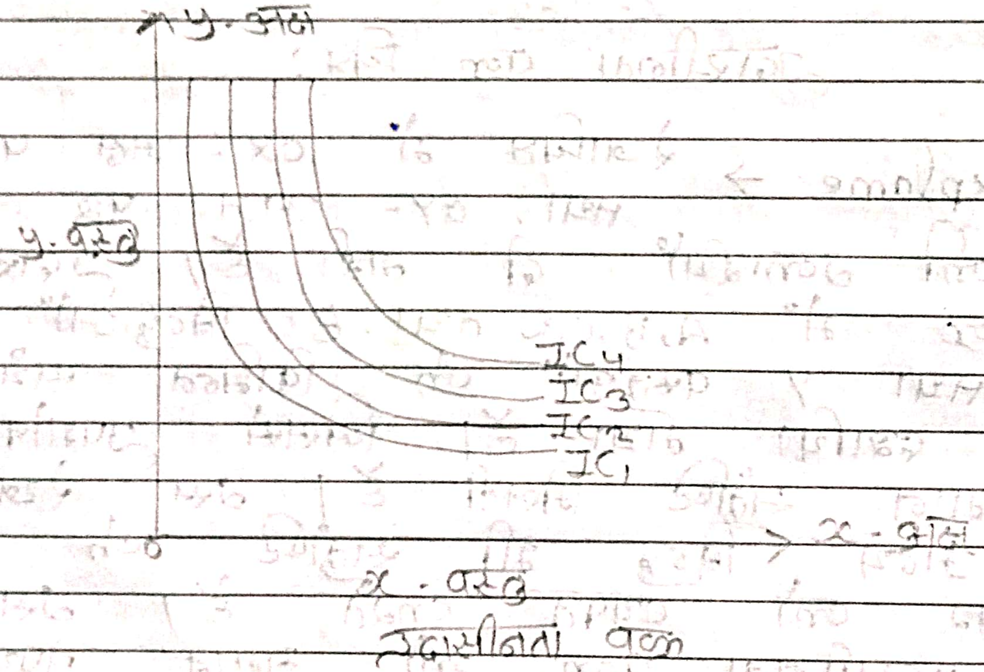

उदासीनता वक्र

एक उपभोक्ता के लिए अनेक उदासीनता वक्र होते हैं। किसी भी उदासीनता वक्र IC_1 की दायीं तरफ का उदासीनता वक्र IC_2, IC_3, IC_4 अधिक ऊँचे संतुष्टि के स्तर को व्यक्त करता है।

29/08/2024

(iii) एक उदासीनता वक्र ऊपर से नीचे दायीं ओर झुकता है।

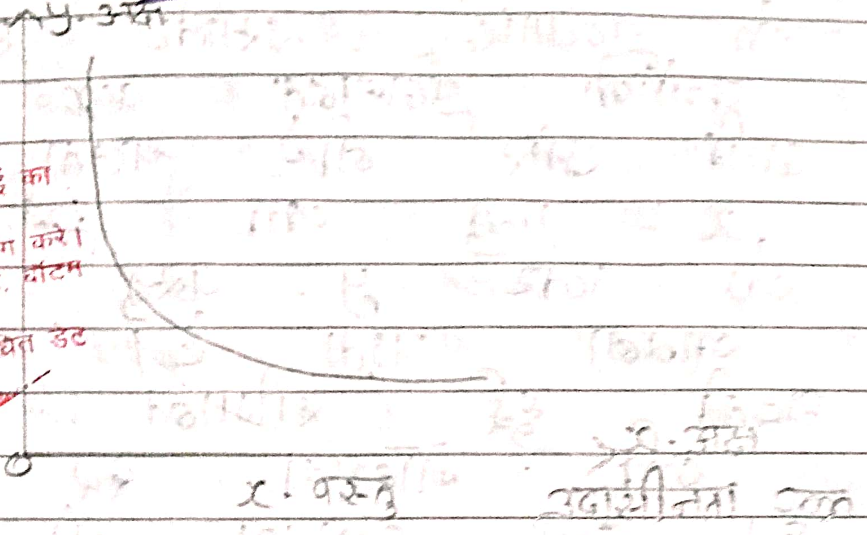

1 दिनांक अंकित करें।
2 ... की लेख/मात्रा/spelling/सफाई का ध्यान रखें।
3 ... पेन का ... प्रयोग करें।
4 चित्र/... दाईं ओर, नामांकन दाएं ओर, ... में टाइटल लिखें।
5 सारणी में अधिकतम, न्यूनतम एवं संबंधित डेटा ही लिखें।
6 उत्तर की लंबाई का ध्यान रखें।

Explame → उदासीनता वक्रो का ढ़ाल ऋणात्मक होता है। अर्थात् ऊपर से नीचे दायीं ओर झुके होते है। ऐसा होना स्वभाविक है। उपभोक्ता को समान संतुष्टि के स्तर पर बने रहने के लिए x वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने पर y वस्तु की मात्रा में कमी करनी पड़ती है। जिसके कारण यह ऊपर से नीचे की तरफ दायीं ओर झुकता है।

(iv) उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नो उन्नतोदर होते है।

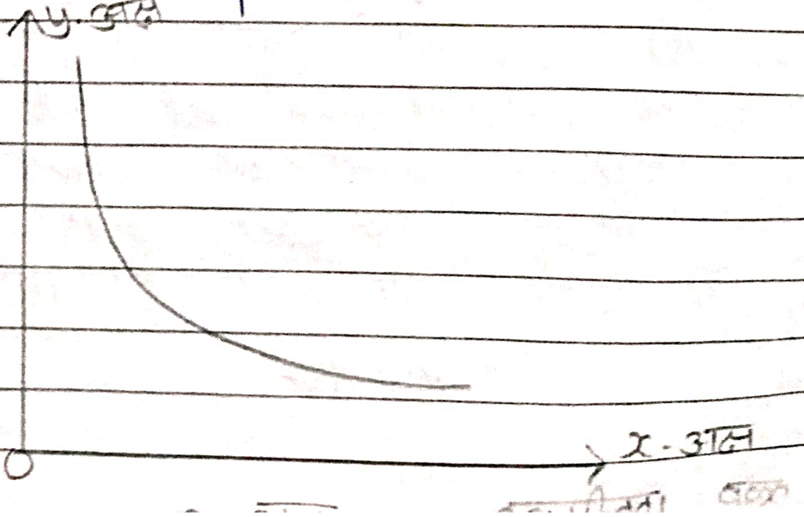

Explane → उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नतोदर इसलिए होता है, क्योंकि उदासीनता वक्र बायें से दायीं ओर नीचे चलता है। अर्थात x - वस्तु की अगली इकाई के लिए y - वस्तु का त्याग करना पड़ता है। जो कि घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन की मान्यता दर पर आधारित है। इस कारण से प्रत्येक उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नतोदर होते हैं।

(v) उदासीनता वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते हैं।

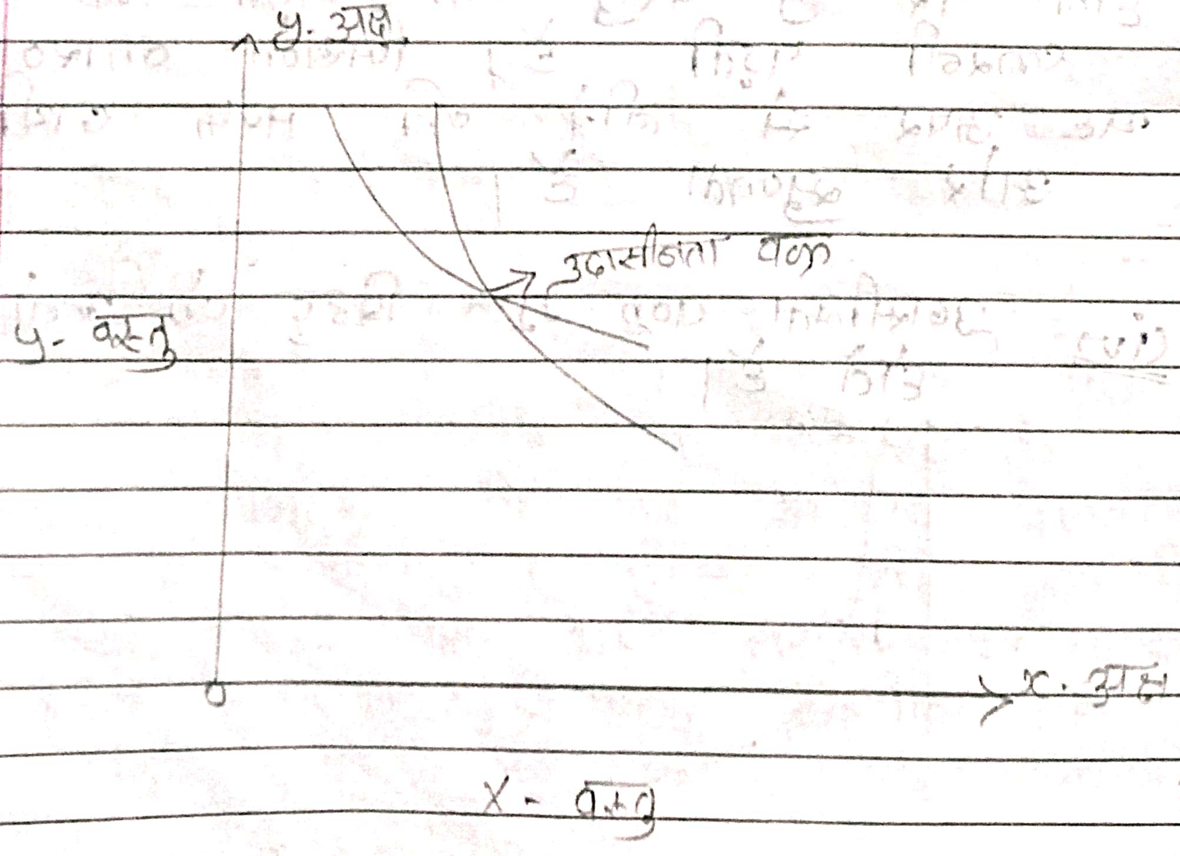

Explane → उदासीनता वक्र कभी भी एक दूसरे को नहीं काटते है यदि दो या दो से अधिक उदासीनता वक्र एक दूसरे को काटते हैं, तो मान्यता दूर हो जाती है। उदासीनता वक्र के सभी बिंदु समान संतुष्टि को बताते है।

(vi) उदासीनता वक्र कभी भी अपने वक्र को स्पर्श नहीं करता है।

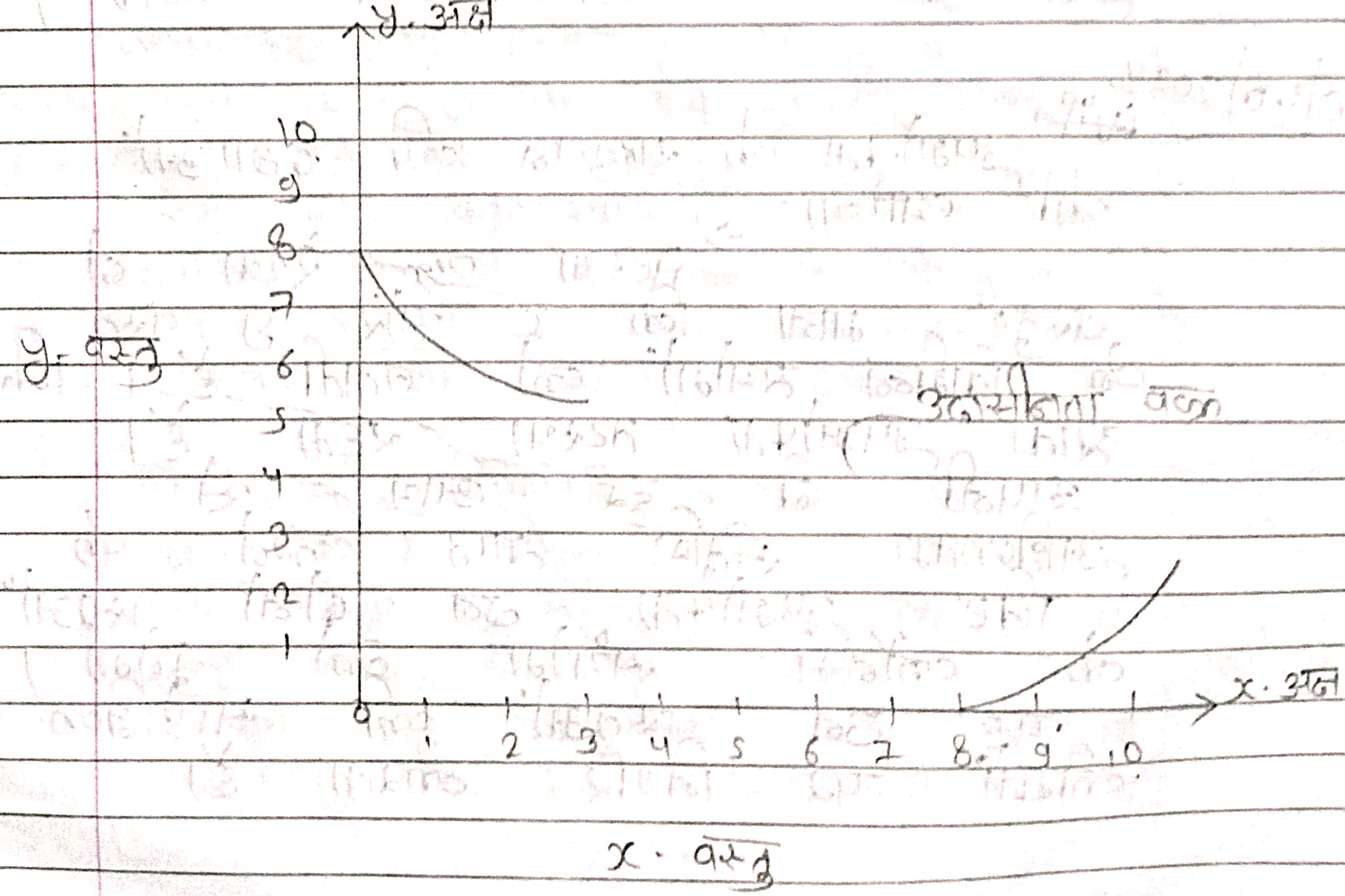

Explane → उदासीनता वक्र की परिभाषा देते समय बताया गया था कि उदासीनता वक्र वह रेखा है, जो दो या अधिक वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को बतलाती है। जिससे उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है। यदि दो उदासीनता वक्र ox अक्ष या oy - अक्ष को स्पर्श करता है। तो उपभोक्ता केवल एक ही वस्तु का उपभोग कर पाता है। जो उदासीनता वक्र की परिभाषा को गलत ठहराती है। अतः उदासीनता वक्र को अपने अक्ष पर को स्पर्श नहीं करता।

0/08/2024

(viii) उपभोक्ता के सन्तुलन की दशाओं की व्याख्या

→ तटस्था वक्र रेखा दो वस्तुएँ माना कि x और y वस्तु के विभिन्न संयोगों को बताती है। जिसके प्रति उपभोक्ता तटस्था रहता है। अपनी दी हुई आय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता उन दोनों वस्तुओं के कौनसे संयोग को चुनेगा। यह उन वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों पर निर्भर करता है।

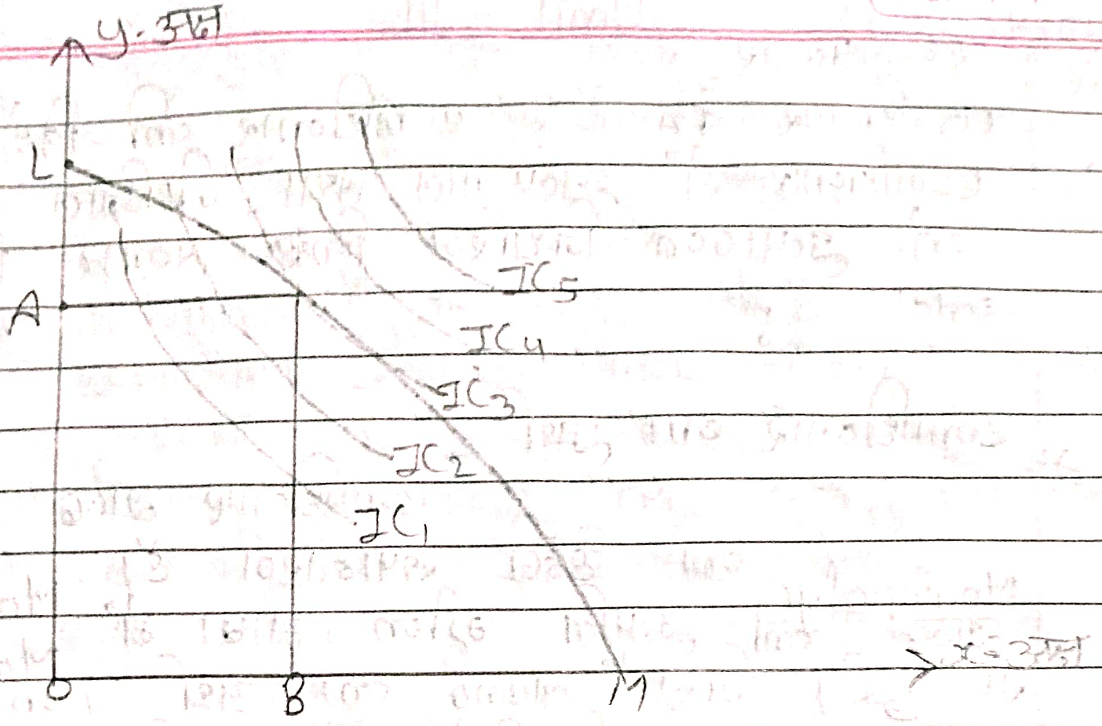

उपभोक्ता सन्तुलन की दशाएँ

Explane → उपभोक्ता अपने रुपयों की आय को वस्तु - x तथा वस्तु - y पर अपने प्रकार से खर्च कर सकता है। किसी एक वस्तु पर कम खर्च कर सकता है। ... चित्र में L, M रेखा या बजट रेखा है।
मात्रात्मक रूप में ढाल $\frac{OL}{OM}$ है। दो वस्तुओं का मूल्य अनुपात सांकेतिक रूप में उपभोक्ता सन्तुलन की दशा।

इस प्रकार उपभोक्ता सन्तुलन की स्थिति को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है, कि इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बात यह है, कि मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण भी उपभोक्ता के सन्तुलन की इसी दशा को बताता है।

(16) Unit – III

→ एकाधिकार → अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ, अल्पकाल एवं दीर्घकाल में कीमत उत्पादन

→ पूर्ण प्रतियोगिता → अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ, फर्म का सन्तुलन

(36)

→ परिवर्तनशील अनुपात का नियम, अवस्थाएँ (तीनों अवस्थाओं का वर्णन)

(37)

→ पैमाने के प्रतिफल → अर्थ, अवस्थाएँ,

02/09/2024. Unit - III

Topic : एकाधिकार

Ques 1. एकाधिकार क्या है? एकाधिकार की विशेषता बताइए। एकाधिकार में अल्पकाल तथा दीर्घकाल में कीमत को उत्पादन निर्धारण किस प्रकार किया जाता है?

Ans # एकाधिकार का अर्थ →
एकाधिकार शब्द अंग्रेजी के Monopoly का हिन्दी रूपान्तरण है। शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा में Monopolions से हुई। जिसमें Mono का अर्थ एक तथा Monopolion Polion का अर्थ विक्रेता। अर्थात एकाधिकार बाजार की वह स्थिति है। जिसमें विक्रेता एक व्यक्ति या व्यक्ति का समूह होता है।

परिभाषा → चैम्बरलीन के अनुसार एकाधिकारी उसे समझना चाहिए। जिसकी वस्तु की पूर्ति पर नियंत्रण होता है। लेकिन प्रत्यक्षता में वह पूर्ति द्वारा कार्य नहीं करता बल्कि कीमत द्वारा कार्य करता है।

एकाधिकार की विशेषताएँ

(i) अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है।
(ii) फर्म व उद्योग वस्तुतः एक ही होते है।
(iii) उत्पादक को वस्तु की पूर्ति एवं कीमत पर नियन्त्रण होता है।
(iv) कोई स्थानापन्न वस्तु नहीं होती है।
(v) एकाधिकार में कोई भी फर्म प्रवेश नहीं कर सकती।
(vi) बेलोचदार माँग होती है।

एकाधिकार में मूल्य विभेद पाया जाता है।

(vii) एकाधिकार अलग-अलग क्रेताओं अथवा
(viii) बाजारों में एक ही वस्तु के भिन्न-भिन्न मूल्य ले सकता है।

दीर्घकाल में असामान्य अतिरिक्त लाभ होता है।

(ix) एकाधिकार में अल्पकाल में कीमत व
(x) उत्पादन निर्धारण।

अल्पकाल में इतना कम समय होता है कि
(xi) इस अवधि में एकाधिकारियों की उत्पादन क्षमता स्थिर रहती है। उत्पादन के आकार में किसी भी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं होता है। ऐसी अवस्था में बाजार में मूल्य निर्धारण पर माँग पक्षकारी अधिक प्रभाव होगा।

एकाधिकार में अल्पकाल में मूल्य एवं उत्पादन निर्धारण →

अल्पकाल में मूल्य एवं उत्पादन निर्धारण की तीन स्थितियाँ होती हैं :

(i) अधिकतम एकाधिकारी लाभ की स्थिति।
(ii) सामान्य लाभ की स्थिति।
(iii) न्यूनतम हानि की स्थिति।

(i) अधिकतम एकाधिकारी लाभ की स्थिति →

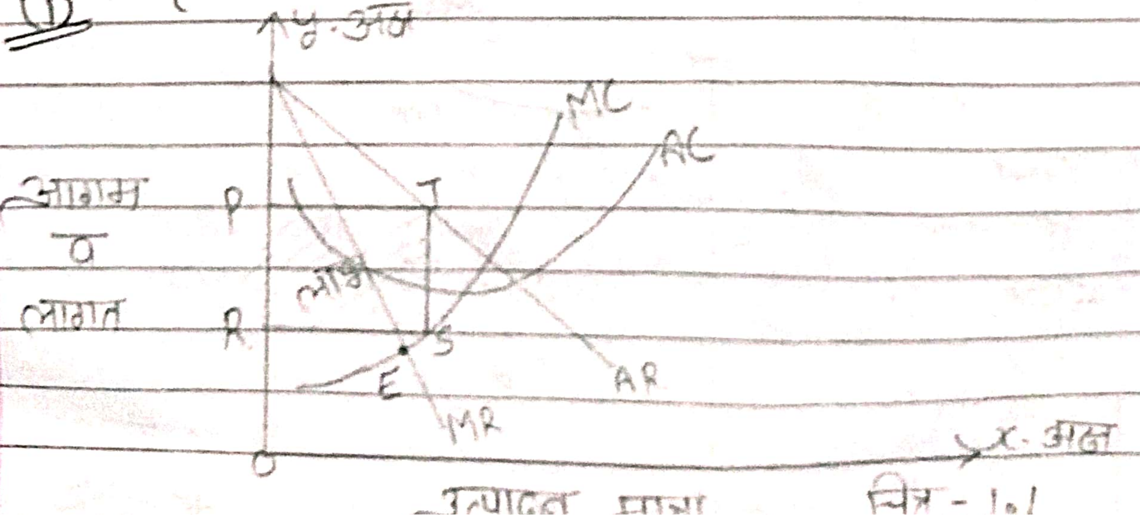

चित्र - 1.1

व्याख्या → रेखाचित्र 1.1 में एकाधिकारी का अल्पकालिन सन्तुलन दिखाया गया है जिसमें फर्म अधिकतम एकाधिकारी लाभ की स्थिति में है। इस चित्र में AR फर्म का औसत आगम वक्र, MR फर्म का सीमान्त आगम वक्र, AC फर्म का औसत लागत वक्र तथा MC फर्म का सीमान्त लागत वक्र है। फर्म के सीमान्त लागत वक्र (MC) ने सीमान्त आगम वक्र (MR) को E बिन्दु पर काटा है। E फर्म का सन्तुलन बिन्दु है। इस सन्तुलन बिन्दु पर फर्म OM मात्रा का उत्पादन तथा विक्रय करेगी। इससे फर्म की औसत आगम MT अथवा OP है जबकि औसत लागत वक्र MS अथवा OR है। अतः फर्म को RP अथवा ST के बराबर प्रति इकाई औसत लाभ अथवा PTSR के बराबर कुल अधिकतम लाभ प्राप्त होगा।

(ii) सामान्य लाभ की स्थिति →

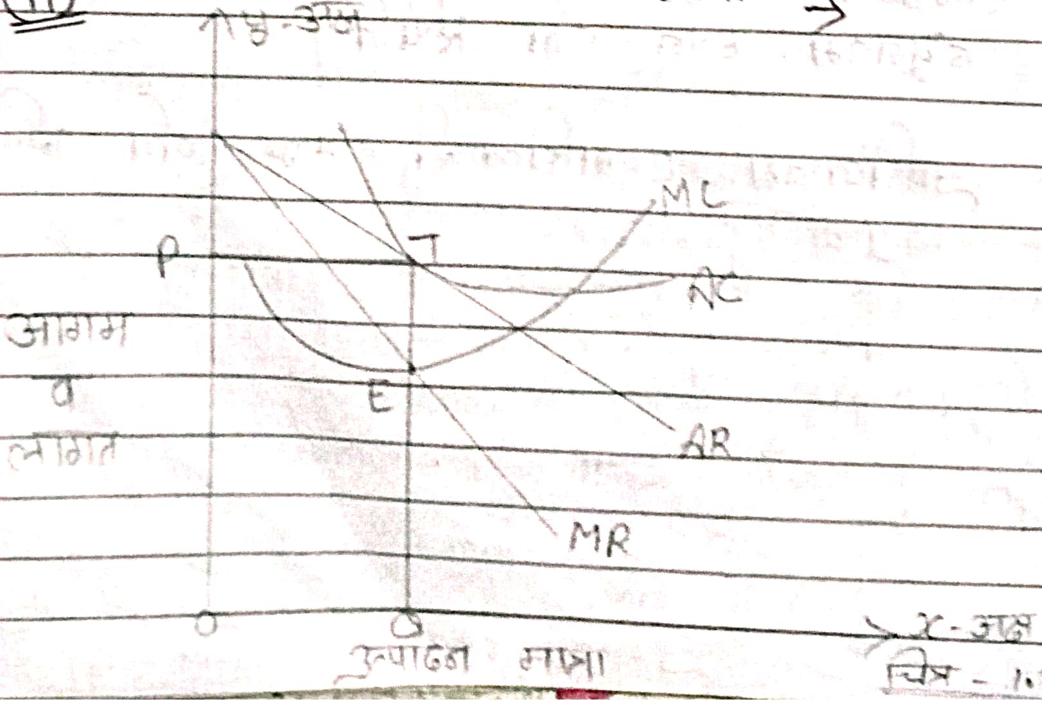

चित्र - 1.2

व्याख्या → रेखाचित्र 1.2 में फर्म अल्पकाल में केवल सामान्य लाभ कमाती हुई है। फर्म की सीमान्त लागत वक्र (MC) ने फर्म की सीमान्त आगम वक्र (MR) को E बिन्दु पर काटा है। E बिन्दु फर्म का सन्तुलन बिन्दु है। जिस पर OM मात्रा का उत्पादन है। एवं विक्रय किया जाता है। फर्म के OM उत्पादन की औसत लागत MT है अथवा OP है। तथा फर्म की औसत आगम भी MT और OP है। अतः फर्म को न लाभ और न हानि हो रही है।

(iii) न्यूनतम हानि की स्थिति →

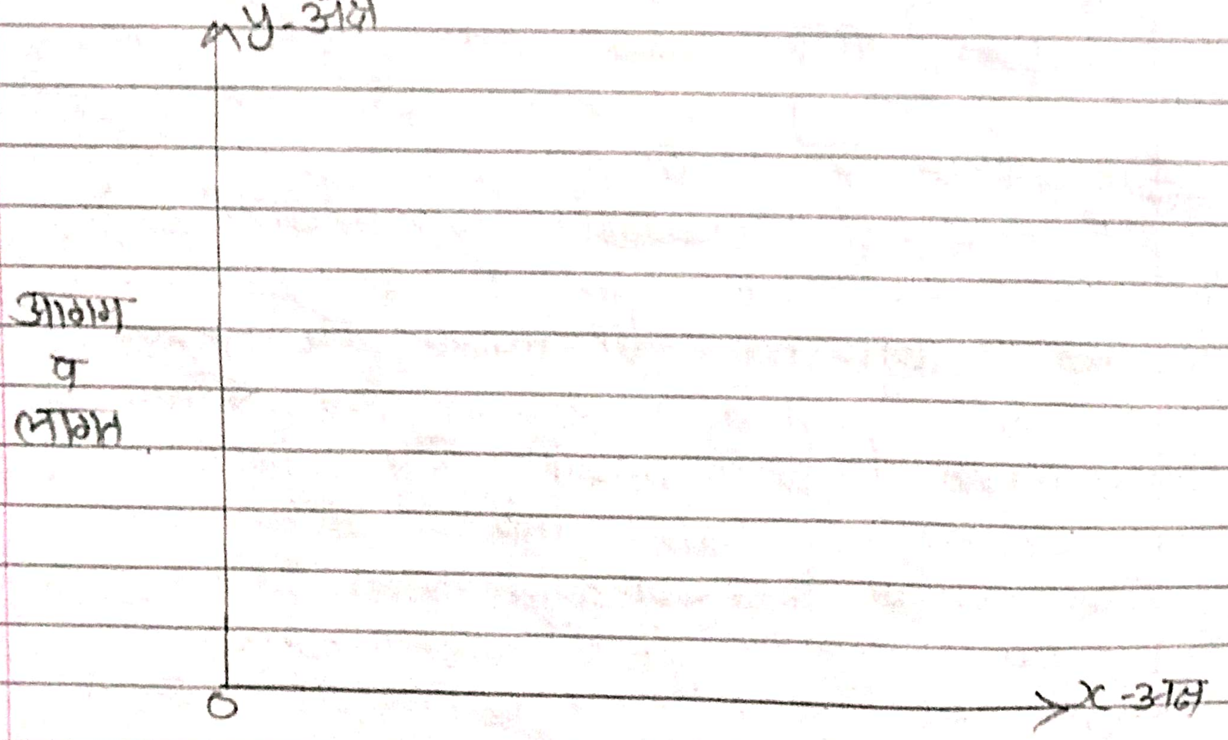

व्याख्या → रेखाचित्र 1.3 में फर्म को हानि हो रही है। परन्तु यहाँ फर्म औसत परिवर्तनशील लागतों के बराबर मूल्य प्राप्त कर रही है। अतः हानि की मात्रा स्थायी लागतों के बराबर ही है। चित्र में (SAC) फर्म का अल्पकालिन औसत लागत वक्र, AVC फर्म का अल्पकालिन औसत लागत वक्र है।

03/09/2024

Ques 2. पूर्ण प्रतियोगिता से आप क्या समझते है? उपयुक्त रेखाचित्र की सहायता से पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अल्पकाल तथा दीर्घकाल में फर्म का सन्तुलन समझाइये?

Ans पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ → पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है, जिसमें अनेक क्रेता व विक्रेता होते हैं। तथा समान एवं समरूप वस्तुएँ पायी जाती है।

परिभाषा → श्रीमती जॉर्न रॉबिन्स ने के शब्दों में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति तब पायी जाती है। जब प्रत्येक उत्पादक की उत्पत्ति की माँग पूर्णतया लोचदार होती है। इसके अन्तर्गत विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है। तथा एक विक्रेता कुल उत्पादन का बहुत कम भाग उत्पादित करता है।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ →

(i) बाजार में अनेक क्रेता व विक्रेता होते हैं।
(ii) समान एवं समरूप वस्तुएँ पायी जाती हैं।
(iii) क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की पूर्ण जानकारी होती है।
(iv) क्रेताओं और विक्रेताओं में परिवहन का अभाव पाया जाता है।
(v) क्रेताओं और विक्रेताओं को क्रय - विक्रय में पूर्ण प्रतिस्पर्धा होती है।
(vi) बाजार में साधनों की पूर्ण गतिशीलता होती है।

(vii) सम्पूर्ण बाजार में समस्त वस्तुओं का एक समान मूल्य रहने की प्रबल प्रवृत्ति।

(viii) बाजार में प्रवेश एवं बहिर्गमन की पूर्ण स्वतंत्रता।

(ix) प्रत्येक क्रेता का माँग वक्र पूर्णतः लोचदार होता है।

(x) दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ की प्राप्ति।

(xi) बाजार में कीमत (P) = AR = AC = MC = MR।

(xii) परिवहन लागतों का अभाव।

पूर्ण प्रतियोगिता में अल्पकाल में फर्म का साम्य या कीमत निर्धारण व उत्पादन

बाजार में मूल्य का निर्धारण सभी फर्मों के द्वारा की जाने वाली सामूहिक पूर्ति तथा सम्पूर्ण बाजार के माँग की पारस्परिक शक्तियों के संतुलन से होता है। सभी व्यक्तिगत फर्में मिलकर उद्योग कहलाती है। अतः बाजार में मूल्य का निर्धारण उद्योग की कुल पूर्ति तथा बाजार की कुल माँग की शक्तियों के साम्य से ऐसे बिन्दु पर होता है जहाँ वस्तुओं की पूर्ति व माँग बराबर होती है। इससे स्पष्ट है कि वस्तु के मूल्य का निर्धारण उद्योगों द्वारा होता है।

04/09/2024

→ व्यक्तिगत फर्म तथा व्यक्तिगत विक्रेता, मूल्य के ग्रहणकर्ता Price Maker (मूल्य निर्धारक) नहीं होते है। अल्पकाल में इतना समय होता है कि इसमें माँग के अनुसार पूर्ति में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। केवल विद्यमान साधनों की सहायता से पूर्ति में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। एक फर्म को अल्पकाल में असामान्य लाभ, हानि या सामान्य लाभ हो सकता है।

फर्म की साम्य अवस्था की मान्यताएँ →

(i) प्रत्येक फर्म का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है।

(ii) प्रत्येक फर्म या उत्पादक अपनी उत्पादन लागत को न्यूनतम करने के लिए प्रयत्नशील है।

(iii) साधनों की सभी इकाईयाँ समरूप होती है।

(iv) विभिन्न साधनों की कीमत का पूर्ण ज्ञान।

(v) कोई भी फर्म वर्तमान मूल्यों पर किसी भी साधन की जितनी इकाईयाँ चाहे, प्रयोग कर सकती है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण की विधियाँ।

(i) कुल आय व कुल लागत विधि।
(ii) सीमांत आगम की लागत विधि।

06/09/2024

(i) कुल आय व कुल लागत विधि →

इकाई की संख्या	बाजार मूल्य (रु) सीमांत आगम (MR)	कुल आगम (TR)	कुल स्थिर लागत (TFC)	कुल परिवर्तनशील लागत (TVC)	कुल लागत (TC)	सीमांत लागत (MC)	लाभ (TR-TC)
1	5	5	15	3	18	3	-13
2	5	10	15	5	20	2	-10
3	5	15	15	6	21	1	-6
4	5	20	15	6	21	0	-1
5	5	25	15	7	22	1	3
6	5	30	15	9	24	2	6
7	5	35	15	13	28	4	7
8	5	40	15	18	33	5	7

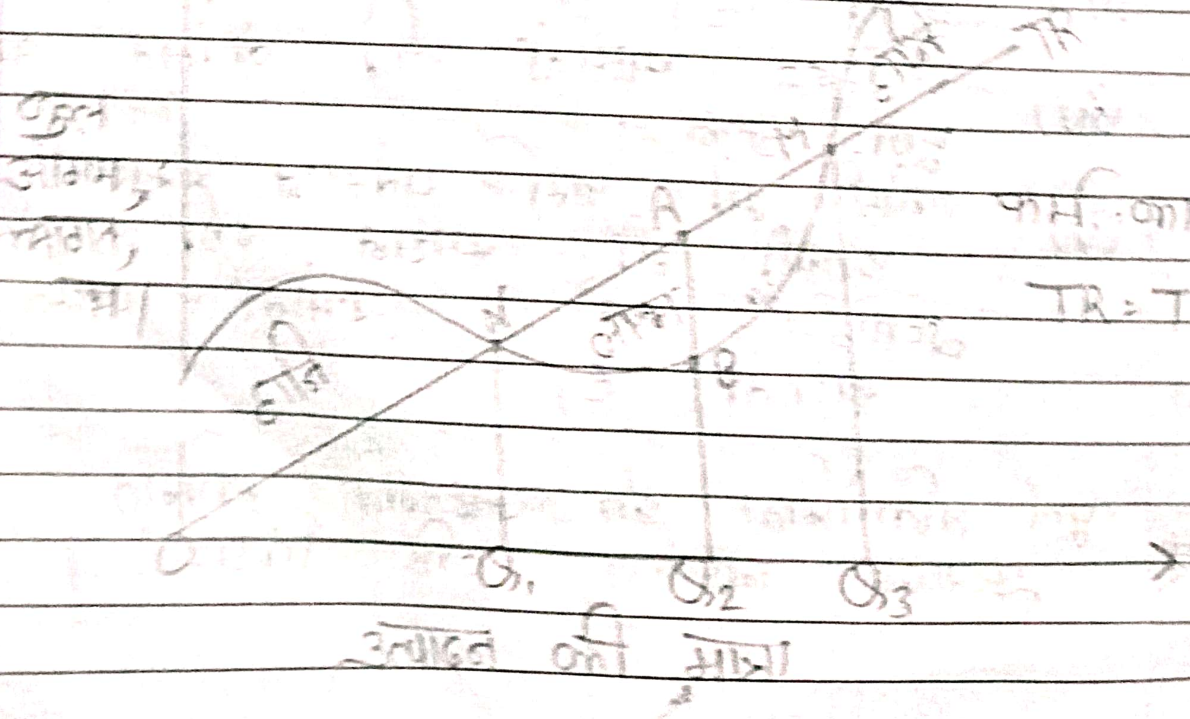

फर्म का साम्य
TR = TC

व्याख्या → फर्म का साम्य ज्ञात करने के लिए रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट है कि TR (कुल आगम) रेखा है। जबकि TC (कुल लागत) रेखा है। दोनों के बीच में बिन्दु N से M तक का क्षेत्र लाभ क्षेत्र है, जहाँ फर्म का उत्पादन OQ_2 इकाईयों पर साम्य अवस्था में है। जहाँ AB सर्वाधिक लाभ है। OQ_1 तथा OQ_3 मात्राओं पर कुल लागत तथा कुल आगम बराबर है। अतः N तथा M बिन्दुओं को समविच्छेद बिन्दु कहा जाता है।

(ii) सीमान्त आगम की लागत विधि → इस विधि में फर्म का साम्य उत्पादन की उस मात्रा पर होता है, जहाँ पर सीमान्त लागत (MC) तथा सीमान्त आगम (MR) दोनों बराबर होते हैं। बढ़ती हुई सीमान्त लागत की अवस्था में जहा सीमान्त लागत एवं सीमान्त आगम बराबर होती है। वहीं फर्म के अधिकतम लाभ की सम साम्य अवस्था होगी।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि उत्पादन की आठवीं इकाई पर साम्य अवस्था पर है। जहाँ पर सीमान्त आगम व सीमान्त लागत दोनों 5 रुपये है, तथा अधिकतम लाभ 7 रुपये है।

PAGE NO.: 26

09/09/2024

लाभ की स्थिति →

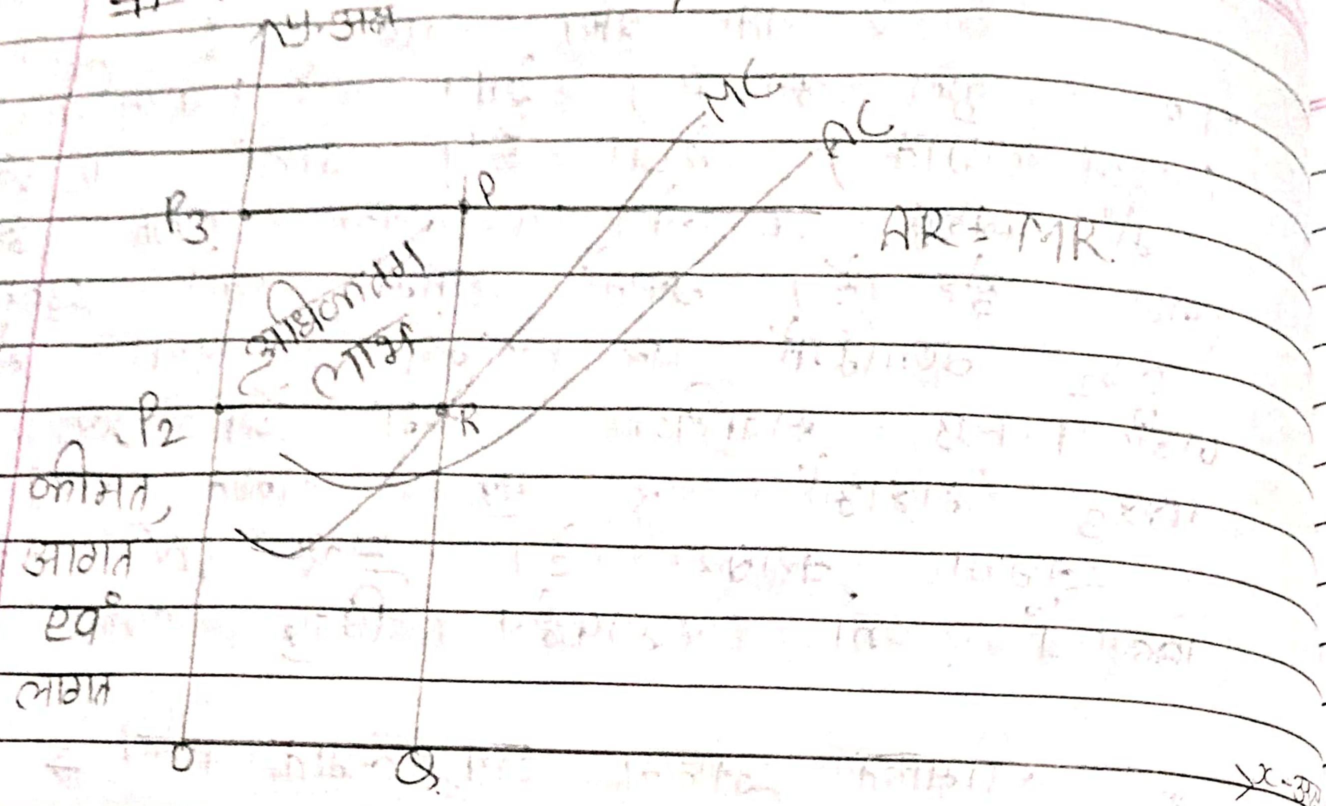

चित्र संख्या - 1.) (लाभ की स्थिति)

व्याख्या → इस विधि में फर्म का साम्य वहा होता है, जहाँ MR = AR हो, तथा MR रेखा को MC रेखा नीचे से काटती हो, रेखाचित्र में P बिन्दु पर साम्य की अवस्था है। जहाँ MR = MC है। उत्पादन की मात्रा OQ की प्रति इकाई कीमत OP_3 तथा लागत OQ है। तथा लाभ PRP_2P_3 है।

हानि की स्थिति →

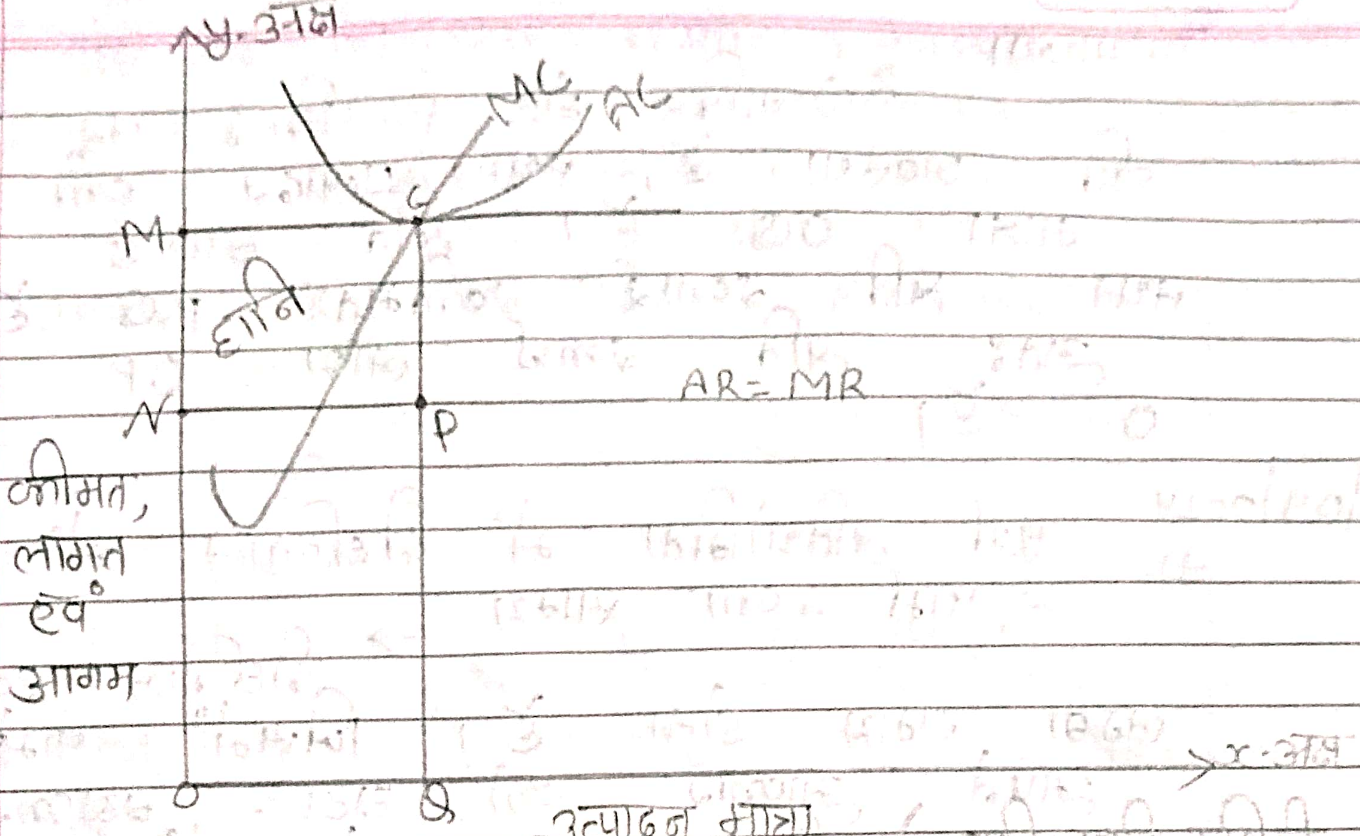

चित्र संख्या - 1.2 (हानि की स्थिति)

व्याख्या → रेखाचित्र में P बिन्दु पर साम्य की अवस्था है। जहाँ MR = AR है। OQ उत्पादन होता है। प्रति इकाई कीमत PQ है। तथा प्रति इकाई लागत CQ है। प्रति इकाई उत्पादन से फर्म की हानि MNCP है।

सामान्य लाभ की स्थिति →

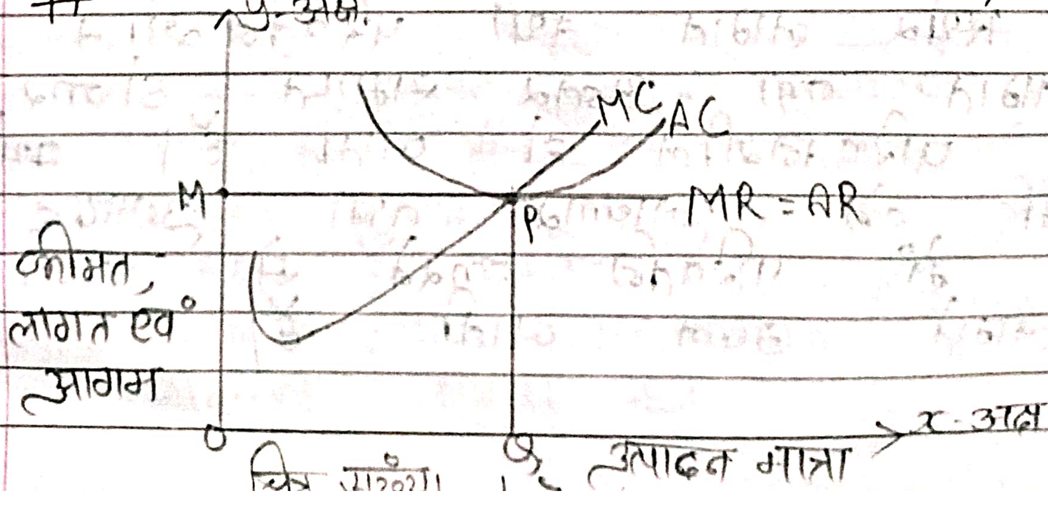

चित्र संख्या

व्याख्या → रेखाचित्र में P बिन्दु पर साम्य की अवस्था है, तथा उत्पादन की मात्रा OQ है। प्रति इकाई लागत तथा प्रति इकाई कीमत PQ है। अतः प्रति इकाई लाभ OP - OQ = 0 है।

10/09/2024

पूर्ण प्रतियोगिता में दीर्घकाल में फर्म का साम्य

→ दीर्घकाल एक लम्बा समय होता है, जिसमें फर्म अपने आकार को घटा - बढ़ाकर उत्पादन की मात्रा को माँग के अनुरूप कर सकते है, अर्थात् यदि माँग बढ़ती है, तो पूर्ति को भी बढ़ाया जा सकता है। तथा यदि माँग कम होती है, तो पूर्ति को भी घटाया जा सकता है, तथा दीर्घकाल में उत्पादन के संगठन तथा तकनीक में परिवर्तन किया जा सकता है। इसमें उद्योग या फर्मों को दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है। दीर्घकाल में स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत का अन्तर समाप्त होकर सभी लागतें परिवर्तनशील हो जाती है। क्योंकि फर्म के आकार तथा उत्पादन पैमाने में परिवर्तन करने से सभी लागतें बदल जाती है।

दीर्घकाल में फर्म साम्य अवस्था में
→ तब होती है, जब कीमत (P = MC)
सीमान्त लागत = सीमान्त आगम = औसत लागत = औसत आगम।
अर्थात, P = MR = MC = AR = AC.

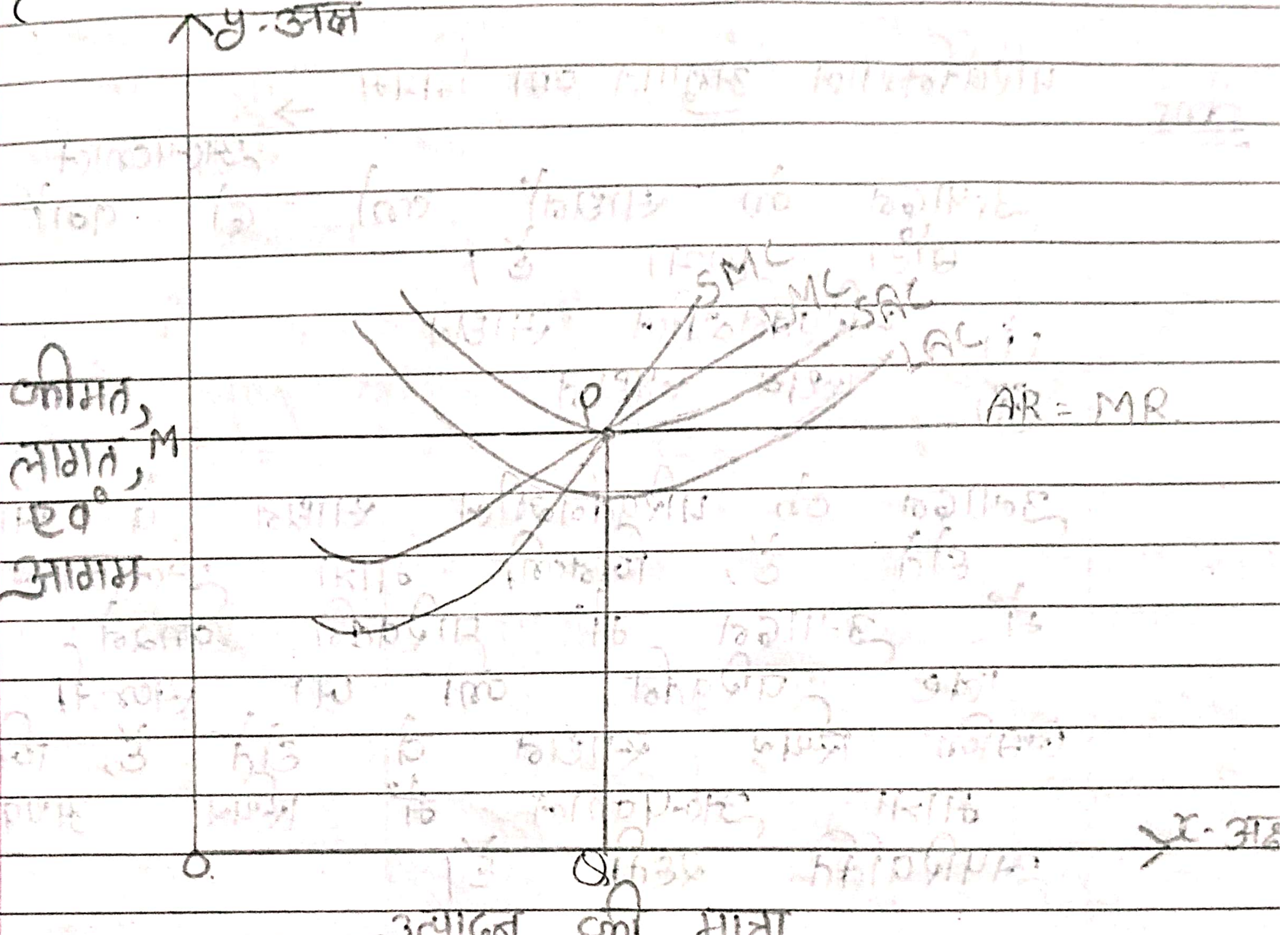

दीर्घकाल में फर्म का साम्य
चित्र

व्याख्या → उपर्युक्त चित्र में फर्म के P बिन्दु पर साम्य की स्थिति में है। तथा उत्पादन की मात्रा OQ है, तथा प्रति इकाई मूल्य PQ तथा प्रति इकाई लागत PQ है। अतः PQ - PQ = 0 है, तो सामान्य लाभ है। क्योंकि सीमान्त लागत = सीमान्त आगम है।

12/09/2024.

Topic: परिवर्तनशील अनुपात के नियम →

Ques 3. परिवर्तनशील अनुपातों के नियम को समझाइए तथा इसकी तीनों अवस्थाओं को समझाते हुए यह बताइए कि उत्पादन की दूसरी अवस्था ही सर्वाधिकतम क्यों है?

Ans परिवर्तनशील अनुपात का नियम → अल्पकाल में उत्पादन के साधनों को दो वर्गों में बाँटा गया है।

(i) परिवर्तनशील साधन
(ii) स्थिर साधन

उत्पादन के परिवर्तनशील साधन वे साधन होते हैं, जिनकी मात्रा अल्पकाल में उत्पादन में परिवर्तन करने के लिए परिवर्तन की जा सकती है जबकि स्थिर साधन वे होते हैं, जिनकी मात्रा अल्पकाल में स्थिर अथवा अपरिवर्तित रहती है।

→ जब अल्पकाल में उत्पादन के कुछ साधनों को स्थिर रखकर अन्य साधनों की मात्रा में परिवर्तन किया जाता है, तो इससे उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन, उत्पादन के परिवर्तनशील अनुपातों के नियम के अनुसार होता है।

परिभाषा → " श्रीमती जॉन रोबिन्स के अनुसार " उत्पत्ति के किसी साधन की मात्रा को स्थिर रखकर अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि करने पर एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन में घटती दर से वृद्धि होती है।

Ex- तालिका - 1.1

राम के कारखाने में 20,000 ₹ की पूँजी के साथ श्रम की विभिन्न इकाईयों को संयोगो से प्राप्त उत्पादन।

14/09/2024

परिवर्तनशील साधन श्रम इकाई	कुल उत्पादन (TP)	औसत उत्पादन (AP)	सीमान्त उत्पाद (MP)	
1	4	4	प्रथम अवस्था	4
2	10	5		6
3	18	6		8
4	23	5.75	द्वितीय अवस्था	5
5	27	5.4		4
6	30	5		3
7	30	4.29	तृतीय अवस्था	0
8	26	3.25		-4

→ उपर्युक्त तालिका 1.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि प्रारम्भ में कुल, औसत तथा सीमान्त उत्पादन बढ़ते हुए हैं। फिर अधिकतम हो जाते हैं, और अन्त में घटने

लगते हैं। कुल उत्पादन क्षमता की सातवीं इकाई के संयोग करने पर अधिकतम हो जाता है, और इसके बाद घटने लगता है। जबकि औसत उत्पादन चौथी इकाई पर अधिकतम होता है। तथा फिर घटने लगता है जबकि सीमान्त उत्पादन तीसरी इकाई पर अधिकतम होता है, तथा फिर घटने लगता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि उत्पादन के घटने का बिन्दु तीनों के लिए एक नहीं होता है।

19/09/2024.

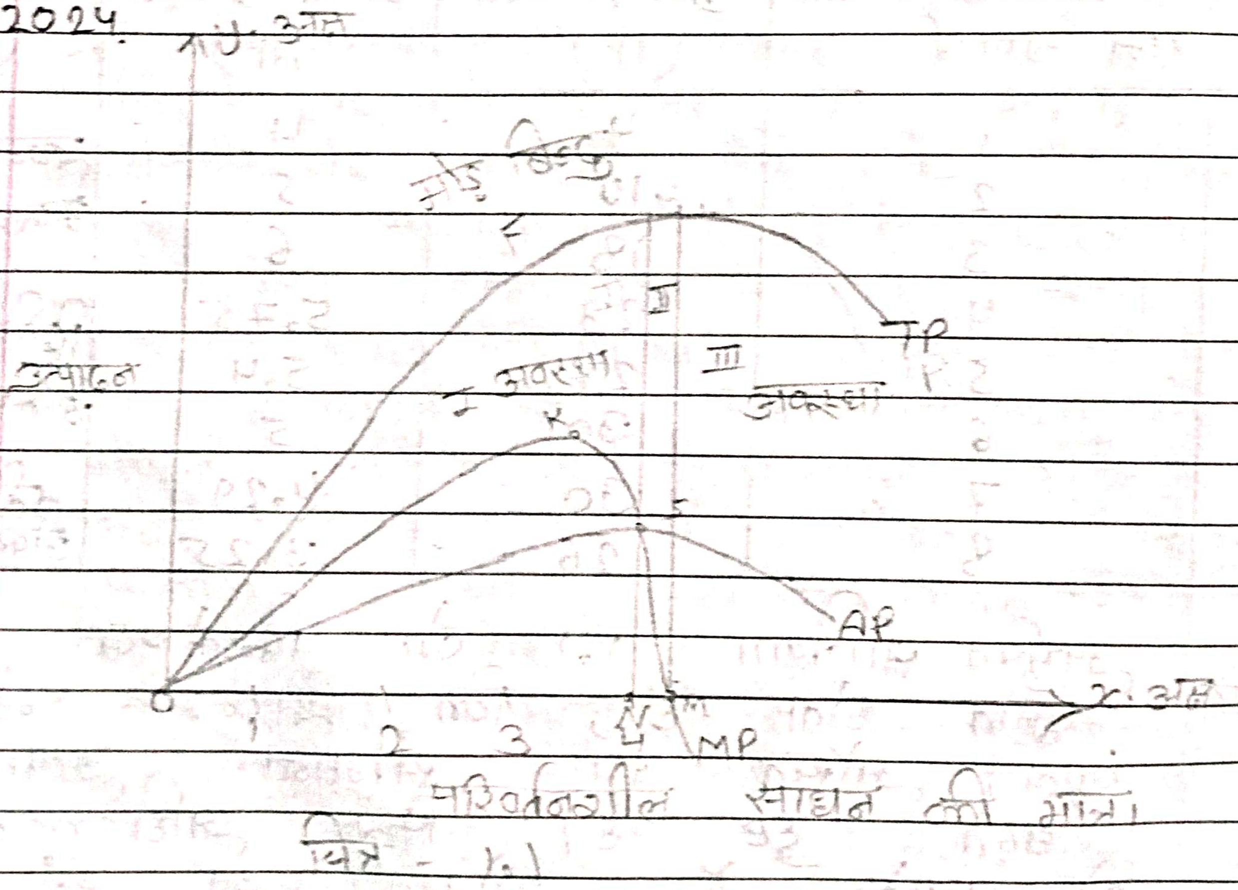

परिवर्तनशील साधन की मात्रा

चित्र - 1.1

परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की तीनों अवस्थाएँ
(i) प्रथम अवस्था अथवा बढ़ते प्रतिफल की अवस्था
(ii) द्वितीय अवस्था अथवा घटते प्रतिफल की अवस्था
(iii) तृतीय अवस्था अथवा ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था।

20/09/2024.

(i) प्रथम अवस्था अथवा बढ़ते प्रतिफल की अवस्था :- उत्पादन की प्रथम अवस्था में परिवर्तनशील साधन श्रम की चार इकाईयों में प्रयोग गया है। इस अवस्था में जिस प्रकार श्रम की उत्तरोत्तर इकाईयाँ बढ़ी बढ़ाई जाती है तो स्थिर साधनों का अपेक्षाकृत अच्छा एवं प्राप्त पर्याप्त उपयोग होने से सीमान्त उत्पत्ति और औसत उत्पत्ति दोनों बढ़ने से कुल उत्पादन भी बढ़ता है। सीमान्त उत्पत्ति जब तक उत्तरोत्तर दर से बढ़ती है, तो कुल उत्पत्ति भी बढ़ती दर से बढ़ती है। यही कारण है, कि जब सीमान्त उत्पादन उच्चतम बिन्दु पर पहुँचता है, तब कुल उत्पादन में वृद्धि दर से वृद्धि होती है। रेखाचित्र में सीमान्त उत्पत्ति वक्र के A बिन्दु पर BEE O से E तक कुल उत्पत्ति वक्र ऊपर की ओर उन्नोतर होता है। तथा E बिन्दु के बाद सीमान्त उत्पादन में गिरावट में कुल उत्पादन घटती

दर से बढ़ता है। अतः E बिन्दु को मोड़ अथवा झुकाव का बिन्दु कहते है। प्रथम अवस्था श्रम की चौथी इकाई तक तथा सीमान्त उत्पादन व औसत उत्पादन दोनों बराबर हो जाते है। इस प्रथम अवस्था को बढ़ते औसत उत्पादन की अवस्था भी कहते है।

(ii) द्वितीय अवस्था अथवा घटते प्रतिफल की अवस्था →

इस अवस्था में श्रम की औसत उत्पत्ति तथा सीमान्त उत्पत्ति दोनों में गिरावट होती है। सीमान्त उत्पत्ति औसत उत्पादन की अपेक्षा तीव्र गति से गिरती है। इस अवस्था के अन्त में MP, 0 हो जाती है, तो कुल उत्पादन (TP) अधिकतम हो जाता है। इस द्वितीय अवस्था में MP धनात्मक होने तथा बढ़ती दर से घटने के कारण कुल उत्पादन घटती दर से बढ़ता है। उपरोक्त रेखाचित्र से स्पष्ट होता है, कि श्रम की 8वीं इकाई की सीमान्त उत्पत्ति शून्य हो जाने पर है, TP अधिकतम है। अतः इस अवस्था को घटते प्रतिफल की अवस्था भी कहते है, क्योंकि इस अवस्था में MP और TP दोनों घटते है।

(iii) तृतीय अवस्था अथवा ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था → यह वह अवस्था है, जिसमें सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक हो जाता है। अतः श्रम की उत्तोत्तर इकाईयों में वृद्धि करने पर कुल उत्पादन तथा औसत उत्पादन दोनो में निरंतर गिरावट होती है। जैसा कि तालिका एवं रेखाचित्र दोनों में देखने से स्पष्ट होता है कि सातवीं तथा आठवी इकाईयों की सीमान्त उत्पादन क्रमशः -10 तथा -20 होने से TP (कुल उत्पत्ति) 90 से घटकर केवल 60 ही रह जाती है। अगर इसके बाद भी इकाईयाँ बढ़ाई जाए तो MP ऋणात्मक होने से AP तथा MP दोनों में और तीव्र गति से गिरावट आयेगी। यह तीसरी अवस्था उत्पादन साधनो में निरन्तर बढ़ते असन्तुलन के द्योतक होने से आर्थिक दृष्टि से अनुपयुक्त मानी जाती है।

उत्पादन की ही द्वितीय अवस्था की आर्थिक अवस्था या सर्वाधिक उपयुक्त → उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उत्पादक फर्मों की दृष्टि से उत्पादन की प्रथम अवस्था तथा तृतीय अवस्था दोनों ही अनुपयुक्त है, क्योंकि प्रथम अवस्था में स्थिर साधन की मात्रा परिवर्तनीयता

साधन की मात्रा के मुकाबले बहुत अधिक अनुपात में होने के कारण स्थिर साधन का पु पूरा - पूरा उपयोग नहीं हो पाता है। जबकि तृतीय अवस्था में स्थिर साधनों की मात्रा से परिवर्तनशील साधनों की मात्रा का अनुपात कई अधिक होने के कारण परिवर्तनशील साधनों की MP ऋणात्मक हो जाती है। जिससे कुल उत्पत्ति TP तथा औसत उत्पत्ति AP में गिरावट आती है। अतः उत्पादन की द्वितीय अवस्था ही आर्थिक दृष्टि से विवेकपूर्ण उत्पादन की अवस्था है। जिसमें फर्म उत्पादन साधनों की कमी उतनी इकाईयाँ लगाएगी। कि प्रचलित साधनों मूल्यों पर साधनों का अनुकूलतम उपयोग कर अधिकतम लाभ और अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

दूसरे शब्दो में, उत्पादक श्रम की 4 इकाईयों से कम 6 इकाईयों से अधिक को काम पर नहीं लगाएगा। इसलिए दूसरी अवस्था ही उपयुक्त अवस्था है।

21/09/2024

Ques 4. पैमाने के प्रतिफल से आप क्या समझते हैं ? पैमाने के प्रतिफल की अवस्थाओं / के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए ?

Ans पैमाने के प्रतिफल का अर्थ → उत्पादन के सभी साधनों में समान अनुपात में परिवर्तन करने से उत्पादन में जो परिवर्तन होता है, उन्हें पैमाने के प्रतिफल के नाम से पुकारा जाता है। उत्पादन के सभी साधनों में परिवर्तन केवल दीर्घकाल में ही सम्भव होता है। अतः पैमाने के प्रतिफल का सम्बन्ध दीर्घकालिन उत्पादन फलन से होता है।

पैमाने के प्रतिफल की तीन अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं :

(i) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल
(ii) पैमाने के स्थिर प्रतिफल
(iii) पैमाने के घटते प्रतिफल

(i) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल → जब किसी विस्तार पथ पर उत्पादन में समान वृद्धि बताने वाले समोत्पत्ति वक्रों के मध्य दूरी कम होती चली जाती है, तो यह पैमाने के बढ़ते प्रतिफल की स्थिति होती है। जब उत्पादन के यह हमें बताती है कि उत्पादन में

समान अनुपात में वृद्धि करने के लिए साधनों में ह्रास कम अनुपात में वृद्धि करनी होती है।

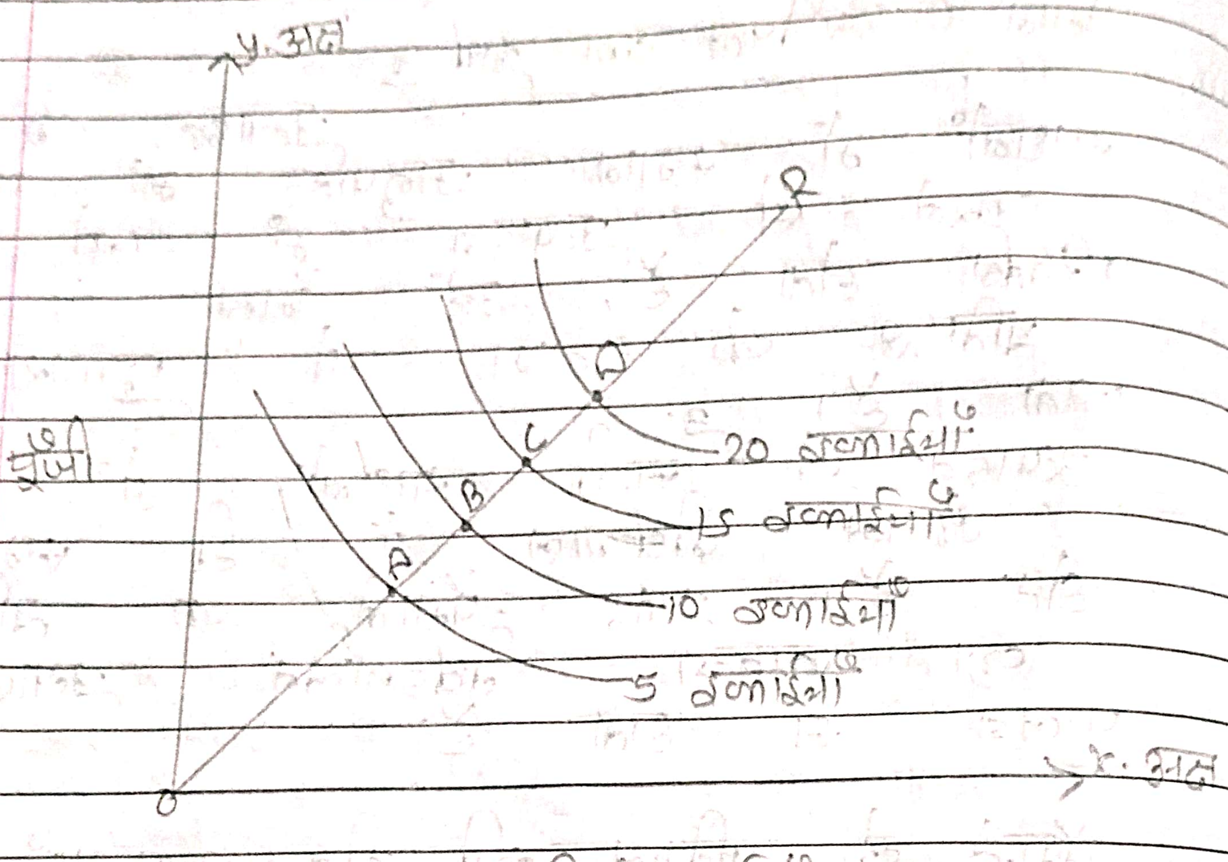

रेखाचित्र - 10.1

व्याख्या → रेखाचित्र 10.1 से स्पष्ट होता है, कि रेखा OR विस्तार मार्ग को बताने के लिए खींची गई है। उत्पादन में समान वृद्धियाँ अर्थात क्रम 5, 10, 15, व 20 इकाईयों को प्रकट करने वाली समोत्पत्ति वक्र रेखाएँ इस विस्तार पथ को टुकड़ों में बाँट देती है।

ऐसा इसलिए होता है, कि जब फर्म पैमाने का विस्तार

लगती है, तो उसे अधिक उत्पादन की मितव्ययिता प्राप्त होता है। जिससे उत्पादन में समान वृद्धि के लिए श्रम, पूँजी की कम मात्रा में वृद्धि की आवश्यकता होती है।

बढ़ते पैमाने के प्रतिफल के लागू होने के कारण →

(i) अविभाज्यताएँ।
(ii) आकार की कुशलता।
(iii) विशिष्टीकरण के लाभ।
(iv) आन्तरिक एवं बाह्य बचतें।

(i) अविभाज्यताएँ → उत्पत्ति के अनेक साधन अविभाज्य होते हैं। अविभाज्यता का तात्पर्य यह है, कि साधन कुछ निश्चित आकार में उपलब्ध होते हैं तथा उन्हें टुकड़ों में नहीं बाँटा जा सकता है।
जैसे → मशीन, प्रबन्धक, विपणन, वित्त और अनुसंधान में अविभाज्यता का तत्व विद्यमान होता है। उत्पत्ति का पैमाना बढ़ने से अविभाज्य साधनों का अधिक उपयोग होने लगता है। जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन कुशलता बढ़ती है और जिस अनुपात में साधनों में वृद्धि की जाती है, उससे अधिक अनुपात में वृद्धि होती है।
उत्पादन में

(ii) आकार की कुशलता → प्रो० बोमाल ने पैमाने के बढ़ते प्रतिफल का कारण बड़े आकार के कारण प्राप्त कुशलता को बताया है। उदाहरण के लिए पूँजी सम्पत्तियों में एक सीमा तक जिस अनुपात में विनियोग में वृद्धि की जाती है। उससे अधिक अनुपात में कुशलता बढ़ती है।

(iii) विशिष्टीकरण के लाभ → उत्पादन का पैमाना बड़ा। उत्पादन कार्य में विशिष्टीकरण को अपनाया जा सकता है। विशिष्ट कार्य के लिए एक विशिष्ट प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है। श्रम विभाजन द्वारा श्रमिक को उसकी योग्यता के अनुसार काम दिया जा सकता है। इससे साधनों की कुशलता बढ़ती है।

(iv) आन्तरिक एवं बाह्य बचतें →

(A) आन्तरिक बचतें → आन्तरिक बचतें वे बचतें होती है, जो किसी फर्म को उसकी आन्तरिक कुशलता तथा प्रबन्ध की श्रेष्ठता के कारण प्राप्त होती है। आन्तरिक बचतें

पाँच तरह की होती है।

(B) बाह्य बचतें → वे बचतें जो एक उद्योग में लगी सभी फर्मों को समान रूप से प्राप्त होती हैं, बाह्य बचतें कहलाती हैं। इनका सम्बन्ध फर्म के आन्तरिक प्रबन्ध से न होकर एक ही स्थान पर अनेक औद्योगिक इकाइयों की स्थापना से होती है।

23/09/2024

→ (ii) पैमाने के स्थिर प्रतिफल → यदि विस्तार पथ पर सभी विभिन्न समोत्पत्ति वक्र जो उत्पादन में समान वृद्धि को दर्शाते हैं, के मध्य समान दूरी होती है, तो यह स्थिति पैमाने के स्थिर प्रतिफल की होती है। इसे रेखाचित्र 1.2 से स्पष्ट किया गया है। रेखाचित्र में तीन सीधी रेखाएँ मूल बिन्दु से OR, OP तथा OQ खींची गई हैं। इन रेखाओं पर विभिन्न समोत्पत्ति वक्रों, जो उत्पादन की 5, 10, 15 तथा 20 इकाइयों को व्यक्त करती हैं, के मध्य समान दूरी है। OP रेखा पर AB = BC = CD; इसी तरह OR रेखा पर $A_2B_2 = B_2C_2 = C_2D_2$ तथा OQ रेखा पर $A_1B_1 = B_1C_1 = C_1D_1$ है। विभिन्न समोत्पत्ति वक्रों के मध्य यह समान दूरी यह प्रकट करती है, कि

साधनों में जिस अनुपात में वृद्धि की जाती है, उसी अनुपात में उत्पादन में वृद्धि होती है। अतः यह पैमाने के स्थिर प्रतिफल की स्थिति होती है।

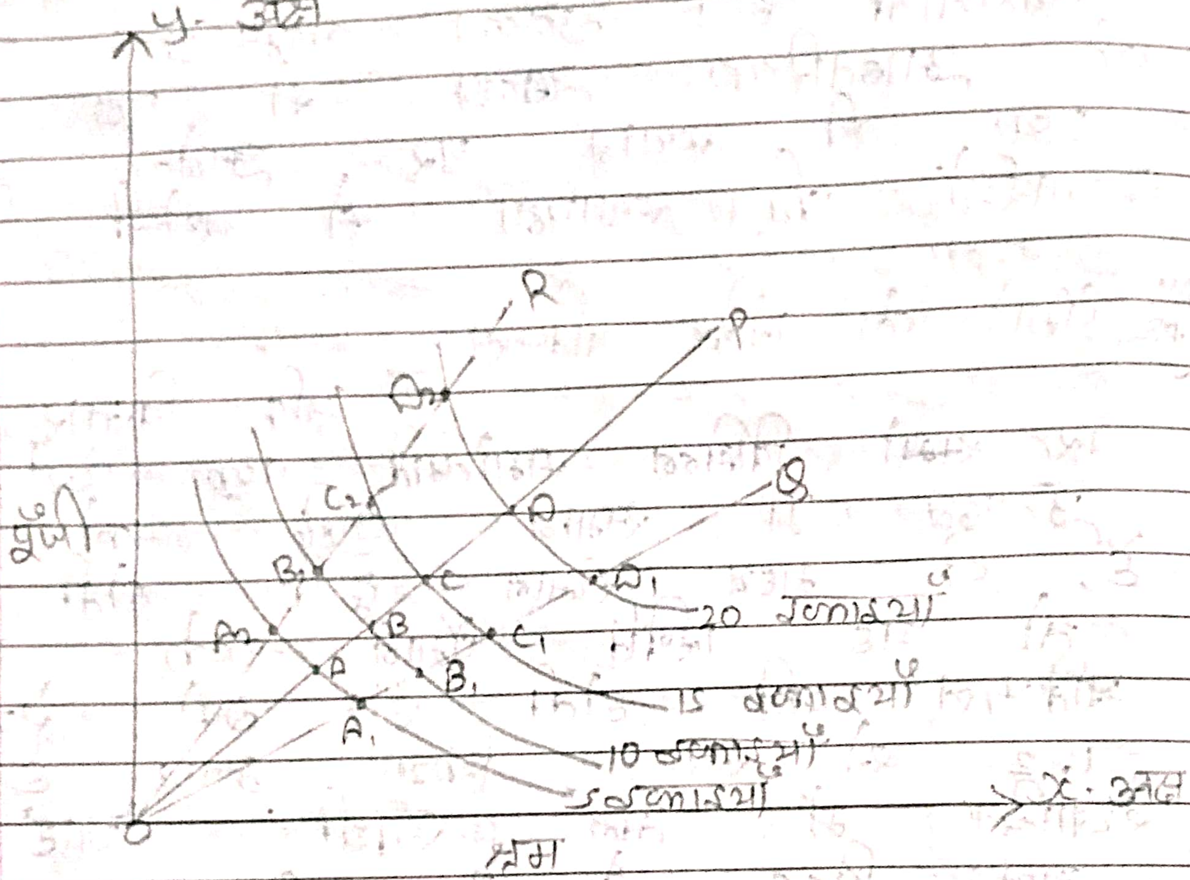

रेखाचित्र - 1.2

(iii) पैमाने के घटते प्रतिफल → जब किसी विस्तार पथ पर स्थित समान उत्पादन में वृद्धि बताने वाली समोत्पति वक्रों के मध्य की दूरी बढ़ती जाती है, तो यह पैमानों के घटते प्रतिफल की स्थिति को प्रदर्शित करती है। इसे रेखाचित्र 1.3 से देखा जा सकता है।

रेखाचित्र में BC > AB और CD > BC है।

पैमाने के घटते प्रतिफल का नियम उस समय लागू होता है जब फर्म को बड़े पैमाने के उत्पादन की प्राप्त होने वाली बचतें अथवा मितव्ययिताएँ समाप्त हो जाती हैं तथा बड़े पैमाने के उत्पादन में प्रबंध की कठिनाइयाँ उत्पन्न होने से अमितव्ययिताएँ प्राप्त होने लगती हैं। बड़े पैमाने के उत्पादन की अमितव्ययिताएँ उस समय उत्पन्न होती हैं जब फर्म का आकार इतना बड़ा हो जाये कि उसका प्रबन्ध करना कठिन हो, फर्म के विभिन्न विभागों में समन्वय न रहे तथा निर्णयों को लेने तथा लागू करने में देरी हो।

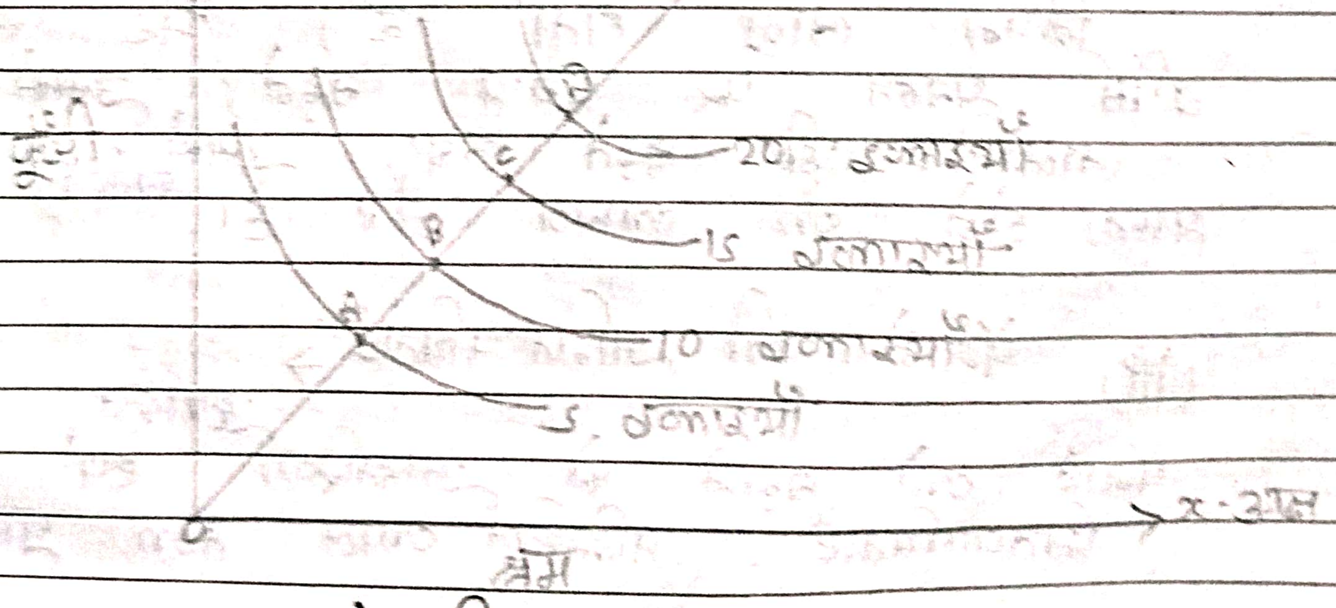

रेखाचित्र

पैमाने के घटते प्रतिफल के लागू होने के कारण →
(i) प्रबन्ध की जटिलताएँ।
(ii) निर्णय लेने व लागू करने में विलम्ब।
(iii) पैमाने की अमितव्ययिताएँ।
(iv) श्रम समस्याएँ।
(v) साहसी का स्थिर रहना।
(vi) अन्य कारण।

(i) प्रबन्ध की जटिलताएँ → जब उत्पादन के पैमाने का विस्तार किया जाता है, तो एक सीमा के बाद उस बड़े पैमाने के उत्पादन का प्रबन्ध इतना अधिक जटिल हो जाता है, कि उससे अकुशलता बढ़ती है।

(ii) निर्णय लेने व लागू करने में विलम्ब → प्रबन्ध की जटिलताएँ बढ़ने से निर्णय लेने तथा उनको लागू करने में विलम्ब होता है, जिससे पैमाने के घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है। यह सब शीर्ष प्रबन्ध पर दबाव बढ़ने, उससे लालफीताशाही बढ़ते तथा उससे प्रबन्धकीय अमितव्ययिताएँ प्राप्त होने के कारण होता है।

(iii) पैमाने की अमितव्ययिताएँ → उत्पादन के पैमाने को बढ़ाने से आन्तरिक एवं बाह्य मितव्ययिताएँ अनिश्चित काल तक प्राप्त

नहीं होती है। एक सीमा के बाद ये सभी मितव्ययिताएँ अमितव्ययिताओं में बदल जाती है। जिससे पैमाने के घटते पैमाने प्रतिफल का नियम क्रियाशील होता है।

(iv) श्रम समस्याएँ → उत्पादन का पैमाना बढ़ाने पर श्रमिकों की संख्या भी बढ़ती जाती है। तथा एक सीमा के बाद श्रमिकों का प्रबन्ध करना कठिन हो जाता है, क्योंकि प्रतिदिन नई-नई श्रम समस्याएँ उत्पन्न होती है।

(v) साहसी का स्थिर रहना → उत्पादन के पैमाने को बढ़ाने में उत्पादन के सभी साधनों को परिवर्तनशील एवं विभाज्य माना जाता है। परन्तु व्यवहार में एक साधन साहस इसमें स्थिर एवं अविभाज्य होता है, तथा इसके कारण भी पैमाने का घटता प्रतिफल लागू होता है।

(vi) अन्य कारण → उपरोक्त के अतिरिक्त दुर्लभ साधनों का अत्यधिक विदोहन आदि ऐसे कारण है, जो पैमाने के घटते प्रतिफल के लिए जिम्मेदार होते है।

(56) Unit - IV

→ व्यापार चक्र - अर्थ, परिभाषा, अवस्थाएँ, उपाय ।

→ व्यापार चक्र की अवस्थाओं की रोकथाम के उपाय ।

→ राष्ट्रीय आय → अर्थ, परिभाषा, विधियाँ (72)

→ वितरण के सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त ।

→ वितरण का आधुनिक सिद्धान्त

24/09/2024

[Unit - IV]

Topic : व्यापार चक्र

Ques 1. व्यापार चक्र क्या है, व्यापार चक्र की अवस्थाएँ बताइए तथा उनके निवारण के उपाय भी बताइए ?

Ans व्यापार चक्र → आर्थिक क्रियाओं के उत्पादन, रोजगार, मूल्य आदि के उतार - चढ़ाव से सम्बन्धित होता है।

व्यापार चक्रो को मौसमी उतार - चढ़ाव तथा दीर्घकालिन उतार - चढ़ाव से अलग समझा जाना चाहिए। विशेष रूप से केवल चक्राकार उतार - चढ़ाव को ही व्यापार चक्रो में शामिल किया जाता है।

परिभाषा → कीन्स के अनुसार " व्यापार चक्र का अभिप्राय एक आने वाले अच्छे व्यापार की अवधि, जिसकी विशेषताएँ है, बढ़ती हुई कीमतें और बेरोजगारी का न्यून स्तर और बुरे व्यापार की अवधि जिसकी विशेषताएँ है, गिरती हुई कीमतें व बेरोजगारी का ऊँचा स्तर।

व्यापार चक्र की अवस्थाएँ → व्यापार चक्र की अवस्थाओं में नियमित रूप से ऊँचा वचन होते रहते हैं, जिससे तेजी एवं मन्दी का क्रम चलता रहता है। एक आदर्श व्यापार चक्र में प्राय: पाँच भिन्न अवस्थाएँ होती हैं, जो निम्नलिखित हैं:

(i) मन्दी।
(ii) पुनरुत्थान।
(iii) पूर्ण रोजगार।
(iv) तेजी अथवा अभिवृद्धि।
(v) अवरोध की अवस्था अथवा मन्दी का पुनआगमन। पुनरागमन

25/09/2024.

(i) मन्दी → यह व्यापार चक्र की वह अवस्था होती है, जिसमें न्यून उत्पादन किया जाता है और मनुष्य एवं सामग्री का उपयोग न्यूनतम बिन्दु तक पहुँच जाता है। इस अवस्था में उत्पादन एवं रोजगार में बहुत कमी हो जाती है। विनियोग की मात्रा घट जाती है। जिससे श्रमिक तथा उत्पत्ति के दूसरे साधन बेकार हो जाते हैं। इस अवस्था में मूल्य एवं मजदूरी ही नहीं मिलती गिरती हैं, बल्कि मूल्यों की तुलनात्मक रूप रेखा अत्यन्त

असंतुलित हो जाती है। निर्मित माल की कीमतें गिरने से उत्पादकों को हानि होती है, जिससे वे उत्पादन में कमी कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी अधिक बढ़ती है
मन्दी
मन्दी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(i) व्यवसाय निष्क्रिय रहता है। जिससे विनियोग एवं उत्पादन की मात्रा में कमी हो जाती है।

(ii) विनियोग एवं उत्पादन में कमी के फलस्वरूप रोजगार एवं आय स्तर में गिरावट होती है।

(iii) वस्तुओं के मूल्य एवं श्रमिकों की मजदूरी तथा साहसियों के लाभों में कमी होती है।

(iv) पूँजी पर ब्याज की दरें पहले की तुलना में बहुत कम हो जाती है।

(v) आन्तरिक व्यापार के साथ-साथ विदेशी व्यापार की मात्रा भी घट जाती है।

(vi) उद्योग व्यवसाय, बैंक तथा बीमा कंपनियाँ असफल होने के कारण बन्द होने लगती है।

(vii) समाज में निराशा के कारण विद्रोह

की भावना बढ़ जाती है

(ii) पुनरुत्थान → समाज में मन्दी की अवस्था कुछ समय तक बनी रहने के पश्चात प्रायः पुनरुत्थान की अवस्था प्रारम्भ होती है। मन्दी की अवस्था की तुलना तुलना में पुनरुत्थान की अवस्था में समाज की स्थिति अधिक अच्छी होती है। प्रायः मन्दी की अवस्था में वस्तुओं के मूल्य न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाते हैं। तथा उनमें जब अधिक गिरावट की सम्भावना नहीं रह जाती है। तब पुनरुत्थान की अवस्था प्रारम्भ होती है। यह अवस्था निम्न प्रकार आती है।

मन्दी के समय अनेक कारखाने बन्द होने से उपभोक्ता वस्तुओं की पूर्ति कम हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही समय पश्चात माँग व पूर्ति का संतुलन पूर्ति के पक्ष में हो जाता है। मूल्यों की वृद्धि प्रारम्भ होने से व्यापार चक्र की दिशा बदल जाती है। मूल्यों में वृद्धि से उत्पादक को उत्पादन बढ़ाने को प्रोत्साहन मिलता है। लोगों को धीरे-धीरे रोजगार मिलता है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में माँग, मूल्य, उत्पादन, विनियोग, तथा रोजगार में वृद्धि का क्रम प्रारम्भ हो जाता है, यह पुनरुत्थान अवस्था का प्रारम्भ कहा जाता है।

समृद्धिकाल की निम्न विशेषताएँ होती हैं :

(i) इस अवस्था में उत्पादन, रोजगार एवं आय स्तर में वृद्धि होती है।
(ii) मूल्य स्तर, मजदूरी तथा लाभों में वृद्धि होने लगती है।
(iii) बैंक ऋणों एवं विनियोगों में वृद्धि।
(iv) बैंक के कोष कम होने लगते हैं तथा बैंकों की वसूलियों में सुधार होता होती है।
(v) सभी क्षेत्रों में आशा एवं उत्साह की नई लहर दिखाई देती है।
(vi) इसमें सट्टेबाजी की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।
(vii) लोगों में वस्तुओं को संग्रहण करने की प्रवृत्ति कम होती है।

(iii) पूर्ण रोजगार → व्यापार चक्र की यह अवस्था आदर्श / सर्वोत्तम मानी जाती है। जिसे प्रत्येक देश प्राप्त करना चाहता है। आज सभी लोक कल्याणी सरकारों की आर्थिक नीति का उद्देश्य पूर्ण रोजगार की अवस्था को प्राप्त करना है। इस अवस्था में आर्थिक क्रियाएँ अनुकूलतम स्तर तक पहुँच जाती हैं तथा उत्पादन के सभी साधन काम पर लग जाते हैं। इस अवस्था में काम करने की शक्ति व इच्छाशक्ति रखने वाला कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं होता। यद्यपि इस

दशा में कोई ऐच्छिक एवं संघर्षात्मक बेरोजगारी विद्यमान रहती है।

↔ पूर्ण रोजगार अवस्था की निम्न विशेषताएँ :

(i) इस अवस्था में मूल्यों, उत्पादन तथा आय सभी में स्थायित्व आ जाता है।

(ii) उत्पादन के सभी साधनों का पूर्ण उपयोग होने लगता है।

(iii) समाज में ऐच्छिक एवं संघर्षात्मक बेरोजगारी के अतिरिक्त अन्य कोई बेरोजगारी की स्थिति नहीं होती।

(iv) इस अवस्था में आर्थिक क्रियाएँ अनुकूलतम स्तर तक पहुँच जाती हैं,

(v) बैंकों द्वारा वसूली बड़े पैमाने पर होती है।

(vi) व्यवसायों के असफल होने के अवसर कम होते हैं।

(vii) स्थाई पूँजी के रूप में विनियोग बढ़ता है।

(iv) तेजी अथवा अभिवृद्धि →

पुनरुत्थान की अवस्था के बाद सदैव पूर्ण रोजगार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि पुनरुत्थान से तेजी अथवा अभिवृद्धि की अवस्था उत्पन्न हो जाती है। किसी अर्थव्यवस्था के पूर्ण रोजगार की स्थिती में पहुँचने के बाद भी विनियोग बढ़ता रहता है। तो

इससे वास्तविक उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती है, बल्कि मूल्यों में और अधिक वृद्धि हो जाती है, जिससे साहसी प्रत्येक वस्तु को आशावादी दृष्टि से देखने लगते हैं। परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यापार व उद्योग में अधिक मात्रा में विनियोजन किया जाता है, जिससे पहले से पूर्ण नियोजित उत्पादन साधनों पर चारों तरफ से दबाव पड़ने लगता है और पूर्ण रोजगार की अवस्था अत्यधिक रोजगार (Higher employment) की स्थिति में परिवर्तित हो जाती है। अत्यधिक रोजगार की स्थिति में नौकरियों के स्थान, काम चाहने वालों से अधिक होते हैं, फलस्वरूप मजदूरी व उत्पादन लागतों में वृद्धि होती है। मजदूरी की तुलना में मूल्य अधिक तेजी से बढ़ने के कारण मौद्रिक मजदूरी में वृद्धि के बावजूद वास्तविक मजदूरी घट जाती है।

⟶ तेजी अथवा अभिवृद्धि की निम्न विशेषताएँ होती हैं:

(i) सभी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि, ऊँचे व्यय एवं ऊँचे लाभ होना।

(ii) विनियोग की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होना।

(iii) बैंकों द्वारा अत्यधिक मात्रा में ऋण प्रदान करना।

(iv) सट्टेबाजी की प्रवृत्तियों का अधिकाधिक प्रसार होना।

(v) श्रम संघों की कार्यवाहियों का विस्तार एवं अधिक हड़तालें होना।

(vi) मूल्यों की तुलना में मजदूरी में कम वृद्धि के कारण वास्तविक मजदूरी में कमी होना।

(vii) व्यापारियों में अत्यधिक आशा एवं भविष्य के प्रति लापरवाही होना।

(viii) नवीन उद्योगों व व्यापारों का प्रारम्भ होना।

(v) अवरोध की अवस्था अथवा मन्दी का पुनरागमन → अभिवृद्धि अथवा तेजी की अवस्था लम्बे समय तक नहीं बनी रह सकती है क्योंकि तेजी में स्वयं के विनाश के बीज निहित होते हैं। तेजी की एक सीमा आ जाती है जिसके आगे विकास के प्रगतिशील चरण डगमगाने लगते हैं। और प्रगति की गति स्थिर हो जाती है तथा पुनः मन्दी प्रारम्भ हो जाती है। तेजी से मन्दी का आगमन कुछ इस प्रकार होता है- उत्पादन में निरन्तर वृद्धि तथा मूल्यों के बढ़ते जाने के फलस्वरूप वस्तुओं की उत्पादन लागत बढ़ जाती है, जिससे वस्तुओं के बाजार मूल्यों तथा उत्पादन लागतों में अन्तर कम हो जाता है, क्योंकि कालान्तर में

मूल्य वृद्धि होने पर ब्याज दरें, किराया, मजदूरियाँ आदि भी बढ़ जाती है और उत्पादकों का व्यय बढ़ जाता है। उत्पादन लागतों में वृद्धि उत्पत्ति ह्रास नियम भी क्रियाशीलता के कारण भी होती है। इसके परिणामस्वरूप व्यापारियों तथा उद्योगपतियों के लाभ घट जाते है। इससे नवीन पूँजी का विनियोजन बन्द हो जाता है।

*→ मन्दी के पुनरागमन अथवा अवरोध की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(i) इस अवस्था में मजदूरी, लागतें एवं मूल्य गिरने लगते हैं।

(ii) कुल व्यवसाय की मात्रा घटने लगती है।

(iii) उत्पादन, आय, विनियोग तथा रोजगार घटने लगते हैं।

(iv) बैंकों द्वारा ऋणों की शर्तें कठोर कर दी जाती है जिससे बैंक ऋणों में कमी होने लगती है।

(v) साहसियों में भविष्य के प्रति भय, संकोच व शंका उत्पन्न हो जाती है।

(vi) नवीन योजनाओं को त्याग दिया जाता है तथा अधूरी योजनाओं को छोड़ दिया जाता है।

(vii) निर्माण क्रियाएँ मन्द पड़ जाती है, तथा बेकारी बढ़ने लगती है।

→ एक व्यापार चक्र की विभिन्न अवस्थाओं को रेखाचित्र उदा 1.1 से देखा जा सकता है-

27/09/2024

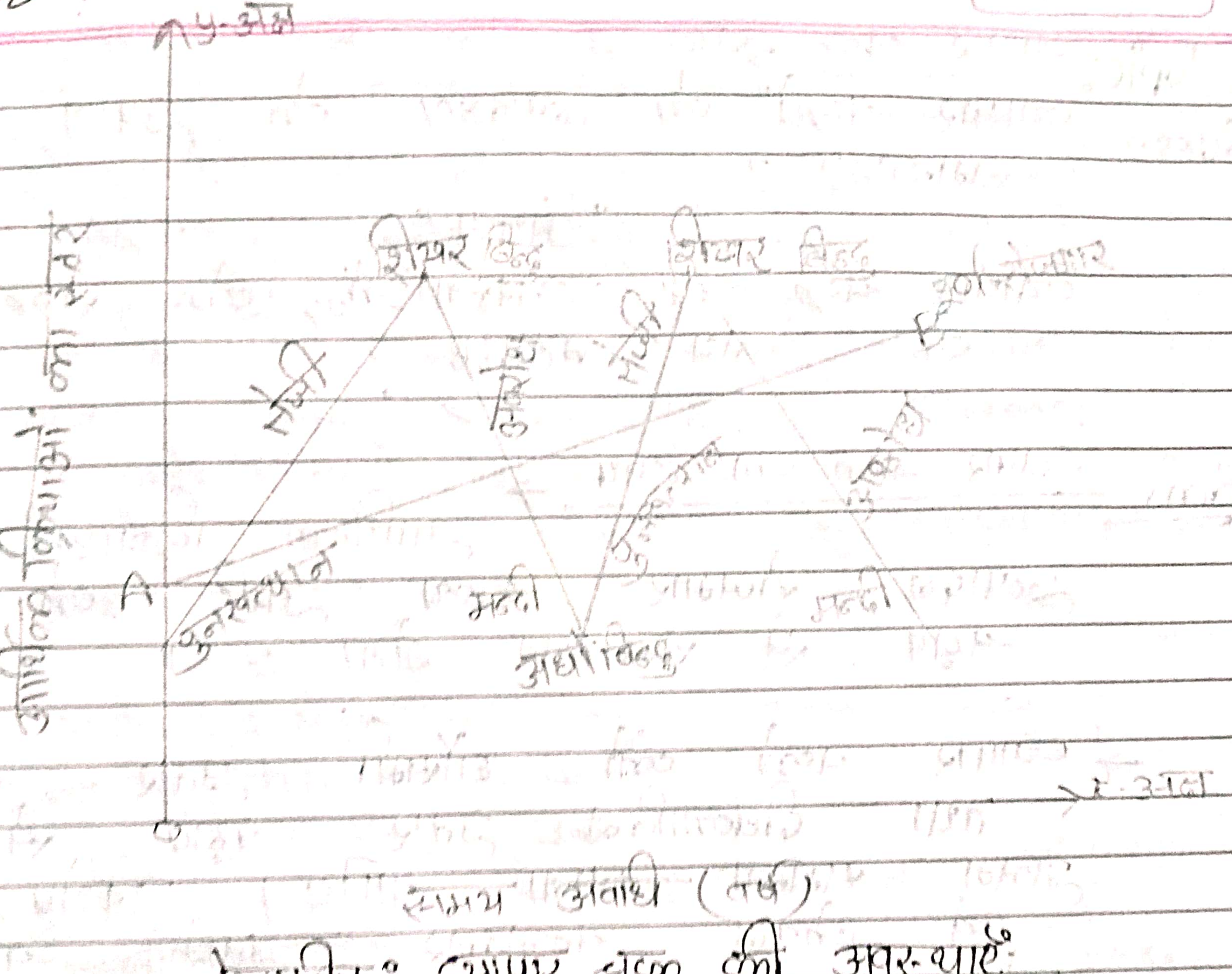

रेखाचित्र : व्यापार चक्र की अवस्थाएँ

Topic : व्यापार चक्र →

Ques 2. व्यापार चक्रों के नियन्त्रण के उपाय बताइए समझाइए ?

"अथवा"

व्यापार चक्र की अवस्थाओं के रोकथाम के उपाय बताइए ?

Ans व्यापार चक्र का अर्थ → आर्थिक क्रियाओं के उत्पादन, रोजगार, मूल्य आदि के उतार-चढ़ाव से सम्बन्धित होता है।

→ व्यापार चक्रों को मौसमी उतार-चढ़ाव तथा दीर्घकालिन उतार-चढ़ाव से अलग समझा जाना चाहिए। विशेष रूप से केवल चक्राकार उतार-चढ़ाव को ही व्यापार चक्रों में शामिल किया जाता है।

परिभाषा → कीन्स के अनुसार "व्यापार चक्र का अभिप्राय एक आने वाले अच्छे व्यापार की अवधि, जिसकी विशेषताएँ हैं, बढ़ती हुई कीमतें और बेरोजगारी का न्यून स्तर और बुरे व्यापार की अवधि जिसकी विशेषताएँ हैं, गिरती हुई कीमतें व बेरोजगारी का ऊँचा स्तर।

* व्यापार चक्रों का नियंत्रण →

व्यापार चक्रों से एक देश में आर्थिक क्रियाओं में अत्यधिक उच्चावचन होते रहते हैं। ये उच्चावचन समाज के विभिन्न वर्गों के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। अतः व्यापार चक्रों की क्रियाशीलता को रोकने के लिए उपाय करना अत्यंत आवश्यक होता है। व्यापार चक्रों को नियंत्रित करने के लिए दो प्रकार के उपाय काम में लिये जाते हैं।

(I) प्रतिबंधात्मक उपाय
(II) निवारणात्मक उपाय

(I) प्रतिबंधात्मक उपाय →

इनमें उन उपायों को सम्मिलित किया जाता है, जो व्यापार चक्रों के आगमन पर ही रोक लगाते हैं। इनमें निम्नलिखित उपायों को सम्मिलित किया गया है:

(i) प्रकृति पर निर्भरता में कमी।
(ii) माँग व पूर्ति में सन्तुलन।
(iii) मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों में समायोजन।
(iv) आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण।
(v) सट्टेबाजी पर रोक।

(i) <u>प्रकृति पर निर्भरता में कमी</u> → कृषि प्रधान देशों में जलवायु में परिवर्तन तथा प्राकृतिक कठिनाइयों के कारण आर्थिक उच्चावचन अधिक आते हैं। वहाँ सिंचाई के साधनों के विकास तथा अन्य उपायों द्वारा अर्थव्यवस्था की प्रकृति पर निर्भरता समाप्त कर देनी चाहिए जब कृत्रिम साधनों से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी देश अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकेगा, तो व्यापार चक्रों का प्रभाव कम होगा।

(ii) <u>माँग व पूर्ति में सन्तुलन</u> → देश में माँग एवं पूर्ति में सन्तुलन स्थापित करने लिए सरकार को घरेलू उत्पादन तथा आयात व निर्यात में हर वक्त ठीक प्रकार के समायोजन करने चाहिए। अर्थात घरेलू उत्पादन कम होने पर अधिक आयात की तथा उत्पादन अधिक होने पर निर्यात की व्यवस्था करनी चाहिए। इतना ही नहीं देश में आवश्यक वस्तुओं के बड़ी मात्रा में सुरक्षित भण्डार बनाने की आवश्यकता होती है। सुरक्षित भण्डारों की व्यवस्था द्वारा भी आर्थिक उच्चावच कम किये जा सकते हैं।

(iii) मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों में समायोजन → सरकार को देश की मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों में इस प्रकार का समायोजन करना चाहिए। जिससे देश में व्यापार चक्रों का आगमन रोका जा सके। सरकार को ऐसी नीतियाँ अपनानी चाहिए जिससे अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार को प्राप्त करके साम्य में बनी रहे।

(iv) आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण → उत्पादन तथा उपभोग में अन्तर को कम करने के लिए सरकार को कुछ आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिए। जिससे उत्पादन तथा मांग में समायोजन करके व्यापार चक्रों को रोका जा सकता है।

(v) सट्टेबाजी पर रोक → देश में सट्टेबाजी पर रोक रखनी चाहिए क्योंकि सट्टेबाजी की क्रियाएँ आर्थिक उच्चावचन लाती है। सट्टेबाजी के कारण आर्थिक जगत में अनिश्चितता बढ़ती है तथा तेजी-मंदी का प्रभाव अधिक पड़ता है, अतः इन पर कठोर नियन्त्रण किया जाना चाहिए।

28/09/2024

(II) **निवारणात्मक उपाय** → ये वे उपाय होते हैं, जो एक देश में व्यापार चक्र के आगमन के बाद बुरे प्रभाव को कम करने तथा उसे दूर करने के लिए अपनाये जाते हैं। निवारणात्मक उपायों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है:

(i) मौद्रिक नीति
(ii) राजकोषीय अथवा प्रशुल्क नीति
(iii) भौतिक नियन्त्रण
(iv) अन्य उपाय

*→ (i) **मौद्रिक नीति** → व्यापार चक्रों पर नियन्त्रण करने के लिए सरकार द्वारा मौद्रिक नीति का उपयोग किया जाता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि तेजी के समय देश में मुद्रा एवं साख का प्रसार हो जाता है, अतः व्यापार चक्र पर नियन्त्रण हेतु तेजी के समय देश में मुद्रा एवं साख की मात्रा कम की जाती है तथा मन्दी के समय मुद्रा व साख की मात्रा अर्थव्यवस्था में बढ़ायी जाती है। मौद्रिक नीति के अन्तर्गत दो तरह के उपाय काम में लाये जाते हैं, जो निम्न प्रकार से हैं:

(A) परिमाणात्मक उपाय
(B) गुणात्मक उपाय

(A) परिमाणात्मक उपाय → व्यापार चक्रों को नियन्त्रित करने के लिए निम्नांकित परिमाणात्मक उपाय काम में लाये जाते हैं-

(a) बैंक दर
(b) खुले बाजार की क्रियाएँ
(c) परिवर्तनशील कोषानुपात

(a) बैंक दर → तेजी अथवा स्फीति के समय केन्द्रीय बैंक द्वारा बैंक दर बढ़ा दी जाती है जिससे व्यापारिक बैंकों की ब्याज दरें भी बढ़ जाती है।

(b) खुले बाजार की क्रियाएँ → खुले बाजार की क्रियाओं के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है।

(c) परिवर्तनशील कोषानुपात → केन्द्रीय बैंक के पास सभी व्यापारिक बैंकों को अपने कुल कोषों का निश्चित प्रतिशत भाग नगद रखना होता है। केन्द्रीय बैंक इस अनुपात को स्फीति रोकने के लिए बढ़ा देता है तथा मन्दी रोकने के लिए इसे कम कर देता है।

(B) गुणात्मक उपाय → गुणात्मक साख नियन्त्रण के उपायों में उन विधियों को शामिल किया जाता है, जिनके द्वारा चुने हुए क्षेत्रों में साख को नियन्त्रित किया जाता है। इसमें निम्नलिखित उपाय काम में लिये जाते हैं:

(i) (a) साख की राशनिंग।
(ii) (b) ऋणों के सीमान्तर में परिवर्तन।
(iii) (c) उपभोक्ता साख नियन्त्रण।
(iv) (d) नैतिक दबाव व प्रचार।

(a) साख की राशनिंग → इस विधि के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक देश में साख के प्रसार को रोकने हेतु व्यापारिक बैंकों तथा मुद्रा बाजार की अन्य संस्थाओं के लिए अन्तिम ऋणदाता के रूप में उनको उधार दी जाने वाली धनराशि का राशन करके अथवा प्रतिबन्ध लगाकर उनकी ऋण देने की शक्ति कम कर सकता है।

(b) ऋणों के सीमान्तर में परिवर्तन → व्यापारिक बैंक विभिन्न व्यक्तियों व संस्थाओं को प्रायः माल की जमानत पर ऋण देते हैं। ऋण माल के मूल्य से कम दिया जाता है अर्थात एक सीमान्तर रखा जाता है।

(c) उपभोक्ता साख नियन्त्रण → जब देश में उपभोक्ता वस्तुओं की कमी के कारण स्फीति आती है, तब उपभोक्ताओं को दी जाने वाली साख की मात्रा घटा दी जाती है तथा मन्दी के समय उपभोक्ताओं को टिकाऊ वस्तुएँ खरीदने के लिए अधिक मात्रा में साख दी जाती है।

(d) नैतिक दबाव व प्रचार → केन्द्रीय बैंक अन्य व्यापारिक बैंकों पर नैतिक दबाव डाल कर तथा प्रचार करके भी देश में साख की मात्रा में आवश्यक समायोजन करने में सफल हो जाता है।

→ (ii) राजकोषीय नीति → सरकार देश के उत्पादन, रोजगार तथा आय पर प्रभाव डालने वाले अवांछित तत्वों को प्रशुल्क नीति के प्रयोग द्वारा ठीक कर सकती है। व्यापार चक्रों को नियन्त्रित करने के लिए राजकोषीय उपायों के अन्तर्गत सरकार तीन तरह के उपाय काम में लेती है:-

i) (a) सार्वजनिक व्यय नीति।
ii) (b) कर नीति।
iii) (c) सार्वजनिक ऋण नीति।

(a) सार्वजनिक व्यय नीति → प्रायः मन्दी के

समय प्रभाव पूर्ण मांग कम हो जाती है, क्योंकि अर्थव्यवस्था में कुल उपभोग व्यय तथा विनियोग व्यय घट जाते है।

30/09/2024
(b) कर नीति → सरकार करों की मात्रा में समायोजन करके भी तेजी एवं मंदी पर नियन्त्रण कर सकती है। स्फीति के समय सरकार द्वारा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर बढ़ा दिये जाते है।

(c) सार्वजनिक ऋण नीति → सार्वजनिक ऋण नीति भी करारोपण का कार्य करती है। स्फीति के प्रशुल्क नीति के उपर्युक्त तीनों हथियारों का एक साथ प्रयोग किया जाता है जिससे ये अधिक प्रभावशाली हो जाते है।

* → (iii) भौतिक नियन्त्रण → भौतिक नियन्त्रण में मूल्य नियन्त्रण, मूल्य स्थिरता तथा राशनिंग आदि को सम्मिलित किया जाता है। स्फीति काल में सरकार मूल्य वृद्धि रोकने के लिए अनिवार्य वस्तुओं पर वैधानिक मूल्य नियन्त्रण लागू करके वृद्धि को स्थिर कर सकती है। वस्तुओं के अभाव के समय उनकी राशन द्वारा निश्चित मूल्यों पर बिक्री की व्यवस्था की जा सकती है।

→ (iv) <u>अन्य उपाय</u> → उपर्युक्त महत्वपूर्ण उपायों के अतिरिक्त कुछ कम महत्वपूर्ण उपाय भी काम में लिये जा सकते हैं, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं :-

~~(i)~~ (a) बेरोजगारी बीमा।
~~(ii)~~ (b) सरकारी एवं सहकारी क्षेत्र का विकास।
(c) अन्तर्राष्ट्रीय उपाय।

(a) <u>बेरोजगारी बीमा</u> → सरकार बेरोजगारी बीमा योजना लागू करके मन्दी तथा बेरोजगारी के समय लोगों की सहायता कर सकती है।

(b) <u>सरकारी एवं सहकारी क्षेत्र का विकास</u> → सरकारी एवं सहकारी क्षेत्र लाभ के उद्देश्य से संचालित नहीं किये जाते हैं, अतः इन उपक्रमों के अधिक विकास से तेजी - मन्दी के खतरे कम हो जाते हैं।

(c) <u>अन्तर्राष्ट्रीय उपाय</u> → व्यापार चक्रों पर नियन्त्रण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थिरता के प्रयत्न किये जाने चाहिए।

Topic : राष्ट्रीय आय (National Income)

Ques :- राष्ट्रीय आय को समझाते हुए राष्ट्रीय आय की गणना की विभिन्न विधियों को समझाइए ?

Ans राष्ट्रीय आय का अर्थ एवं परिभाषा → राष्ट्रीय आय की प्रारम्भिक परिभाषाएँ ।

मार्शल की परिभाषा → "किसी देश का श्रम एवं पूँजी देश के प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सभी प्रकार की सेवाओं का निश्चित विशुद्ध योग उत्पन्न करते हैं। यह किसी देश की वास्तविक विशुद्ध वार्षिक आय या राष्ट्रीय लाभांश है।

⟶ मार्शल ने राष्ट्रीय आय की उपर्युक्त परिभाषा देने के साथ अपनी पुस्तक में राष्ट्रीय आय की गणना के सम्बन्ध में ध्यान रखने योग्य बातों को बताया है। (i) सामान्यतः राष्ट्रीय आय की गणना वार्षिक आधार पर की जाती है,
(ii) कुल उत्पादन में से मशीनों की टूट - फूट तथा ह्रास घटा दिया

(iii) विदेशी विनियोग से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय राष्ट्रीय उत्पादन में जोड़ देनी चाहिए।

*→ प्रो० फिशर के अनुसार, "राष्ट्रीय लाभांश अथवा राष्ट्रीय आय में केवल उन सेवाओं को, जो अन्तिम रूप में उपभोक्ताओं को उपभोग के लिए प्राप्त होती है। चाहें वो वे भौतिक वातावरण से प्राप्त हुई हों या मानवीय वातावरण से हो।"

01/10/2024

राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ →

1. उत्पादन संगणना विधि।
2. आय संगणना विधि।
3. व्यय संगणन विधि।
4. सामाजिक लेखांकन विधि।

1. उत्पादन संगणना विधि → इस विधि के अनुसार एक देश में एक वर्ष की अवधि में उत्पन्न समस्त वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए मूल्य का योग कर लिया जाता है तथा इसमें से स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य ह्रास एवं अप्रचलन की हानि को घटा दिया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन को साधन लागत पर परिवर्तित कर लिया जाता है। शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन को बाजार मूल्य से साधन लागत पर परिवर्तित करने के लिए निम्न समायोजन किये जाते हैं:

(a) अप्रत्यक्ष व्यापारिक करों (बिक्री कर, उत्पादन कर निर्यात कर आदि) को घटाया जाता है।

(b) सरकारी सहायता अथवा उत्पादन को जोड़ा जाता है।

(c) सार्वजनिक उद्योगों के आधिक्य को घटाया जाता है।

(d) व्यापारिक हस्तान्तरण भुगतानों को घटाया जाता है।

(e) सांख्यिकी समायोजन किया जाता है, यह ऋणात्मक अथवा धनात्मक होता है।

सूत्र → राष्ट्रीय आय → शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन - अप्रत्यक्ष व्यापारिक कर + सरकारी उत्पादन - सरकारी उद्यमों का आधिक्य - व्यावसायिक हस्तान्तरण भुगतान - डूबत ऋण - सांख्यिकी त्रुटि।

सैद्धान्तिक दृष्टि से यह पद्धति बड़ी सरल है, परन्तु इस विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना में निम्न कठिनाइयाँ आती है-

(i) दोहरी गणना की सम्भावना बनी रहती है, क्योंकि उत्पादन की गणना मूल उत्पत्ति स्थान तथा बाद के स्थानों पर की जा सकती है।

(ii) उत्पादन अमौद्रिक क्षेत्र में पैदा होने पर उसका सही मूल्यांकन करना कठिन होता है।

04/10/2024.

2. आय संगणना विधि → इस विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना करते समय देश के सभी नागरिकों की आय का योग कर लिया जाता है। इस विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना करते समय निम्न सावधानियाँ प्रयोग में लानी चाहिए :

(a) हस्तान्तरण भुगतानों को आय की गणना में शामिल नहीं करना चाहिए, जिनका ~~कोई मौद्रिक भुगतान~~ क्योंकि इनसे किसी प्रकार की आय का निर्माण नहीं होता है

(b) उन वस्तुओं तथा सेवाओं को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं करना चाहिए, जिनका कोई मौद्रिक भुगतान नहीं किया जाता है, उदाहरण → गृहणियों की सेवाएँ।

(c) यदि एक उत्पादक के स्वयं के साधनों को उत्पादन कार्य में प्रयोग किया गया है, तो उनके पुरस्कार को राष्ट्रीय आय में जोड़ा जाता है।

(d) अवितरित लाभ अथवा सुरक्षित कोष में डाली गयी राशि भी राष्ट्रीय आय में शामिल की जाती है।

सूत्र → राष्ट्रीय आय → मजदूरी, वेतन तथा अन्य भुगतान + शुद्ध ब्याज + लगान + कर पूर्व निगम लाभ + अनिगमित उद्योगों की आय।

यह विधि उत्पादन संगणना विधि से सरल होती है। प्रायः इसमें दोहरी गणना का भय नहीं रहता है, परन्तु इस विधि की भी निम्न कठिनाइयाँ हैं :

(i) लोग करों के डर के मारे आय कम दिखाते हैं।
(ii) लोग अशिक्षा तथा अन्य कमियों के कारण आय सम्बन्धी सही सूचना नहीं रखते हैं।
(iii) वस्तुओं व सेवाओं के रूप में प्राप्त आय का मूल्यांकन कठिन होता है।
(iv) अवितरित लाभ के प्रायः राष्ट्रीय आय की गणना से छूट जाने का भय रहता है।

3. <u>व्यय संगणना विधि</u> → किसी भी देश की राष्ट्रीय आय को व्यय विधि से भी ज्ञात किया जा सकता है। राष्ट्रीय आय एक देश के समस्त व्यय के योग के बराबर होती है। एक देश में लोगों द्वारा अपनी आय उपभोग वस्तुओं पर व्यय कर दी जाती है अथवा बचत कर ली जाती है, अतः राष्ट्रीय आय देश के कुल उपभोग व्यय तथा बचतों का योग होती है।

<u>सूत्र</u> → <u>राष्ट्रीय आय</u> → कुल व्यय + कुल बचत

व्यय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना में निम्न कठिनाइयाँ आती हैं:

(i) सम्पूर्ण जनसंख्या की आय की तुलना में व्यय राशि ज्ञात करना अधिक कठिन होता है, क्योंकि व्यय छोटी-2 राशि में बहुत अधिक मदों पर किया जाता है।

(ii) कुल बचत अथवा कुल विनियोग की जानकारी करना भी कठिन होता है।

(iii) अविकासित देशों में व्यय व बचत के विश्वसनीय आँकड़े उपलब्ध नहीं होते है।

05/10/2024

4. सामाजिक लेखांकन विधि → इस विधि में राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए पूरी जनसंख्या को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है। इस विधि में समान आय वाले व्यक्तियों को एक वर्ग में रखा जाता है। प्रत्येक वर्ग के कुछ लोगों की आय ज्ञात करके औसत निकाल लिया जाता है, तथा औसत से वर्ग के व्यक्तियों की संख्या की गणना करके पूरे वर्ग की आय की गणना की जाती है। इसी प्रकार अन्य वर्गों के आय की गणना करके सबको जोड़कर राष्ट्रीय आय की गणना कर लेते हैं।

P. T. O.
(Page Turn Over)

राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण में सम्बन्ध

राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध की व्याख्या करने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय आय के अर्थ के साथ आर्थिक कल्याण का अर्थ भी जान लिया जाये।

प्रो. पीगू के अनुसार, "आर्थिक कल्याण कुल कल्याण का वह भाग है, जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी मापदण्ड से सम्बन्धित किया जा सकता है।"

राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण में घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण राष्ट्रीय आय में होने वाले परिवर्तन आर्थिक कल्याण को भी प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय आय के परिवर्तन के आर्थिक कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन दो शीर्षकों में कर सकते हैं:-

I. राष्ट्रीय आय के आकार या परिमाण में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव।

II. राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव।

I. राष्ट्रीय आय के आकार में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव

राष्ट्रीय आय के आकार में परिवर्तन दो प्रकार के हो सकते हैं - (i) राष्ट्रीय आय में वृद्धि,

अथवा (ii) राष्ट्रीय आय में कमी। सामान्यतया राष्ट्रीय आय में कमी होने से आर्थिक कल्याण में कमी होती है तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक कल्याण में प्रत्यक्ष सम्बन्ध देखने को मिलता है, परन्तु यह सदैव सही नहीं होता है। इसके कुछ प्रमुख अपवाद निम्नलिखित हैं:

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं निर्धनों की आय में कमी।
2. लोगों की रुचियों में परिवर्तन।
3. राष्ट्रीय आय में वृद्धि का ढंग।
4. जनसंख्या वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय वृद्धि की दर से अधिक।
5. गैर- उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि। →

07/10/2024

1. <u>राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं निर्धनों की आय में कमी</u> → यदि राष्ट्रीय आय की वृद्धि के साथ- साथ निर्धनों को मिलने वाली आय में कमी हो जाती है, तो आर्थिक कल्याण में वृद्धि के स्थान पर कमी हो सकती है।

2. <u>लोगों की रुचियों में परिवर्तन</u> → यदि राष्ट्रीय आय की वृद्धि के साथ- साथ लोगों के उपभोग अथवा रुचियों में परिवर्तन

बुराइयों की तरफ होते हैं, तो आर्थिक कल्याण में कमी होती है।

3. **राष्ट्रीय आय में वृद्धि का ढंग** → राष्ट्रीय आय में वृद्धि यदि लोगों के आराम को कम करके अधिक घंटे काम करके, खराब दशाओं के अन्तर्गत कार्य करके अथवा औरतों व बच्चों के शोषण से होती है, तो इससे कल्याण में कमी हो जायेगी।

4. **जनसंख्या वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय वृद्धि की दर से अधिक** → यदि राष्ट्रीय आय में वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से कम होती है, तो प्रति व्यक्ति आय कम होने से आर्थिक कल्याण में भी कमी हो जायेगी, अर्थात राष्ट्रीय आय तो बढ़ती है, परन्तु जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में पहले की तुलना में कम मुद्रा प्राप्त होती है।

5. **गैर-उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि** → यदि समाज में गैर-उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होती है, तथा उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में कमी होती है, तो राष्ट्रीय आय बढ़ने पर भी आर्थिक कल्याण बढ़ने के स्थान पर घट जाता है।

P. T. O.

II. राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव → राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का तात्पर्य यह होता है, कि राष्ट्रीय आय के एक भाग का हस्तान्तरण समाज के एक वर्ग से दूसरे वर्ग को हो सकता है। ये परिवर्तन दो प्रकार से हो सकते हैं :-

1. धनी वर्ग से निर्धन वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण।
2. निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण।

1. धनी वर्ग से निर्धन वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण → सामान्यतया धनी वर्ग से आय का हस्तान्तरण निर्धन वर्ग को होने पर वितरण की असमानताएँ कम होती हैं, तथा आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है। इसके पक्ष में निम्न तर्क दिये जा सकते हैं:-

(i) उपभोग पर अधिक व्यय।
(ii) धनिकों के द्वारा कम त्याग व निर्धनों को अधिक उपयोगिता।
(iii) तुलनात्मक स्थिति का समान रहना।

2. निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण →

जब आय का हस्तान्तरण निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ होता है तब समाज में आर्थिक विषमताएँ बढ़ती है तथा निर्धन वर्ग अपनी अत्यावश्यक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि से भी वंचित रहता है, अतः समाज के आर्थिक कल्याण में कमी होती है।

Topic: वितरण का सीमान्त उत्पादन का सिद्धान्त

PAGE NO. 77

08/10/2024

Ques4. वितरण के सीमान्त उत्पादकता के सिद्धान्त को समझाइए ?

Ans वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त → सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त वितरण का एक सामान्य सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का प्रयोग उत्पादन के सभी साधनों के पुरस्कार निर्धारण के लिए किया जाता है। इस सिद्धान्त के सन्दर्भ में वान थूनन की रचना तथा लोंग फील्ड की पुस्तक तथा हेनरी जार्ज की पुस्तक में मिलता है।

सिद्धान्त का सामान्य कथन एवं व्याख्या → इस सिद्धान्त के अनुसार, उत्पादन के एक साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है तथा इसका निर्धारण सीमान्त उत्पादकता द्वारा होता है।

स्टोनियर एवं हेग के शब्दों में, "उत्पादन के साधनों की कीमत निर्धारण की कुंजी सीमान्त उत्पादकता के पास है तथा उत्पादन के किसी भी साधन का पुरस्कार अन्ततः उसकी सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर करता है।"

Referance

8/10/2024

09/10/2024.

* → उत्पादन साधनों की माँग अन्य उपभोग वस्तुओं की तरह से प्रत्यक्ष माँग नहीं होती है बल्कि अप्रत्यक्ष अथवा व्युत्पन्न माँग होती है। उत्पादन साधनों की माँग उन वस्तुओं की माँग पर निर्भर करती है, जिनका उत्पादन उनकी सहायता से किया जा सकता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार सन्तुलन की स्थिति में निम्न तीन शर्तें पूरी होती हैं

(i) उत्पादन के किसी भी साधन की सीमान्त उत्पादकता सभी व्यवसायों अथवा उद्योगों में एक समान होती है।

(ii) किसी एक व्यवसाय में उत्पादन के प्रत्येक साधन की सीमान्त उत्पादकता अन्य साधनों की सीमान्त उत्पादकता के बराबर होती है।

(iii) उत्पादन के किसी साधन का पुरस्कार उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर होता है तथा दीर्घकाल में यह उसकी औसत उत्पादकता के भी बराबर होता है।

सीमान्त उत्पादकता तथा सम्बन्धित धारणाएँ →

P. T. O.

सीमान्त उत्पादकता → किसी उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के अन्य सभी साधनों की मात्रा को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में जब एक इकाई से वृद्धि की जाती है तो उससे वस्तु के कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उस वृद्धि को परिवर्तनशील साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं।

→ सीमान्त उत्पादकता को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है :-

1. सीमान्त भौतिक उत्पादकता
2. सीमान्त आगम उत्पादकता
3. सीमान्त भौतिक उत्पादकता का मुद्रा में मूल्य।

1. सीमान्त भौतिक उत्पादकता → जब उत्पादन के अन्य सभी साधनों को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में एक इकाई की वृद्धि की जाती है, तो उससे वस्तु के कुल भौतिक उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उसे परिवर्तनशील साधन की सीमान्त भौतिक उत्पादकता कहते हैं।

किसी भी साधन की सीमान्त भौतिक उत्पादकता उत्पत्ति के परिवर्तनशील अनुपातों के नियम के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

10/10/2024

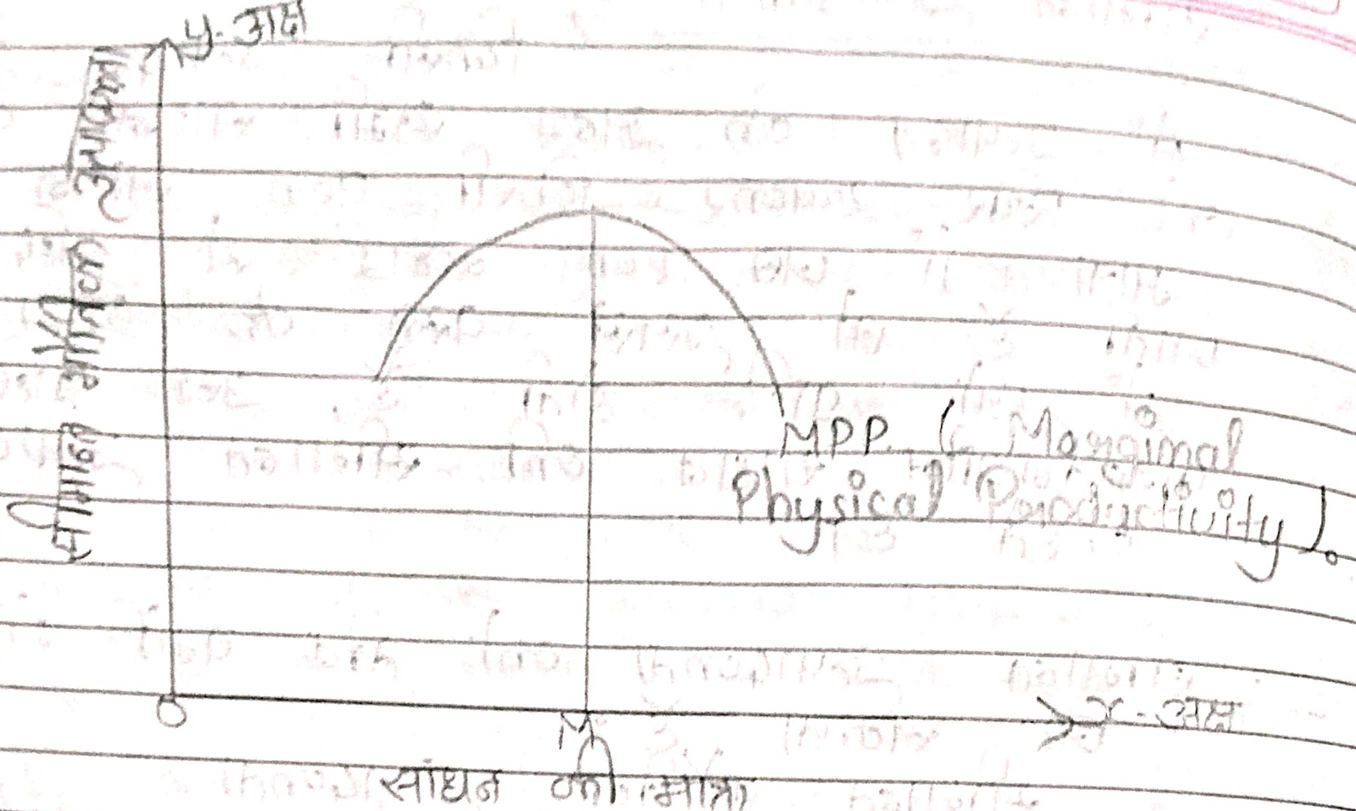

चित्र :- 10

स्पष्टीकरण →

उपरोक्त रेखाचित्र में x-अक्ष पर साधन की मात्रा तथा y-अक्ष पर सीमान्त भौतिक उत्पादकता को दर्शाया गया है। इसमें एक उत्पादक 10 इकाई भूमि, 100 इकाई पूंजी, एक इकाई साहस तथा 200 इकाई श्रम लगातार किसी वस्तु की 200 इकाईयाँ उत्पन्न करता है। यदि वह अन्य सभी साधनों को स्थिर रखकर श्रम की एक और इकाई काम पर लगाकर वस्तु की 210 इकाईयाँ पैदा करता है, तो यहाँ श्रम की सीमान्त भौतिक उत्पादकता वस्तु की 210 - 200 = 10 इकाईयाँ होगी।

2. सीमान्त आगम उत्पादकता → एक उत्पादक द्वारा उत्पादन के अन्य साधनों की मात्रा स्थिर रखकर किसी परिवर्तनशील साधन की एक और इकाई को काम पर लगाकर उत्पादन करने एवं उत्पादन को बेचने से उसकी कुल आगम में जो वृद्धि होती है, उसे परिवर्तनशील साधन की सीमान्त आगम उत्पादकता कहते हैं।

सीमान्त भौतिक उत्पादकता को सीमान्त आगम से गुणा करने पर सीमान्त आगम उत्पादकता प्राप्त हो जाती है।

$$MRP = MPP \times MR$$

MRP = सीमान्त आगम उत्पादकता (Marginal Revenue Productivity).

MPP = सीमान्त भौतिक उत्पादकता (Marginal Physical Productivity).

MR = सीमान्त आगम (Marginal Revenue).

3. सीमान्त भौतिक उत्पादकता का मुद्रा में मूल्य → सीमान्त भौतिक उत्पादकता को वस्तु के मूल्य से गुणा करने पर मुद्रा में सीमान्त भौतिक उत्पादकता का मूल्य ज्ञात होता है।

VMP = MPP x Price (AR)

VMP - मुद्रा में सीमान्त भौतिक उत्पादक उत्पादकता का मूल्य
(Value of Marginal Physical Productivity).

MPP : सीमान्त भौतिक उत्पादकता
(Marginal Physical Productivity).

14/10/2024

तालिका 1.1 : सीमान्त भौतिक उत्पादकता, सीमान्त आगम उत्पादकता तथा मुद्रा में सीमान्त उत्पादकता का मूल्य

परिवर्तनशील साधन की इकाईयाँ	TPP (किलो में)	MPP (किलो में)	प्रति किलो मूल्य (₹)	सीमान्त उत्पादन का मूल्य V.M.P (₹)	कुल आगम T.R. (₹)	M.R.P. (₹)
1	2	3	4	5	6	7
1	5	5	2	10	10	10
2	12	7	2	14	24	14
3	24	12	2	24	48	24
4	34	10	2	20	68	20
5	42	8	2	16	84	16
6	48	6	2	12	96	12
7	52	4	2	8	104	8
8	54	2	2	4	108	4

4. औसत कुल आगम उत्पादकता तथा औसत विशुद्ध आगम उत्पादकता → किसी साधन की कुल आगम उत्पादकता में उस साधन की इकाईयों का भाग देने पर उस साधन की औसत आगम उत्पादकता प्राप्त होती है।

$$AGRP = \frac{TRP}{\text{No. of units of the factor}}$$

AGRP = औसत कुल आगम उत्पादकता (Average Gross Revenue Productivity, i.e. AGRP or Average Net Revenue Productivity, i.e. ANRP).

TRP = कुल आगम उत्पादकता (Total Revenue Productivity).

5. सीमान्त साधन लागत तथा अथवा सीमान्त पुरस्कार तथा औसत साधन लागत अथवा औसत पुरस्कार → उत्पादन के किसी साधन को जो पुरस्कार प्राप्त होता है, वह साधन की दृष्टि से आय है तथा फर्म की दृष्टि से लागत है।

M.F.C. → सीमान्त साधन लागत (Marginal factor Cost).

M.R. → Marginal Remuneration.
(सीमांत पुरस्कार)

A.f.C. → औसत साधन लागत
(Average factor Cost).

A.R. → औसत पुरस्कार
(Average Remuneration).

Topic: वितरण का आधुनिक सिद्धान्त

17/10/2024

Ques 5. सिद्धान्त की मान्यताएँ बताते हुए वितरण के आधुनिक सिद्धांत का वर्णन करते हुए साधन की माँग व पूर्ति को समझाइए ?

Ans **सिद्धान्त की मान्यताएँ** → सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की रचना कुछ मान्यताओं के आधार पर की गयी है। यह सिद्धान्त सभी कार्यशील होता है, जब निम्न मान्यताएँ अथवा शर्तें पूरी हों। :-

(i) उत्पादन के साधन विशेष की सभी इकाइयाँ समरूप होती है।
(ii) उत्पत्ति के साधनों के अनुपात में परिवर्तन सम्भव।
(iii) उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता।
(iv) साधन बाजार तथा वस्तु बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता।
(v) पूर्ण रोजगार।
(vi) अधिकतम लाभ का उद्देश्य।
(vii) सीमान्त उत्पादकता मापनीय।
(viii) उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता।
(ix) दीर्घकालीन प्रवृत्ति।
(x) कुल आय का बंट जाना।

(i) **पूर्ण रोजगार** → इस सिद्धान्त में यह भी मान लिया गया है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है तथा उत्पादन का कोई भी साधन बेरोजगारित नहीं होता है।

(ii) अधिकतम लाभ का उद्देश्य → फर्म अथवा उत्पादक का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है।

(iii) सीमान्त उत्पादकता मापनीय → उत्पादक किसी भी साधन की सीमान्त उत्पादकता को माप सकता है अर्थात उत्पादकता मापनीय होती है।

(iv) उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता → उत्पादक क्रिया में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।

8/10/2024.

(v) दीर्घकालीन प्रवृत्ति → यह सिद्धान्त केवल दीर्घकालीन प्रवृत्ति का सूचक है अर्थात अल्पकाल में किसी साधन का पुरस्कार उसकी सीमान्त उत्पादकता से कम अथवा अधिक हो सकता है, परन्तु दीर्घकाल में वह सदैव सीमान्त उत्पादकता के बराबर होगा।।

(vi) कुल आय का बँट जाना → यदि साधनों को उनकी उत्पादकता के अनुसार पुरस्कार दिया जाये तो कुल आय उनमें बँट जाती है।

वितरण का आधुनिक सिद्धान्त → वितरण के आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार साधन मूल्य निर्धारण वास्तव में वस्तु मूल्य निर्धारण की ही एक विशेष अवस्था है। जिस प्रकार किसी वस्तु की कीमत माँग एवं पूर्तियों की शक्तियों से निर्धारित होती है। ठीक उसी प्रकार किसी साधन की कीमत भी उसकी माँग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

वितरण के आधुनिक सिद्धान्त की मान्यताएँ → वितरण का आधुनिक सिद्धान्त निम्नलिखित प्रमुख मान्यताओं पर आधारित है:-

(i) वस्तु बाजार तथा साधन बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता पायी जाती है।

(ii) एक साधन की सभी इकाइयाँ समरूप होती है और इसलिए एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न होती है।

(iii) साधन पूर्णतः विभाज्य होता है।

(iv) उत्पादन प्रक्रिया में परिवर्तनशील अनुपातों का नियम कार्यशील होता है।

(v) उत्पादन साधन पूर्णतया गतिशील होते है।

→ अब हम उपर्युक्त मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए वितरण के आधुनिक सिद्धान्त का विश्लेषण कर सकते हैं।

21/10/2024

* साधन की माँग (Demand of a factor of Production): उत्पादन के किसी साधन की माँग उपभोग वस्तुओं की तरह से प्रत्यक्ष माँग नहीं होती है, बल्कि वह व्युत्पन्न माँग होती है। यह माँग उन वस्तुओं की माँग से निकलती है, जिनके निर्माण में वह साधन सहायक होता है।

उदाहरण के लिए, श्रम की माँग श्रम के लिए नहीं होती है बल्कि उन वस्तुओं के लिए होती है, जिनका उत्पादन श्रम की सहायता से किया जा सकता है। इसी तरह भूमि की माँग भूमि के लिए नहीं होती वरन भूमि की माँग इसलिए होती है, कि इसकी सहायता से उत्पादन किया जा सकता है।

अतः वस्तुओं की माँग बढ़ जाने पर उन वस्तुओं के उत्पादन में सहायक होने वाले साधनों की माँग भी बढ़ जाती है। उत्पादन साधनों की माँग निम्न तत्वों से प्रभावित होती है:

(i) साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग होती है, अतः यह उन वस्तुओं की माँग पर निर्भर करती है, जिनका उत्पादन ये साधन करते हैं। अतः वस्तुओं की

माँग अधिक होने पर साधनों की माँग भी अधिक होती है तथा वस्तुओं की माँग कम होने पर साधनों की माँग भी कम होती है।

(ii) कोई भी उत्पादन का साधन अकेला कार्य नहीं करता है। सामान्यतया यह अन्य साधनों के साथ कार्य करता है। इसलिए किसी उत्पादन साधन की माँग उत्पादन प्रक्रिया में आवश्यक अन्य साधनों की मात्रा तथा कीमतों पर निर्भर करती है।

(iii) किसी उत्पादन साधन की माँग उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है। साधन की उत्पादकता में वृद्धि होने पर उसकी माँग तथा उसकी कीमत में वृद्धि होती है।

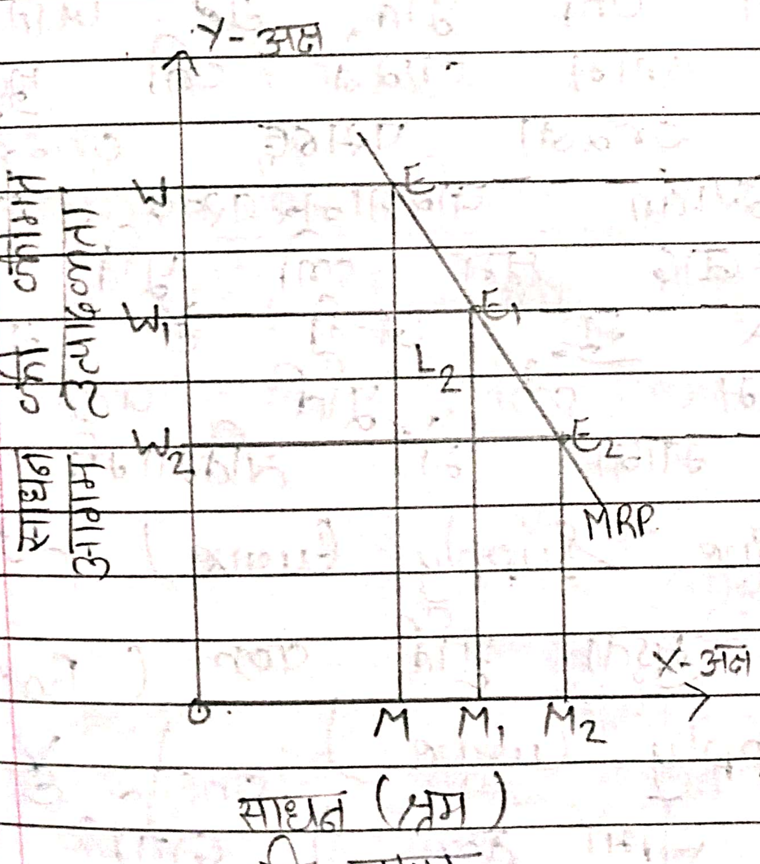

चित्र - 23.1 (a)

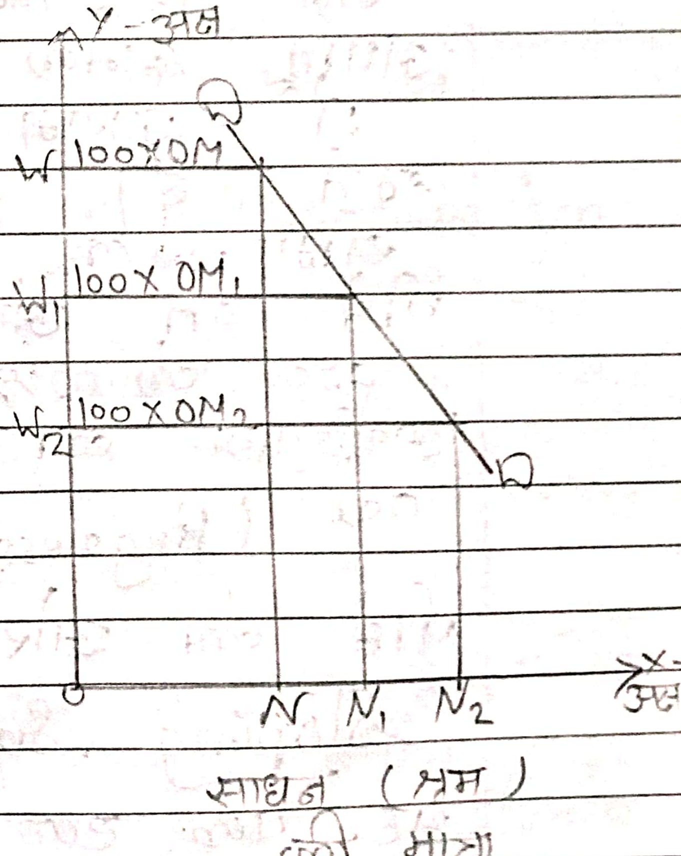

चित्र - 23.1 (b)

22/10/2024

* → साधनों की पूर्ति (Supply of a factor of Production):- साधनों की पूर्ति का विषय बड़ा जटिल है। जिस तरह वस्तुओं का मूल्य बढ़ने पर उनकी पूर्ति बढ़ जाती है, उसी तरह से साधनों की कीमत बढ़ने पर उनकी पूर्ति बढ़ जाये, यह आवश्यक नहीं है। वस्तुओं की पूर्ति उनकी उत्पादन लागत पर निर्भर करती है। परन्तु साधनों की पूर्ति हस्तान्तरण आय पर निर्भर करती है।

उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते है कि अनेक बार श्रमिकों की मजदूरी बढ़ने पर श्रमिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर श्रम की पूर्ति घट जाती है। अर्थात् श्रमिक काम करने की तुलना में आराम करना पसन्द करने लगते है। इसके परिणामस्वरूप एक सीमा के बाद श्रम की पूर्ति रेखा पीछे की ओर मुड़ जाती है। इस तरह के श्रम के पूर्ति वक्र को अर्थशास्त्र की भाषा में प्रतिगामी पूर्ति वक्र (Regressive Supply Curve) अथवा पीछे की ओर मुड़ता पूर्ति वक्र (Backward Sloping Supply Curve) कहते हैं। यह वक्र एक सीमा तक तो दायीं ओर ऊपर को उठता हुआ होता है परन्तु उसके पश्चात पीछे की ओर मुड़ जाता है।

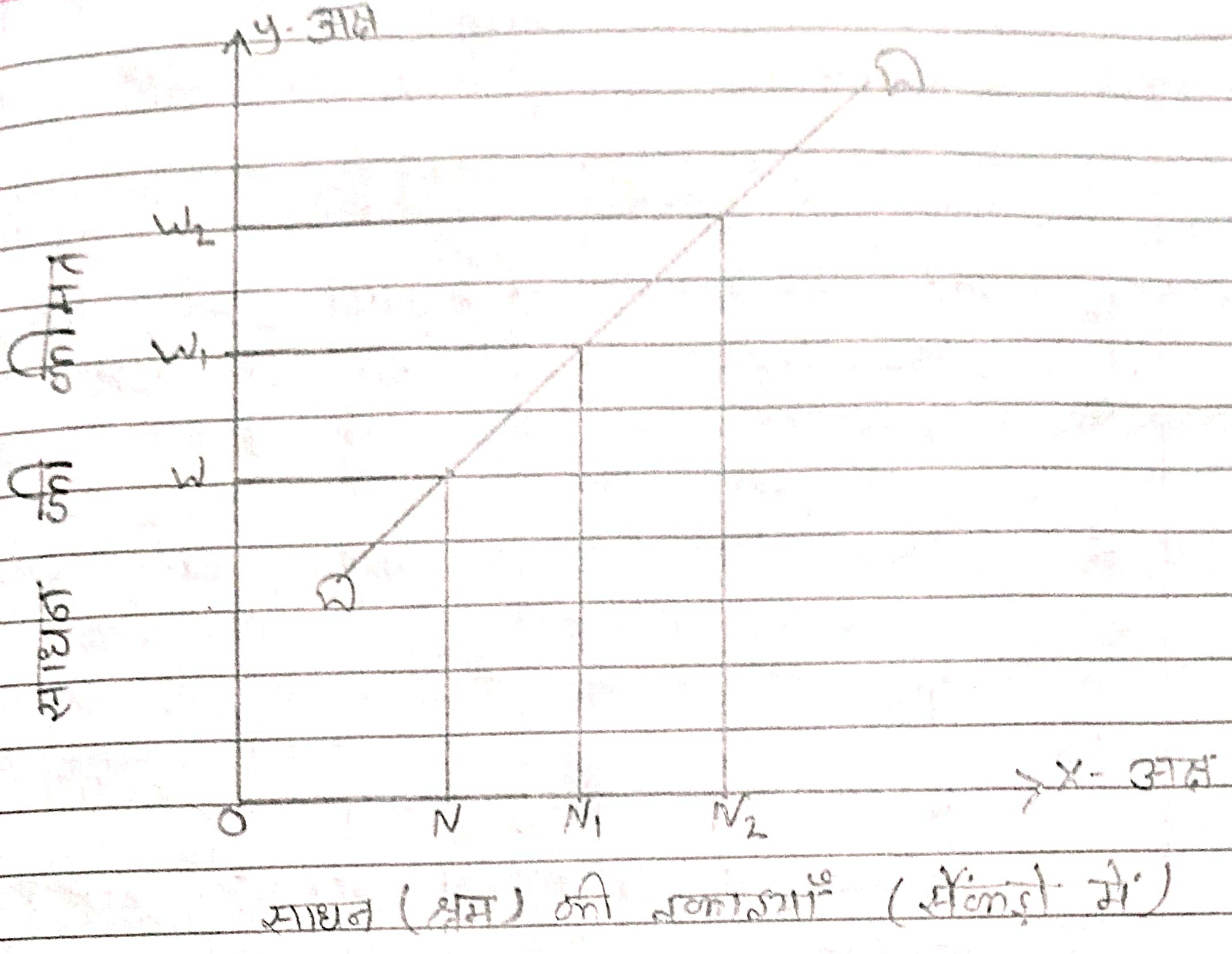

चित्र - 23.2

* → **साम्य कीमत का निर्धारण (Determination of Equilibrium Price) :** साधनों की माँग एवं पूर्ति वक्रों को समझने तथा उन्हें बना लेने के बाद हम उनके द्वारा साधनों की साम्य कीमत का निर्धारण कर सकते हैं।

उत्पादन के साधनों का पुरस्कार अथवा उनकी कीमत उन साधनों की माँग व पूर्ति की शक्तियों के साम्य द्वारा निर्धारित होता है। यह सिद्धान्त वितरण का सन्तोषजनक सिद्धान्त है।

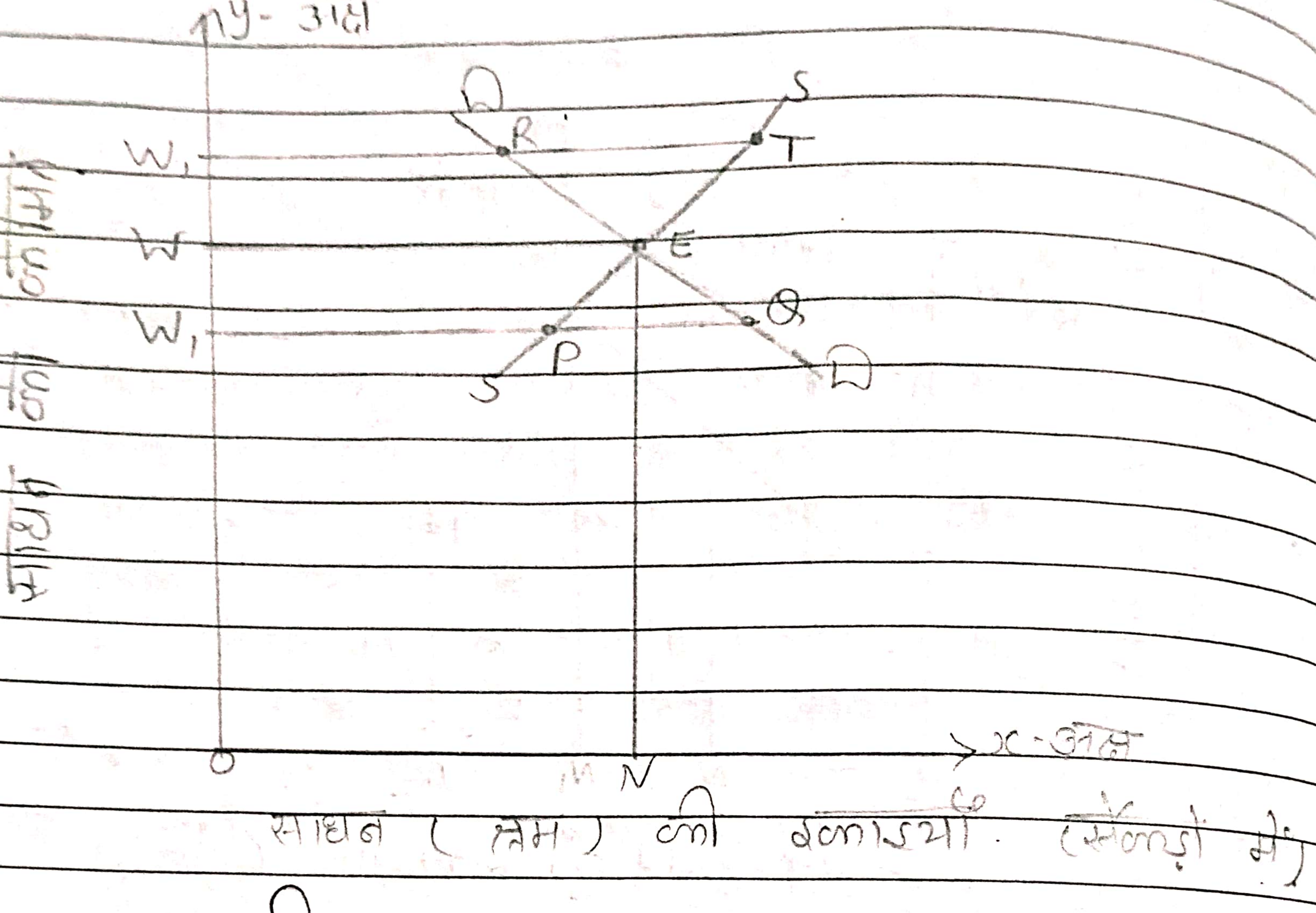

चित्र - 23.3

Rivisiom

Topic: माँग के प्रकार

6/11/2024

Ques माँग कितने प्रकार की होती है बताइए? तथा माँग के निर्धारक तत्वों की विवेचना कीजिए?

Ans माँग के तीन प्रकार होते हैं -

(1) मूल्य माँग
(2) आय माँग
(3) तिरछी माँग

(1) मूल्य माँग → मूल्य माँग का तात्पर्य वस्तु की उन विभिन्न मात्राओं से है जो उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु के विभिन्न मूल्यों पर निश्चित समयावधि में माँगी जाती है।

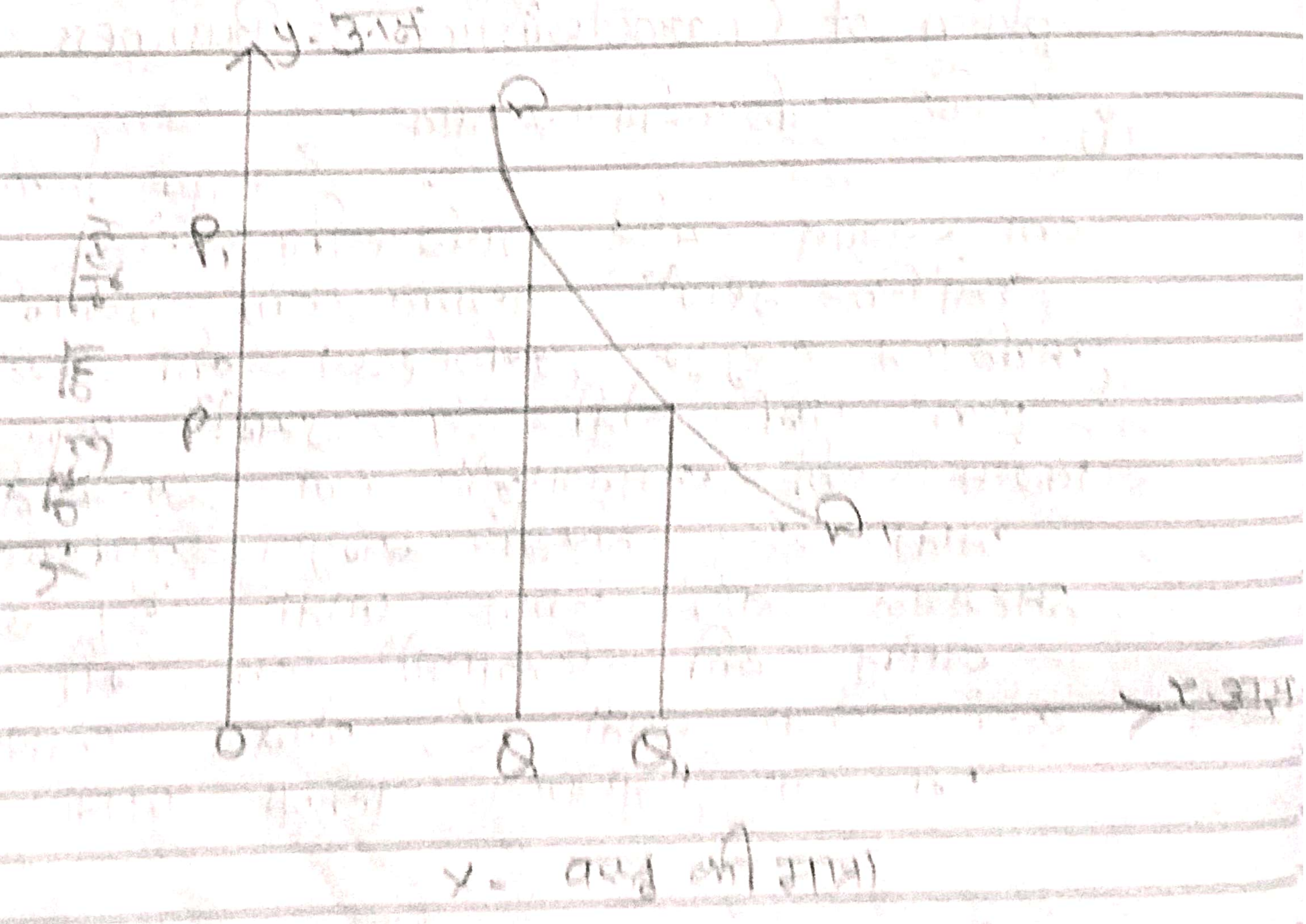

*→ 1 ↓ कीमत में कमी ↑ मांग में वृद्धि

*→ 2 ↑ कीमत में वृद्धि ↓ मांग में कमी

Topic : एकाधिकार

Dec 2024.

एकाधिकार का अर्थ → एकाधिकार शब्द अंग्रेजी के Monopoly का हिन्दी रूपान्तरण है। अर्थात एकाधिकार बाजार की वह स्थिति है, जिसमें विक्रेता एक व्यक्ति या व्यक्ति का समूह होता है।

परिभाषा → चैम्बरलीन के अनुसार एकाधिकारी उसे समझना चाहिए, जिसकी वस्तु की पूर्ति पर नियन्त्रण होता है।

→ **एकाधिकार की विशेषताएँ** →

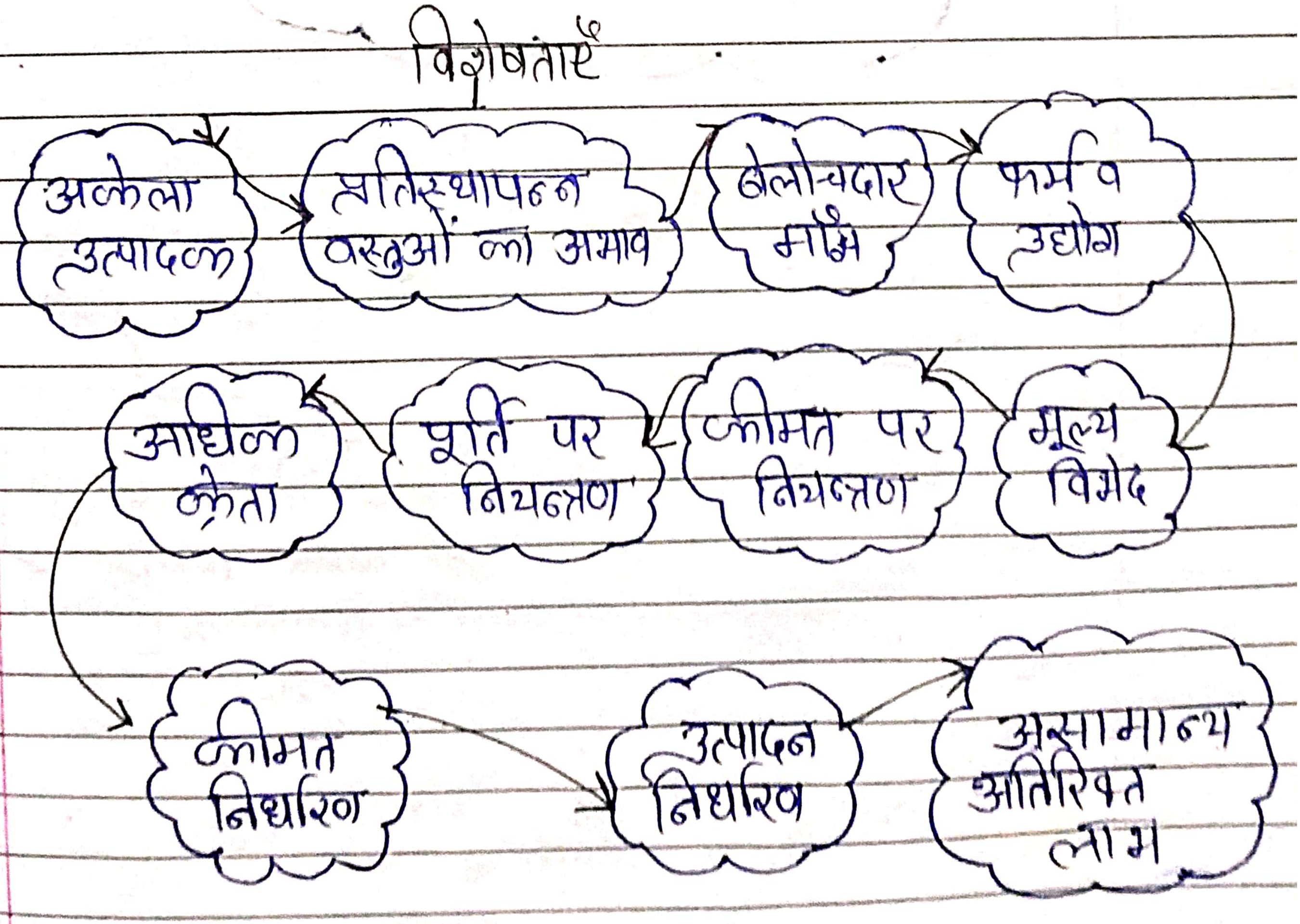

* → मूल्य एवं उत्पादन निर्धारण की विधियाँ

- → कुल आगम तथा कुल लागत विधि
- → सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत विधि (आधुनिक विधि)

Topic : व्यापार चक्र

3 Dec. 2024

व्यापार चक्र का अर्थ → आर्थिक क्रियाओं के उत्पादन, रोजगार, मूल्य आदि के उतार चढ़ाव से सम्बन्धित होता है।

परिभाषा → कीन्स के अनुसार, " व्यापार चक्र का अभिप्राय एक आने वाले अच्छे व्यापार की अवधि, जिसकी विशेषताएँ हैं, बढ़ती हुई कीमतें और बेरोजगारी का न्यून स्तर और बुरे व्यापार की अवधि जिसकी विशेषताएँ हैं, गिरती हुई कीमतें व बेरोजगारी का ऊँचा स्तर।

व्यापार चक्र की अवस्थाएँ :

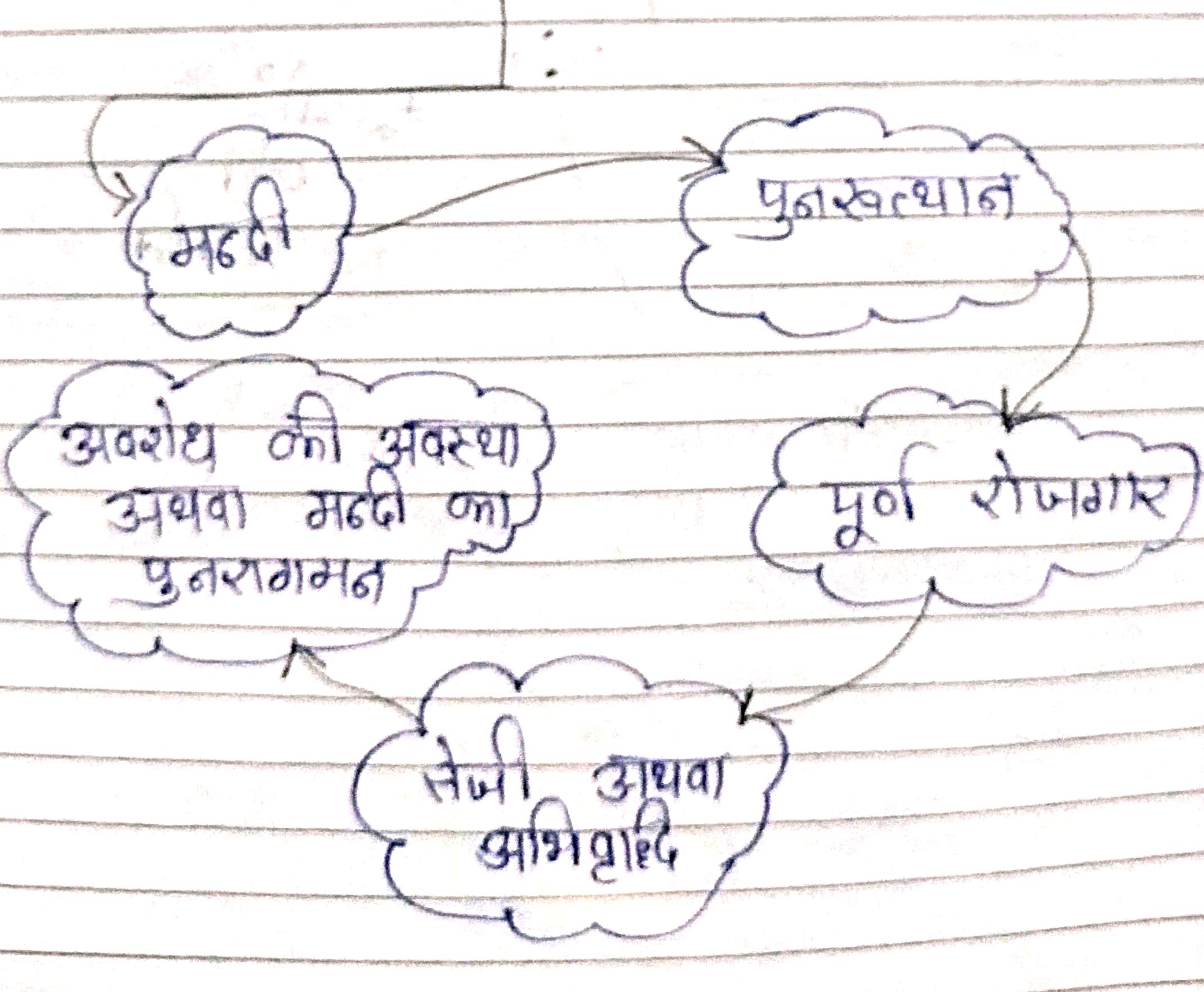

व्यापार चक्र की विशेषताएँ →

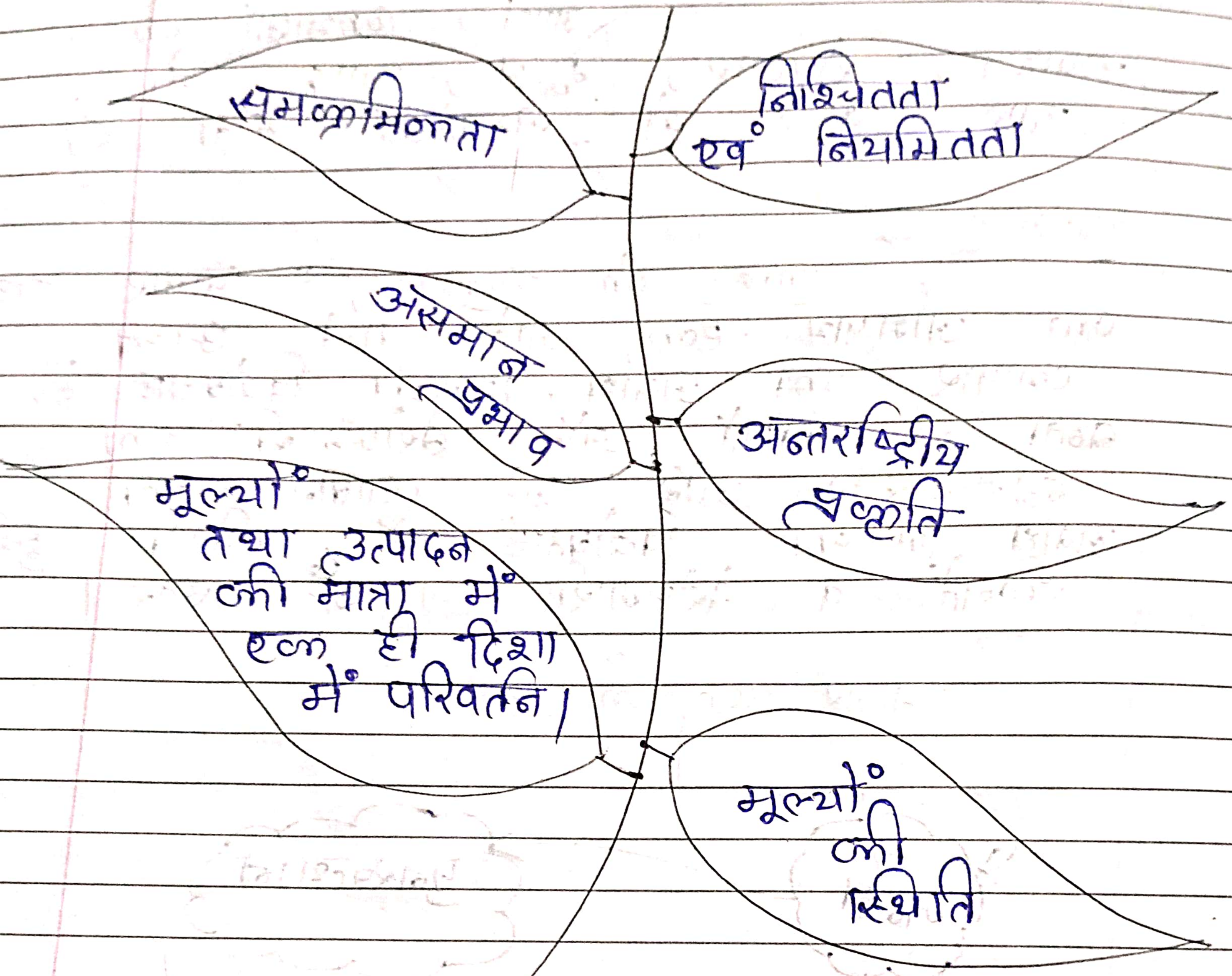

Topic: व्यापार चक्रों का नियन्त्रण

Dec. 2024

व्यापार चक्रों का नियन्त्रण → व्यापार चक्रों से एक देश में आर्थिक क्रियाओं में अत्यधिक उच्चावचन होते रहते हैं।

व्यापार चक्र के प्रकार

- प्रतिबन्धात्मक उपाय
- निवारणात्मक उपाय

I प्रतिबन्धात्मक उपाय

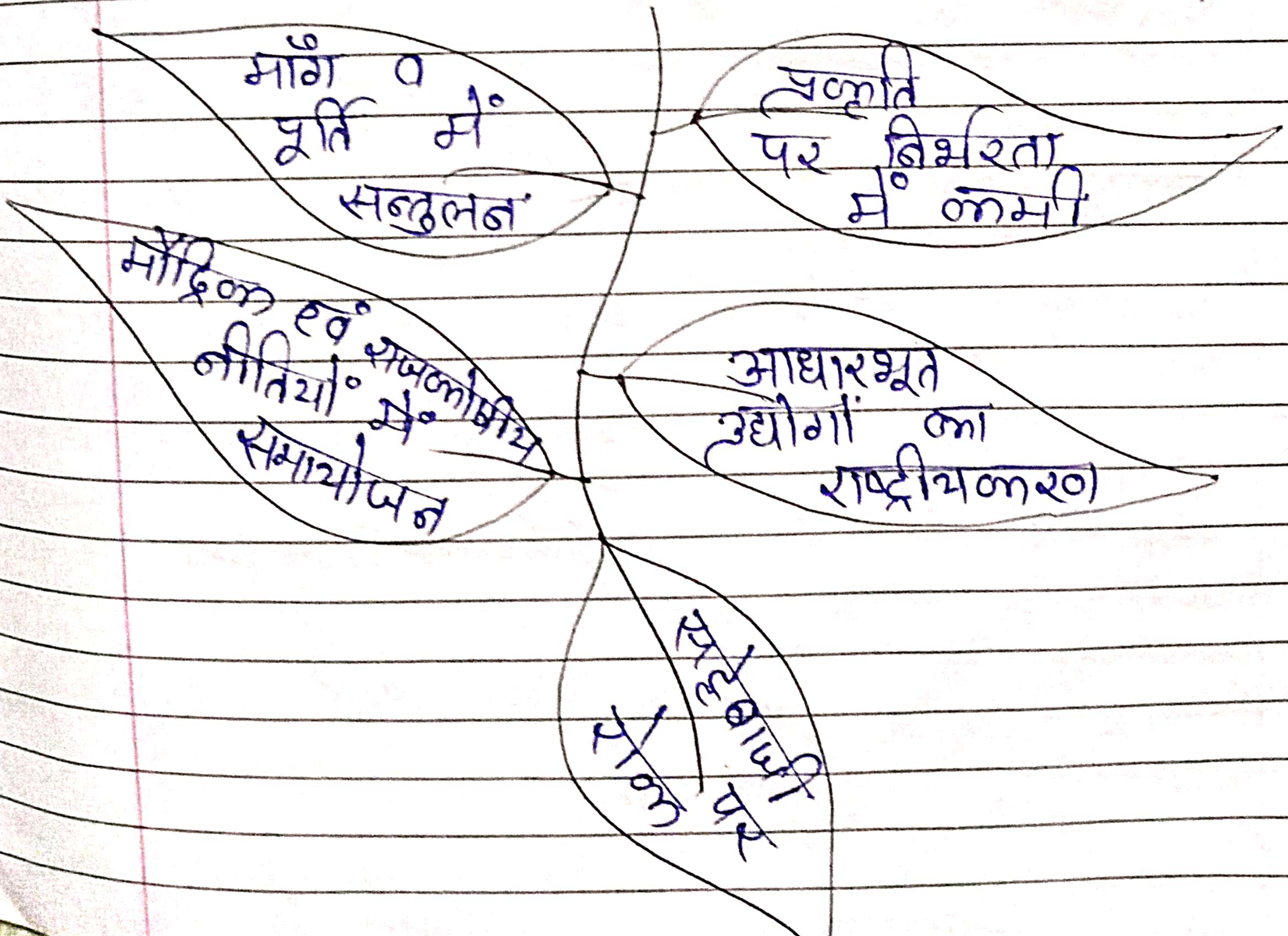

II निवारणात्मक उपाय

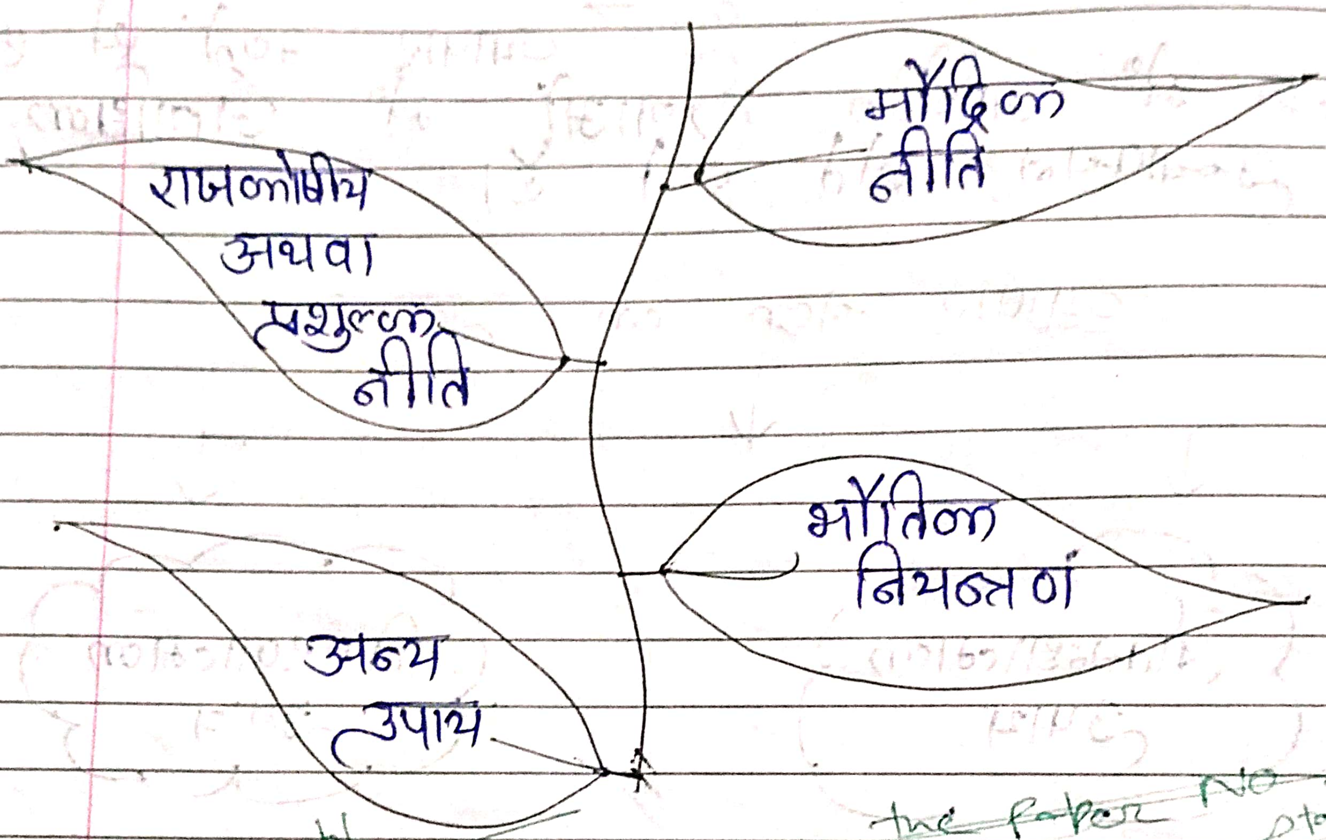

Write down the paper No. & Revision (of Revision started)

Good

11/12/24

Topic : लाभ

06/12/2024

परिभाषा → एच. एफ. नाईट ने इसे अबीमा योग्य जोखिमों अथवा अनिश्चितताएँ उठाने का पुरस्कार माना है।

formula →

कुल लाभ = कुल आगम - स्पष्ट लागतें

आर्थिक लाभ = कुल आगम - स्पष्ट लागतें - अस्पष्ट लागतें.

आर्थिक लाभ = कुल लाभ - अस्पष्ट लागतें।

कुल लाभ के अंग

(1) घिसाई प्रभार।
(2) एकाधिकारी लाभ।
(3) अप्रत्याशित आय।
(4) बीमा प्रभार।
(5) उद्यमी के स्वयं के उत्पादन साधनों का पुरस्कार।
(6) आर्थिक लाभ अथवा शुद्ध लाभ।

Topic : ब्याज

07/12/2024

ब्याज का अर्थ → आधुनिक युग में पूँजी का अत्यधिक महत्व है। बड़े पैमाने की उत्पादन व्यवस्था पूँजी के अभाव में कार्यशील नहीं रह सकती है।

परिभाषा → मार्शल के शब्दों में, " ब्याज किसी बाजार में पूँजी के उपयोग का मूल्य है।"

सकल अथवा कुल ब्याज

- शुद्ध ब्याज
- जोखिम का प्रतिफल
  - व्यक्तिगत जोखिम
  - व्यावसायिक जोखिम
- असुविधाओं का प्रतिफल
- प्रबंध का प्रतिफल

ब्याज निर्धारण के सिद्धान्त

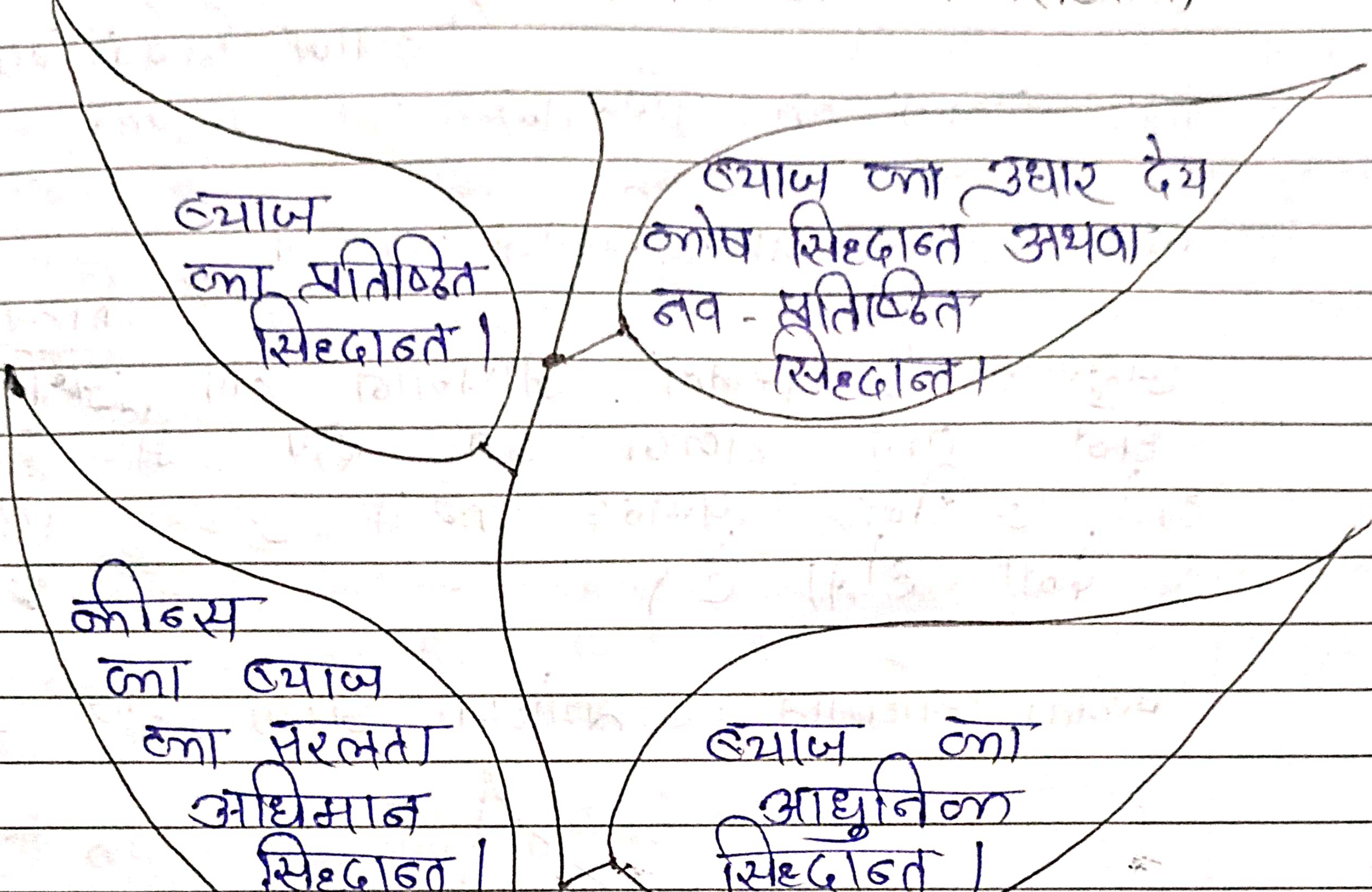

Topic: कीन्स का ब्याज का तरलता अधिमान

09/12/2024.

कीन्स का ब्याज का अर्थ → "ब्याज निश्चित समय के लिए तरलता के परित्याग का पुरस्कार है।"

ब्याज का तरलता अधिमान का अर्थ → कीन्स के अनुसार, "तरलता अधिमान का अर्थ है धन को नकदी के रूप में रखने को अधिक पसन्द करना अथवा तरजीह देना होता है।"

तरलता अधिमान के प्रयोजन अथवा उद्देश्य →

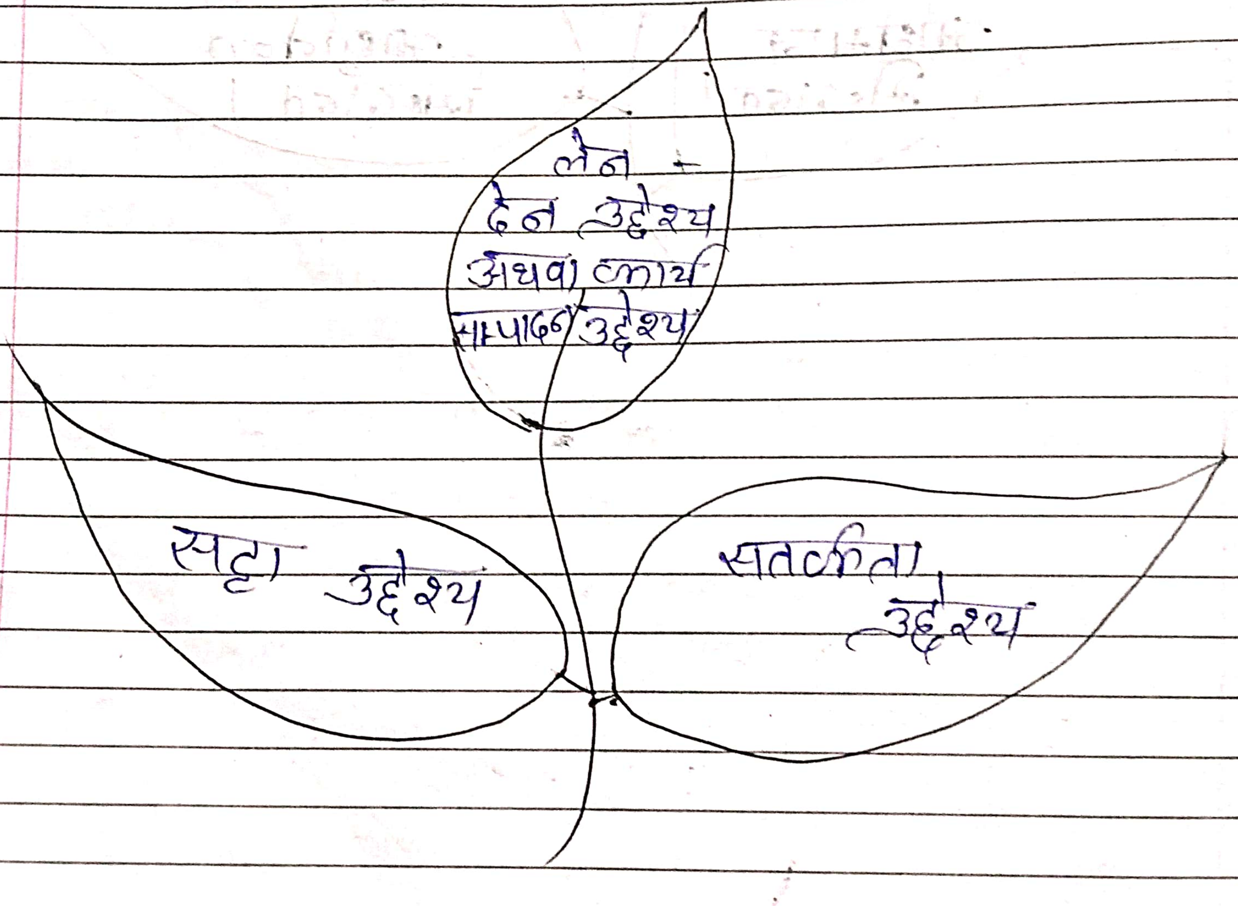

Topic: Perfect Competition

PAGE NO.:
DATE: / /

7/12/2024

पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ →

पूर्ण प्रतियोगिता, बाजार की वह स्थिति होती है, जिसमें बहुत से क्रेता व विक्रेता होते हैं तथा उनमें परस्पर वस्तु के लिए क्रय-विक्रय के लिए इतनी प्रतिस्पर्धा होती है, कि वस्तु का सम्पूर्ण बाजार में एक ही मूल्य प्रचलित रहता है।

परिभाषा →

प्रो. मार्शल के अनुसार, " बाजार जितना अधिक पूर्ण होगा उतना ही उसके सभी भागों में किसी एक वस्तु के लिए एक समय पर एक ही कीमत चुकाने की प्रवृत्ति पायी जायेगी।

Good

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ →

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं:

(1) दीर्घकाल में सामान्य लाभ।
(2) परिवहन लागतों का अभाव।
(3) स्वतन्त्र निर्णय।
(4) बाजार स्थितियों का पूर्ण ज्ञान।
(5) कृत्रिम प्रतिबन्धों का अभाव।
(6) समरूप वस्तु।
(7) फर्मों का स्वतन्त्र प्रवेश एवं बहिर्गमन।
(8) समस्त बाजार में वस्तु की एक कीमत का प्रचलन।
(9) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या।

18/12/2024

एकाधिकार का अर्थ → एकाधिकार बाजार की वह स्थिति होती है जिसमें वस्तु का बाजार में एक ही विक्रेता होता है तथा उसके द्वारा विक्रय की जाने वाली वस्तु के लिए बाजार में निकट प्रतिस्थापन्न वस्तुएँ उपलब्ध नहीं होती है।

परिभाषा → ए. पी. लर्नर के अनुसार, "एकाधिकारी का तात्पर्य उस विक्रेता से है जिसकी वस्तु का माँग वक्र गिरता हुआ होता है।"

एकाधिकार की विशेषताएँ → एकाधिकार की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं :

(1) अकेला उत्पादक अथवा विक्रेता।
(2) प्रभावपूर्ण निकट प्रतिस्थापन्न वस्तुओं का अभाव।
(3) फर्म एवं उद्योग एक-दूसरे के पर्यायवाची।
(4) नयी फर्मों के प्रवेश पर प्रभावपूर्ण रोक।
(5) वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियन्त्रण।
(6) बेलोचदार माँग।
(7) अधिक क्रेता।

18/12/24

QLP- I

Short Questions :

Sec. A :

Ques 1. व्यावसायिक अर्थशास्त्र का अर्थ बताइए ?

Ans अर्थशास्त्र एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है जिसमें मनुष्य की उन्हीं क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जो धन कमाने तथा धन व्यय करने से सम्बन्ध रखती है।

Ques 2. व्यावसायिक अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए ?

Ans जोल डीन के अनुसार, " व्यावसायिक अर्थशास्त्र में का उद्देश्य यह बताना है कि आर्थिक विश्लेषण का उपयोग व्यावसायिक नीतियों के निर्धारण में कैसे हो सकता है।"

Ques 3. ~~क्षेम~~ फर्म का सिद्धान्त समझाइए ?

Ans व्यावसायिक अर्थशास्त्र में उन सभी आर्थिक सिद्धान्तों, धारणाओं एवं मॉडलों का अध्ययन किया जाता है, जिन्हें हम फर्म सिद्धान्त के नाम से जानते हैं।

Ques 4. व्यावसायिक अर्थशास्त्र विज्ञान और कला दोनों कैसे है समझाइए ?

Ans व्यावसायिक अर्थशास्त्र का उपयोग व्यवस्थित ज्ञान के रूप में किया जाता है, अतः यह एक विज्ञान है। इसमें वस्तुस्थिति का अध्ययन किया जाता है। अतः यह वास्तविक विज्ञान है।

Ques 5. माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान का अर्थ बताइए?
Ans माँग विश्लेषण → माँग विश्लेषण में वस्तु की माँगी गई मात्रा तथा उसके मूल्य में सम्बन्ध स्थापित करके उसकी व्याख्या करती है।

माँग पूर्वानुमान → माँग पूर्वानुमान का आशय भविष्य में किसी एक निश्चित अवधि के लिए सम्भावित माँग (बिक्री) की मात्रा एवं मूल्य का अनुमान लगाने से होता है।

Ques 6. पूँजी प्रबन्ध क्या होता है?
Ans व्यावसायिक फर्मों को समय-समय पर पूँजी का विनियोजन करना होता है। ये निर्णय सर्वोच्च स्तर पर ही किये जाते हैं।

Ques 7. केन्द्रीय आर्थिक समस्या का अर्थ बताइए?
Ans ×

Ques 7. समष्टि आर्थिक विश्लेषण का राजस्व का सिद्धान्त समझाइए?
Ans समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सरकार की आय, व्यय तथा ऋण - नीतियों का अध्ययन राजस्व सिद्धान्त शीर्षक के अन्तर्गत किया जाता है।

Ques 8. व्यष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ बताइए ?

Ans. अर्थ → व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण ज्ञान की वह शाखा है, जिसमें विशिष्ट आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है।

OLP - II

08/11/2024 Unit - II

QLP - II

Short Questions :

Sec. A :

Ques 1. उदासीनता वक्र का अर्थ बताइए ?

Ans उदासीनता वक्र वह रेखा होती है जिस पर स्थित प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगो को प्रदर्शित करता है जिनमें उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि मिलती है।

Ques 2. उदासीनता वक्र की परिभाषा दीजिए ?

Ans जे. के. स्मिथ के शब्दों में, "यह वस्तुओं के उन संयोगो को प्रदर्शित करने वाला बिन्दु मार्ग है जिनमें व्यक्ति उदासीन रहता है, इसलिए उसे उदासीनता वक्र कहते हैं

Ques 3. उदासीनता मानचित्र का अर्थ बताइए ?

Ans उपभोक्ता के पसन्दगी कलन का पूर्ण विवरण एक उदासीनता मानचित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। उदासीनता मानचित्र में एक उपभोक्ता के जितने पसन्दगी स्तर होते हैं उतने ही उदासीनता वक्र होते हैं।

Ques 4. सीमान्त प्रतिस्थापन दर क्या होती है ?

Ans प्रतिस्थापन की सीमान्त दर एक विनिमय अनुपात है जो यह बतलाती है कि जब उपभोक्ता के पास दो वस्तुऐं हों तो वह एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु को किस दर पर छोड़ने अथवा लेने के लिए तैयार होता है कि जिससे उसकी कुल सन्तुष्टि में किसी प्रकार का

परिवर्तन न हो।

Ques 5. बजट रेखा का अर्थ बताइए ?
Ans बजट रेखा अथवा मूल्य रेखा दो वस्तुओं के उन सभी संयोगो को व्यक्त करती है जिनको उपभोक्ता दिये हुए मूल्यों तथा दी हुई समान मौद्रिक आय से क्रय कर सकता है।

Ques 6. आय प्रभाव एवं परिवर्तन का अर्थ बताइए ?
Ans वस्तुओं के मूल्य, उपभोक्ता की रुचियाँ और पसन्दगी क्रम स्थिर रहने पर उसकी मौद्रिक आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में जो परिवर्तन आते है, उन्हें आय प्रभाव के नाम से पुकारा जाता है।

Ques 7 आय उपभोग रेखा क्या होती है ?
Ans जब हम उपभोक्ता के विभिन्न आय स्तरों के सन्तुलन बिन्दुओं को मिला देते है तो उससे हमें जो रेखा प्राप्त होती है व आय उपभोग रेखा कहलाती है।

Ques 8. माँग का अर्थ बताइए ?
Ans माँग पाँच तत्वों से मिलकर उत्पन्न होती है :
(1) इच्छा (2) साधन (3) साधनों को खर्च करने की तत्परता (4) कीमत (5) समय।

Ques 9. माँग की परिभाषा दीजिए ?
Ans बेन्हम के शब्दों में, "किसी वस्तु की माँग उसकी कीमत तथा उस मात्रा का सम्बन्ध होती है, जो उस कीमत पर क्रय की जायेगी।"

Ques 10 माँग मालिका कितने प्रकार की होती है?

Ans माँग मालिका दो प्रकार की होती है जो निम्न प्रकार है:

(i) व्यक्तिगत माँग की मालिका।

(ii) बाजार की माँग की मालिका।

Q.P. - III

11/11/2024 Unit - III - OLP - III

Ques 1. उत्पादन फलन का अर्थ बताइए ?
Ans उत्पादन फलन → आदाओं तथा प्रदाओं के फलनात्मक सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहते है।

Ques 2. उत्पत्ति के नियम बताइए ?
Ans उत्पत्ति के तीन नियम होते है, जो निम्न प्रकार से है:
(1) उत्पत्ति वृद्धि नियम।
(2) उत्पत्ति समता नियम।
(3) उत्पत्ति ह्रास नियम।

Ques 3 परिवर्तनशील अनुपात का नियम क्या है?
Ans अर्थ → जब अल्पकाल में उत्पादन के कुछ साधनों को स्थिर रखकर अन्य साधनों की मात्रा में परिवर्तन किया जाता है, तो उससे उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन, उत्पादन के परिवर्तनशील अनुपातों के नियम के अनुसार होता है।

Ques 4. परिवर्तनशील अनुपात की परिभाषा दीजिए ?
परिभाषा → श्रीमती जॉन रोबिन्स के अनुसार, " उत्पत्ति के किसी साधन की मात्रा को स्थिर रखकर अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि करने पर एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन में

PAGE NO.: 105
DATE: / /

घटती दर से प्रवृद्धि होगी।

Ques 5. घटते प्रतिफल की अवस्था क्या होती है?
Ans घटते प्रतिफल की अवस्था में औसत एवं सीमान्त उत्पादन घटते हुए तथा कुल उत्पादन घटती दर से बढ़ता हुआ होता है।

Ques 6. पैमाने के प्रतिफल का अर्थ बताइए?
Ans अर्थ → उत्पादन के सभी साधनों में समान अनुपात में परिवर्तन करने से उत्पादन में जो परिवर्तन होते है, उन्हें से पैमाने के प्रतिफल कहते है।

Ques 7. Ans पैमाने के प्रतिफल के प्रकार →
(1) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल
(2) पैमाने के स्थिर प्रतिफल
(3) पैमाने के घटते प्रतिफल

Ques 8. Ans समोत्पत्ति वक्र → समोत्पत्ति वक्र अथवा सम-उत्पादक वक्र उत्पादन के दो साधनों के उन विभिन्न संयोगो को व्यक्त करता है जिनसे समान मात्रा में उत्पादन प्राप्त होता है।

SLP- IV

प्रश्न-
Ques 1 व्यापार चक्र का अर्थ →
उत्तर-
व्यापार चक्र आर्थिक क्रिया - उत्पादन, रोजगार, मूल्य आदि के उतार - चढ़ाव से सम्बन्धित होते है।

प्रश्न
Ques 2 उत्तर- व्यापार चक्र की परिभाषा →
हेबरलर के अनुसार, " सामान्य अर्थों में व्यापार चक्र को प्रगति काल तथा मन्दी काल के अच्छे एवं बुरे व्यापार के हेर-फेर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

Ques 3 व्यापार चक्र की अवस्थाओं के नाम →
(1) मन्दी।
(2) पुनरुत्थान।
(3) पूर्ण रोजगार।
(4) तेजी अथवा अभिवृद्धि।
(5) अवरोध की अवस्था अथवा मन्दी का पुनरागमन।

Q 4 पूर्ण रोजगार की अवस्था →
इस अवस्था में आर्थिक क्रियाएँ अनुकूलतम स्तर पर पहुँच जाती है तथा उत्पादन के सभी साधन काम में लग जाते है।

PAGE NO. 107

अवरोध की अवस्था → उत्पादन में निरन्तर वृद्धि तथा मूल्यों के बढ़ते जाने के फलस्वरूप वस्तुओं के उत्पादन लागत बढ़ जाती है जिससे वस्तुओं के बाजार मूल्यों तथा उत्पादन लागतों में अन्तर कम हो जाता है।

Ques 6. व्यापार चक्र को नियन्त्रण करने के उपाय →
(1) प्रतिबन्धात्मक उपाय
(2) निवारणात्मक उपाय

Ques 7. ब्याज का अर्थ → पूँजी के उपयोग के बदले किये जाने वाला भुगतान को ब्याज कहते है। ब्याज का सम्बन्ध मुद्रा तथा पूँजी से होता है।

Ques 8. ब्याज के प्रमुख सिद्धान्त →
(1) ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धान्त।
(2) ब्याज का उधार देय कोष सिद्धान्त अथवा नव-प्रतिष्ठित सिद्धान्त।
(3) कीन्स का ब्याज का तरलता अधिमान सिद्धान्त।
(4) ब्याज का आधुनिक सिद्धान्त।

Ques 9. जोखिम का अर्थ → किसी भी अर्थव्यवस्था में वर्तमान में एक साहसी भविष्य की माँग के अनुसार अनुमान के आधार पर उत्पादन कार्य की योजना बनाकर उत्पादन करता है।

Rajesh 13/8/2024

HLP- I

Paper - E.A.F.M. | Unit - 1 & 2 |

14/11/2024 HLP - J

Short Questions :

Ques 1. समष्टि आर्थिक विश्लेषण का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विनिमय सिद्धान्त समझाइए ?

Ans अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विनिमय सिद्धान्तों में विदेशी व्यापार के सिद्धान्त, व्यापार की शर्तें, विदेशी विनिमय दरों के निर्धारण के सिद्धान्त, विनिमय दरों में परिवर्तन के घटक आदि सम्मिलित होते हैं।

Ques 2. उपयोगिता का अर्थ बताइए ?

Ans जब तक किसी वस्तु अथवा सेवा में मनुष्य की किसी आवश्यकता को सन्तुष्ट करने की शक्ति रहती है तब तक उसमें उपयोगिता का निवास रहता है। जैसे → रोटी में भूख मिटाने की क्षमता है, वही रोटी की उपयोगिता है।

Ques 3. उपयोगिता की परिभाषा दीजिए ?

Ans किसी वस्तु अथवा सेवा की मानवीय आवश्यकता को सन्तुष्ट करने की शक्ति अथवा क्षमता को उपयोगिता कहते हैं।

Ques 4. क्रमवाचक दृष्टिकोण क्या होता है ?

Ans पेरिटो, एलन, हिक्स आदि अर्थशास्त्रियों का मत है, कि उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता है, क्रमवाचक दृष्टिकोण कहते हैं।

Ques 5. गणनावाचक दृष्टिकोण क्या होता है ?

Ans मार्शल तथा कुछ अन्य अर्थशास्त्रियों के अनुसार

किसी वस्तु के उपभोग से उपयोगिता प्राप्त करने के लिए उस वस्तु के लिए कुछ न कुछ त्याग अवश्य करना पड़ता है, इसे गणनावाचक दृष्टिकोण कहते हैं।

Ques 6. व्यक्तिगत माँग तालिका का अर्थ बताइए?

Ans यह माँग तालिका इस बात की जानकारी देती है कि एक निश्चित समय पर एक व्यक्ति विभिन्न मूल्यों पर वस्तु विशेष की कितनी मात्रा माँगता है।

Ques 7. बाजार माँग तालिका का अर्थ बताइए?

Ans किसी वस्तु विशेष के बाजार के समस्त क्रेताओं की व्यक्तिगत माँग तालिकाओं का योग ही बाजार माँग तालिका कहलाता है

Ques 8. माँग का नियम क्या होता है?

Ans माँग का नियम वस्तु के मूल्य तथा इसकी माँगी जा वाली मात्रा के मध्य सम्बन्ध को बताता है।

Ques 9. गिफिन वस्तुएँ क्या होती है?

Ans इस गिफिन प्रभाव के कारण निकृष्ट वस्तुएँ मूल्य घटने पर कम क्रय की जाती है, क्योंकि इनके मूल्य घटने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय बढ़ जाती है।

Ques 10. स्थानापन्न वस्तुओं का अर्थ बताइए?

Ans जब किसी वस्तु के स्थानापन्न उपलब्ध होते है तब वस्तु की माँग कम होती है। इसी तरह स्थानापन्न वस्तुओ के मूल्य में वृद्धि होने पर माँग बढ़ती है तथा मू घटने पर माँग घटती है।

HLP- II

Paper - E.A.F.M. | Unit - 3 & 4 | PAGE NO. 110

HLP - II

16/11/2024

Short Questions :

Ques 1. पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ बताइए ?

Ans पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है, जिसमें वस्तु के बहुत अधिक क्रेता तथा विक्रेता होते हैं, तथा उनमें परस्पर वस्तु के क्रय - विक्रय के लिए इतनी प्रतिस्पर्धा होती है, कि वस्तु का सम्पूर्ण बाजार में एक ही मूल्य प्रचलित रहता है।

Ques 2. पूर्ण प्रतियोगिता की परिभाषा दीजिए ?

Ans प्रो० मार्शल के अनुसार, "बाजार जितना अधिक पूर्ण होगा उतना ही उसके सभी भागों में किसी एक वस्तु के लिए एक समय पर एक ही कीमत चुकाने की प्रवृत्ति पायी जायेगी।

18/11/24

Ques 3. समरूप वस्तुएँ क्या होती हैं?

Ans उद्योग में लगी सभी फर्मों द्वारा समरूप वस्तु का उत्पादन तथा विक्रय किया जाता है अर्थात् वस्तु विभेद नहीं पाया जाता है, समरूप वस्तुएँ कहलाती हैं।

Ques 4. फर्म एवं उद्योग का अर्थ बताइए ?

Ans पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म का तात्पर्य किसी एक व्यक्तिगत उत्पादक से होता है। पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म प्रचलित मूल्य पर जितनी मात्रा में चाहे उतनी मात्रा में माल बेच सकती है।

Ques 5. एकाधिकार की परिभाषा दीजिए ?

Ans ए० पी० लर्नर के अनुसार, "एकाधिकारी का तात्पर्य उस विक्रेता से है, जिसकी वस्तु का माँग वक्र गिरता हुआ होता है।"

PAGE NO. 111

लाभ का अर्थ बताइए ?

Ques 6. उत्पादन भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन एवं साहसी की सेवाओं

Ans के सहयोग से होता है उत्पादन कार्य में सहयोग करने के लिए साहसी को जो कुछ भुगतान प्राप्त होता है, लाभ कहलाता है।

Ques 7. वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त क्या होता है?

Ans सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त वितरण का एक सामान्य सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का प्रयोग उत्पादन के सभी साधनों के पुरस्कार निर्धारण के लिए किया जाता है।

Ques 8. सीमान्त उत्पादकता क्या होती है?

Ans किसी उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के अन्य सभी साधनों की मात्रा को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में जब एक इकाई से वृद्धि की जाती है तो उससे वस्तु के कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उस वृद्धि को परिवर्तनशील साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं।

Ques 9. परिवर्तनशील साधन की सीमान्त भौतिक उत्पादकता क्या होती है?

Ans जब उत्पादन के अन्य सभी साधनों को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में एक इकाई की वृद्धि की जाती है, तो उससे वस्तु के कुल भौतिक उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उसे परिवर्तनशील लागत की सीमान्त भौतिक उत्पादकता कहते हैं।

Ques 10. प्रतिगामी पूर्ति वक्र क्या होता है?

Paper - E.A.F.M.

Unit - 1, 2, 3 & 4

FLP - I

Paper- E.A.F.M.
|Unit - 1,2,3 & 4|

19/11/2024

FLP-I

Short Questions:

Ques 1. सीमान्त उपयोगिता क्या होती है?

Ans किसी समय उपभोग की गयी इकाइयों में से अन्तिम इकाई को सीमान्त इकाई कहते है। और इस सीमान्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता ही सीमान्त उपयोगिता कहलाती है।

Ques 2. उपयोगिता के भेद बताइए?

Ans उपयोगिता के तीन भेद होते है:
(1) सीमान्त उपयोगिता।
(2) कुल उपयोगिता।
(3) औसत उपयोगिता।

Ques 3. कुल उपयोगिता क्या होती है?

Ans उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की उपभोग की गई समस्त इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता का योग ही कुल उपयोगिता कहलाता है।

Ques 4. माँग में विस्तार का क्या अर्थ होता है?

Ans वस्तु के मूल्य में कमी होने पर उसकी माँगी गई मात्रा में वृद्धि होती है, तो इसे माँग का विस्तार कहते है।

Ques 5. माँग में वृद्धि का क्या अर्थ होता है?

Ans जब किसी वस्तु के मूल्य स्थिर रहने पर उस वस्तु की अधिक माँग की जाती है अथवा मूल्य बढ़ जाने पर भी पहले जितनी ही माँग की जाती है, तो इसे माँग में वृद्धि कहते है।

Ques 6. माँग में संकुचन का क्या अर्थ होता है?

Ans वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी माँगी गई मात्रा में कमी होती है, तो उसे माँग का संकुचन कहते हैं।

Ques 7. एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता का अर्थ बताइए?

Ans एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता बाजार की वह अवस्था होती है जिसमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता होते हैं परन्तु उन सब की वस्तुओं में एक-दूसरे की वस्तुओं से कुछ-न-कुछ भेद अवश्य होता है।

Ques 8. वस्तु विभेदीकरण क्या होता है?

Ans एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में विभिन्न विक्रेताओं द्वारा निर्मित वस्तुएँ बिल्कुल एक जैसी नहीं होती हैं बल्कि उनमें कुछ भेद होता है।

Ques 9. लाभ का जोखिम सिद्धांत समझाइए?

Ans इस सिद्धान्त के अनुसार, "लाभ जोखिम उठाने का पुरस्कार है।" इस कार्य में साहसी को जोखिम उठानी पड़ती है और लाभ इसी जोखिम का पुरस्कार होता है।

Ques 10 लाभ का अनिश्चितता वहन सिद्धान्त को समझाइए?

Ans नाइट के शब्दों में, "लाभ अबीमा योग्य जोखिम अर्थात् अनिश्चितता को वहन करने का पुरस्कार है। और लाभ की मात्रा अनिश्चितता उठाने की मात्रा पर निर्भर करती है।"

Paper - C.A.F.M.

Unit - 1, 2, 3 & 4

FLP - II.

Paper - E.A.E.M.

Unit - 1,2,3 & 4

20/11/2024

FLP. II.

Short Questions :

Ques 1. औसत उपयोगिता क्या होती है?

Ans किसी वस्तु की विभिन्न इकाईयों के उपयोग से प्राप्त कुल उपयोगिता में उपभोग की गई इकाइयों की कुल संख्या का भाग देने पर जो भाज्यफल प्राप्त होता है, वह औसत उपयोगिता के बराबर होता है।

Ques 2. सीमान्त उपयोगिता के रूप कौन-कौनसे है?

Ans सीमान्त उपयोगिता के तीन रूप है :

(1) धनात्मक।

(2) शून्य।

(3) ऋणात्मक।

Ques 3. औसत उपयोगिता का सूत्र बताइए?

Ans $$\text{औसत उपयोगिता} = \frac{\text{कुल उपयोगिता}}{\text{इकाइयों की संख्या}}$$

$$\text{Average Utility (AU)} = \frac{\text{Total Utility (TU)}}{\text{Number of Units (NU)}}$$

Ques 4. माँग में कमी का अर्थ बताइए?

मांग के प्रकार बताइए?

Ques 5. मांग के तीन प्रकार होते हैं:

Ans
(1) मूल्य मांग / कीमत मांग।
(2) आय मांग।
(3) तिरछी मांग।

कीमत मांग क्या होती है?

Ques 6. कीमत मांग का तात्पर्य वस्तु की उन विभिन्न मात्राओं से है, जो उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु के विभिन्न मूल्यों पर निश्चित समयावधि में मांगी जाती है।

Ans

गैर मूल्य प्रतिस्पर्धा का अर्थ बताइए?

Ques 7.

Ans

अल्पाधिकार की परिभाषा दीजिए?

Ques 8. स्टिगलर के अनुसार, " अल्पाधिकार बाजार की उस अवस्था को कहते हैं जहाँ विक्रेताओं की संख्या इतनी कम होती है, कि प्रत्येक विक्रेता की पूर्ति का बाजार के मूल्य पर प्रभाव पड़ता है तथा विक्रेता इस बात को जानता है।"

Ans

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त क्या होता है?

Ques 9. सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त वितरण का एक सामान्य सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का प्रयोग उत्पादन के सभी साधनों के पुरस्कार निर्धारण के लिए किया जाता है।

Ans

Ques 10 सीमान्त उत्पादकता क्या होती है?

Ans किसी उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के अन्य सभी साधनों की मात्रा को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा में जब एक इकाई से वृद्धि की जाती है, तो उससे वस्तु के कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है, उस वृद्धि को परिवर्तनशील साधन की सीमान्त उत्पादकता कहते हैं।